* श्रीः *

लखनऊ की क़ब्र

या

शाही महलसरा ।

उपन्यास ।

पहला हिस्सा ।

श्री किशोरीलाल गोस्वामि लिखित ।

श्री छबीलेलाल गोस्वामि अध्यक्ष

श्री सुदर्शन प्रेस, वृन्दावन

द्वारा प्रकाशित ।

दूसरी बार १००० | सन् १९२५ | मूल्य दस आने

* श्रीः *

लखनऊ की क़ब्र

या

शाही महलसरा।

उपन्यास।

पहिला हिस्सा।

श्री किशोरीलाल गोस्वामि लिखित।

श्री छबीलेलाल गोस्वामि अध्यक्ष

श्री सुदर्शन प्रेस, वृन्दावन

द्वारा प्रकाशित

दूसरी बार १००० | सन् १९२५ | मूल्य दस आने

* श्रीः *

उपोद्घात ।
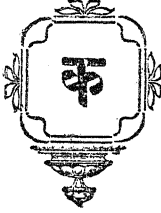
कलियुगपावनावतार, मर्यादापुरुषोत्तम, दशरथनन्दन, श्रीरामचन्द्रजी के छोटे भाई लक्ष्मणजी के अधिकार भुक्त होने से लक्ष्मणपुर नाम का भूभाग अवध के सूबेदारों के समय से 'लखनऊ' कहलाया। भूगोल के नक़शे में यह (लखनऊ, शहर गोमती नदी के दहिने किनारे पर २६०—५२। के मध्य स्थित है परन्तु अब कुछ भाग नदी के उत्तर का भी इसी में मिला लिया गया है। (१)

अवध की राजधानी लखनऊ, सौ वर्ष से अधिक हुए, नव्वाब आसिफुद्दौला के तख़्त पर बैठने के समय से अधिक प्रसिद्ध हुआ। आज कल जहां पर यह नगर है, पहिले वहां पर ६४ गांव थे, जिनका कुछ २ पता अब उनके नाम पर बसे हुए कई महल्लों से लगता है और विशेष बात पुराने क़ागज़ात से जानी जा सकती है।

पहिले इस नगर में ब्राह्मणों और कायस्थों की घनी बस्ती थी, पर ११६० ई० में महमूद गज़नवी के भतीजे सय्यद सालार की फ़ौज के साथ शेख़ घराने के मुसलमानों ने आकर इस नगर में अपना पैर फैलाया और धीरे धीरे ये अवध में फैलते गए।

---

(१) कोई कोई लखनऊ नाम की उत्पत्ति लखना अहीर के नाम के कारण बतलाते हैं, जिस ने 'मच्छीभवन' नामक क़िला बनाया था, पर यह बात असंगत है। लखनऊ लक्ष्मणपुर (लखनपुर) का अपभ्रंश है। क्योंकि लखना (या लिक्खना) मच्छीभवन के बनने के बहुत पहिले से "लखनऊ" यह नाम प्रसिद्ध चला आता है।

धीरे धीरे शेख़घराने वालों का प्रताप दिन दिन बढ़ता गया और इनमें से कई सूबेदारी के ओहदे तक पहुंचे।

सन् १५९० ई० के पहिले "अवध के सूबेदार" की ख़िताब किसी को नसीब नहीं हुई थी, क्योंकि पहले पहल इसी सन में शाहंशाह अकबर ने हिन्दुस्तान को २२ सूबों में बांटा था, जिस में एक अवध भी था।

उस सन से बहुत काल तक बराबर सभी सूबेदार बदलते रहे यहां तक कि तीन चार बरस से अधिक कोई सूबेदार सूबेदारी के पद पर न ठहरने पाता और वह सूबेदारी शाही दर्बार के विश्वास पात्र अमीरों को मिलजाती थी।

एक शताब्दीसे कुछ अधिक काल बीतने पर सन १७३२ ई०में अवध के राजप्रबंध में बड़ा भारी उलट फेर हुआ। नैशापुर का अमीर सआदतख़ां, जिस का दिल्ली के शाही दर्बार में दबदबा बहुत बढ़ाचढ़ा था और जो बज़ारत के ओहदे का ख़ाहां था, अवध का सूबेदार बनाया गया।

सआदत खां के पहिले जितने अवध के सूबेदार होकर आते, वे अयोध्या (फ़ैज़ाबाद) में ही रहते, और उसे अवध की राजधानी समझते थे। उसी रीति के अनुसार सआदतख़ां भी फ़ैज़ाबाद में रहने लगा, उसने वहां एक क़िला बनवाया और लखनऊ के लिकना (या लखना) क़िले का नाम बदल कर उसका नाम 'मच्छी भवन' रक्खा, जहां उस समय मछुओं का बाज़ार लगता था।

लखनऊ की छटा सआदतख़ां को कुछ ऐसी भाई कि वह फ़ैज़ाबाद की अपेक्षा लखनऊ में विशेष रहने लगा और उसने चाहा कि फ़ैज़ाबाद के बदले लखनऊ ही को अवध की राजधानी बनाया जाय।

सन् १७३९ ई० में जब दिल्ली के तख़्त पर मुहम्मदशाह बादशाह था, नादिरशाह ने दिल्ली पर चढ़ाई की थी। उस समय बादशाह की सहायता के लिये सआदतख़ां सेना लेकर दिल्ली की ओर चला था, फिर वह लौट कर न आया। यद्यपि उसकी आंतरिक इच्छा

यही थी कि 'कुछ दे ले कर नादिरशाह से मेलकर और अपने पुराने बैरी निज़ामुलमुल्क को दिल्ली दर्बार से बाहर करदे, पर वह लड़ाई के बाद दिल्ली के समीप पहुंचा और अपना मंसूबा पूरा होता न देख उस ने ज़हर खाकर अपनी जान देदी।

उस के बाद सन् १७३९ ई० में उसका दामाद और भतीजा मंसूर अली खां (सफ़दरजंग) अवध का सूबेदार हुआ। यह भी अयोध्या (फ़ैज़ाबाद) में ही रहता था और इसने दिल्ली दर्बार में खूब मेलजोल बढ़ा रक्खा था. जिसका नतीजा यह हुआ कि जिस ओहदे के लिये सआदतअलीखां तरसता मर गया, वह मंसूरअलीखां को मिल गया, अर्थात् सन् १७४७ ई० में मंसूरअलीखां बादशाह देहली का वज़ीर बनाया गया। उसी समय से अवध के सूबेदार की पदवी जाती रही और उस के बदले में अवध के हाकिम 'नव्वाब वज़ीर' कहलाने लगे।

सन् १७५३ ई० में सफ़दरजंग के मरने पर उसका बेटा शुजा-उद्दौला अवध के तख़्त पर बैठा। इसने अपने राज्य (अवध) की बड़ी उन्नति की। सन् १७७५ ई० में जब यह मरा, इसका बेटा आसिफ़ु द्दौला नव्वाब हुआ और तख़्त पर बैठते ही यह अपना दफ़्तर लखनऊ में उठा लाया, तब से लखनऊ अवध की राजधानी कहलाने लगा और फ़ैज़ाबाद धीरे धीरे उजड़ता गया। इसके समय में लखनऊ शहर बड़ी रौनक़ परथा और बड़े बड़े हज़ारों मकान गोमती नदी के दोनों किनारों पर बन गये थे।

जब वहमरा, अपने बनवाए हुए बड़े 'इमामबाड़े' में गाड़ा गया। उसके लड़कावाला कोई न था, इस लिए उस का पालक (पोष्यपुत्र) वज़ीर अली केवल छः महीने लखनऊ के तख़्त पर बैठ सका। परंतु अंगरेज़ों ने उसे अयोग्य समझ कर गद्दी से उतार दिया, जिस से वह बहुत बिगड़ा और कुछ शोहदों के साथ इधर उधर बलवा मचाता हुआ बनारस में आपहुंचा और बनारस के मिस्टर चेरी को मारकर उसने अपनी अयोग्यता को सदा के लिए सिद्ध कर दिया।

बाद इसके आसिफुद्दौला का सौतेला भाई सआदतअलीखाँ ने सन १७९८ ई० में लखनऊ के तख़्त पर बैठकर १६ बरस तक ऐसी उत्तमता से राज्य किया कि उस के समान अवध के कोई नव्वाब न हुए। इसने बहुतेरी इमारतें बनवाईं।

सन १८१४ ई० में उस के मरनेपर उसका बेटा ग़ाज़िउद्दीनहैदर लखनऊ के तख़्त पर बैठा, इसने अपनी क़बर के अतिरिक्त और कुछ न बनवाया। सन् १८२२ ई० में उसे राजा की उपाधि मिली, तबसे नव्वाब वज़ीर का नाम भी मिट गया।

सन् १८२७ ई० में जब वह मरा तो उस का बेटा नसीरुद्दीनहैदर तख़्त पर बैठा, परंतु विषयी और विलासी होने के कारण इसका नाम बहुत बदनाम हो गया था और "बादशाह के गुप्त चरित्र" नामक अंगरेज़ी पुस्तक में जो कुछ इस नव्वाब के विषय में लिखा है, वह शायद झूट न होगा।

जब सन १८३७ ई० में यह निस्संतान मरा तो इसकी रंडी का लड़का मुन्नाजान तख़्त पर बैठ गया, पर उस (नासिरुद्दीनहैदर) की प्रधाना बेगम इस बात से बिगड़ गई और बहुत कुछ उद्योग करने पर नसीरुद्दीन हैदर का चचा नसीरउद्दौला गद्दी पर बैठा। गद्दी पर बैठते ही इसने अपना नाम महम्मदअलीशाह रक्खा। हुसेनाबाद का इमामबाड़ा इसीने बनवाया था।

किंतु जब चारही बरस राज्य करके वह मर गया तो सन् १८४१ ई० में उसका बेटा अमजदअलीशाह तख़्त पर बैठा। यह केवल अपनी क़बर ही बनवा कर जब सन १८४७ ई० में मरगया तो उसके पुत्र जगत्प्रसिद्ध विलासपरायण नव्वाब वाजिदअली-शाह लखनऊ के तख़्त पर बैठे। ये ठुमरी के आविष्कारक हुए. इन्होंने बहुतेरी इमारतों के अतिरिक्त "क़ैसरबाग़" नामक बड़ी भारी इमारत बनवाई। जो अब शोचनीय दशा में है और कुछ बर्बाद कर दी गई है। इन्हें केवल अपनी १५०० बेगमों के साथ रासलीला

आदि करने के और कुछ काम न था, इसलिये सल्तनत बिगड़ने लगी। फिर सन १८५७ के बलवे के उपलक्ष में इनके वज़ीर की नमकहरामी से ये कलकत्ते भेजे जाकर 'मटियाबुर्ज' में नज़रबंद किए गए और अवध अंगरेज़ी राज्य में मिलाया गया।

इस प्रकार वज़ीरअली और मुन्नाजान का नाम निकाल देने से लखनऊ के नौ नव्वाब हुए।

हमारा यह उपन्यास सन् १८२७ ई० के अप्रैल महीने से प्रारंभ होता है, जिस समय कि लखनऊ के तख्तपर अत्यन्त विषयी नव्वाब नसीरुद्दीनहैदर था। यह उपन्यास हमने "बादशाह के गुप्तचरित्र" नामक अंगरेज़ी पुस्तक की कथा के आधार पर लिखा है। वह पुस्तक एक अंगरेज़ की लिखी हुई है, जो नसीरुद्दीनहैदर के दरबार में रहता था और जिसने अपनी डायरी में उस समय (नसीरुद्दीन-हैदर) के चरित्र का ख़ासा ख़ाक़ा खैंचा है। यह अंगरेज़ साढ़े तीन बरस तक शाही दरबार में रहा, इतनेही दिनों में इसने जो कुछ हाल लिखा है, वह बड़ा अद्भुत है, और उसे वह लेखक अक्षर अक्षर सत्य बतलाता है वही डायरी पहिले पहिल सन् १८५५ में लंडन में छपी थी। इस पुस्तक में अंगरेज़ लेखक ने अपना नाम नहीं दिया है, इस-लिये हम भी उसके नाम लिखने में असमर्थ हैं। बड़ा आश्चर्य तो यह है कि ऐसे स्वभाव के लोगों को भी जगदीश्वर इतने उन्नत पद पर बैठाता है। अस्तु—शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते।

ग्रंथकार।

॥ श्रीः ॥

लखनऊ की क़ब्र

या

शाहीमहलसरा

उपन्यास

पहिला बयान।

"दिलाराम, प्यारी, दिलाराम! तू कहां है। अफ़सोस, सद अफ़सोस, प्यारी! तु मुझ ग़मज़दे को इस हालत में छोड़कर कहां जा छिपी है! प्यारी, दिलाराम! तू तो ऐसी न थी, तू तो कभी ख़्वाब में भी मुझसे जुदा नहीं होती थी, लेकिन, प्यारी मुझसे क्या ख़ता हुई, जो इस तरह बग़ैर कहे सुने तू न जाने कहां चली गई, या किस लिये मुझसे किनारा कर बैठी! या रब! मेरी दिलरुबा, दिलाराम कहां है! आह! वह तो खुद बखुद मुझसे कभी दूर होने वाली न थी, ज़रूर उस पर कोई आफ़त आई होगी और बेबसी की हालत में किसी बला के पंजे में गिरफ़्तार हुई होगी। अफ़सोस अब मैं उसे कहां ढूंढूं कहां जाऊं, क्या करूं और क्यों कर अपने ज़ख़मी दिल को दिलासा दूं। आज पूरे दो महीने हुए, मेरी दिलरुबा, दिलाराम का पता नहीं है, न जाने वह क्या हुई, कहां गई, क्यों गई, या किस बला में मुबतिला हुई। दिलाराम, प्यारी, दिलाराम! तेरे बग़ैर अब तो यही जी चाहता है कि,–

"इस ज़ीस्त से बिहतर है, अब मौत प दिल धरिए।
जल बुझिए कहीं जाकर, या डूब कहीं मरिए॥

मैं दिलकी बेक़रारीसे ऊपर कहे हुए चंद कलमे कहता हुआ दर्याए गोमती के किनारे टहल रहा था, महीना जेठ का था और रात आधीसे ऊपर पहुंच चुकी थी। इतने ही में किसी लम्बे क़द वाले आदमी ने मेरे सामने आकर ललकारा और झिड़क कर बोला, "कम्बख़्त तू कौन है जो इस अंधेरी और आधीरात के वक्त यहां शोर गुल मचा रहा है! शायद तू चोट्टा होगा?"

मैंने उस अजनबी की ये बेढंगी बातें सुनकर कहा,—"अय भले मानस! भला चोट्टे भी कहीं शोर गुल मचाते हैं। वे तो चुप चाप मालदारों के घरों में इस वक्त सेंध लगाते होंगे, न कि मुझ ग़मज़दे की तरह इस उजाड़ और सूनसान जगह में अपने दिल के फफोले फोड़ते होंगे।"

मेरी ये पत्थर के कलेजे को भी पानी करने वाली बातें सुन-कर उस अजनबी ने कहा,-"बस, बस, हरामज़ादे! चुपरह तू ज़रूर चोट्टा है, बल्कि चोट्टों का सरदार है। कंबख्त, हरामी के पिल्ले! बस फ़ौरन यहां से चलाजा, वरनः अभी तेरे सर को धड़ से जुदा कर दूंगा।'

या ख़ुदा! बिला वजह, बेक़सूर मुझे उस कमीने ने इतनी गालियां देडालीं। तब तो मुझसे न रहा गया और मैंने अपनी कमर में लटकती हुई तल्वार को म्यान से खैंच कर कड़ाई के साथ कहा,-"सुन, बे, कमीने! तेरी बातों से मैंने यह बख़ूबी जान लिया कि तू रहज़नों का सरदार गिरहकटों का मददगार है, मेरे यहां आने से ज़रूर तेरे काम में ख़लल पहुंचा होगा, तभी तू बिलावजह मुझसे हुज्जत करने पर आमादा हुआ है। सुनबे, काफ़िर, बेईमान। बस, अब अगर तु अपनी ख़ैर चाहता है तो फ़ौरन मेरी आंखों के आगे से दूर हो, वरन तू तो मुर्दा! मेरा सर क्या ख़ाक काटेगा, लेकिन मैं अभी तुझे दो टूक करके यहीं डालदूंगा।"

मेरी बातें सुनतेही उस अजनबी ने झपटकर मुझपर तल्वार का वार किया, लेकिन ख़ुदा के फ़ज़ल से मैंने उस वार को ख़ाली देकर उस पर अपना वार किया, जो अपना पूरा कामकर गया और कंबख़्त

के सर को धड़ से अलग कर ज़मीन में डाल दिया। मुझे अपनी तल्वार से यह उम्मीद न थी कि इतनी जल्दी अपने कामको अंजाम दे सकेगी, मगर खुदा के फ़ज़ल से उस (तल्वार) ने उस अजनबी को उसकी शरारत का अच्छा एवज़ दिया और सूअर का पिल्ला कुछ देरतक हाथ पांव मारकर दोज़ख़ रसीदः हुआ और मैंने तल्वार का खून रूमाल से साफ़ करके उसे म्यान में दाख़िल किया।

उस वक्त दर्याए गोमती के किनारे जिस मुक़ाम पर मैं मौजूद था, वह बिलकुल उजाड़ था और कुछ दरख़्तों और घास फूसों ने एक छोटे से जंगल की शकल बनाली थी। रात भी अंधेरी थी, इस लिये उस अजनबी की सूरत शकल से मैं अनजान रहा कि वह काला है या गोरा। इस वास्ते उसे मारे जाने पर मैंने अपने जेब में से आग जलाने के सामान को निकाल कर एक मोमबत्ती जलाई और उसके उजाले में मैंने उस अजनबी के सर को उसके धड़ से मिलाकर उसकी सूरत देखी। देखते ही मैं उसे पहचान गया और नफ़रत से उसके नापाक चेहरे पर मैंने थूका। फिर मैंने उसकी तलाशी ली, और तलाशी लेनेपर मैंने उसके जेब में से, एक ख़त, हाथीदांत पर बनी हुई एक तस्वीर, एक छोटा सा छुरा, और कई अशर्फ़ियां पाईं।

आख़िर, मैंने उन सब चीज़ों को अपने जेब के हवाले कर बत्ती बुझादी और उस अजनबी की लाश को घसीट कर गोमती में बहादी। फिर उसकी तल्वार से उस जगह की थोड़ी थोड़ी मिट्टी छीलकर नदी में डालदी, जहांपर उस काफ़िर का खून बहाथा, साथही उसकी तल्वार भी मैंने दर्या में फेंकदी। इन सब कामों से छुट्टी पाने में मुझे एक घंटे से ज़ियादह लगे होंगे।

क़िस्सह कोताह, मैंने फिर अपनी जगह पर, यानी उस वक्त जहां पर उस शैतान को मैंने मारा था, या जहांपर उस वक्त मैं मौजूद था, आकर एक दरख़्त के नीचे बैठ गया और मैंने चाहा कि मोमबत्ती जला कर ज़रा उस तस्वीर को फिर ग़ौर से देखूं, जिसे मैंने उसी

अजनबी के जेब से पाया था, और जो मेरी प्यारी दिलाराम की सूरत से बहुत मिलती जुलती नज़र आई थी। और उस छुरे के देखने का भी मुझे उस वक्त निहायत ही शौक चर्राया हुआ था, क्योंकि उस पर कुछ इबारत खुदी हुई थी, जिसके जानने के लिये मैं निहायत बेचैन हो रहाथा। लेकिन, वैसा मैं न कर सका, यानी बत्ती न जला सका, क्योंकि एक नकाबपोश को मैंने अपनी तरफ़ आतेहुए देखा।

यह देखतेही मैं अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ और तल्वार के कब्ज़े को मज़बूती के साथ पकड़ कर उस नकाबपोश की तरफ़, जो अब मेरे बहुत नज़दीक पहुंच गया था, देखने लगा। मैं दिलही दिल में यह कहने लगा कि,—"यह दूसरी कौन बला आ पहुंची। क्या यह नकाबपोश उसी बदकार शख्स का साथी तो नहीं है, जो अभी मेरे हाथ से मारा गया है। ज़रूर यह भी उसी का साथी ही होगा, चाहे इसने अपने तईं नकाब के अन्दर छिपाया है। तो क्या इसे अपने साथी के मारे जाने की ख़बर होगई और यह मुझसे उसके खून का बदला चुकाने आया है। लेकिन नहीं, यह ग़ैरमुमकिन है कि इसे अपने साथी के मारे जाने का हाल मालूम होगया हो। ख़ैर, न सही, लेकिन जब यह अपने साथी की जगह यहां पर मुझे पाएगा तो ज़ुरूर इसे मुझपर शक होगा और इसीलिये मुझे मुस्तैद रहना चाहिए।"

मैं येही सब बातें दिलहीदिल में सोच रहाथा कि वह नकाबपोश बिल्कुल मेरे नज़दीक आगया और उसने धीरे से कहा,—"नज़ीर।"

अब तो मेरा ख़याल कुछ और ही होगया, यानी जिस नकाबपोश को मैं मर्द समझेहुए था, वह दर असल एक बुड्ढी औरत थी, जिसे उसकी आवाज़ से मैंने बख़ूबी परख लिया। तो क्या उस बदज़ात का नाम नज़ीर है, जो अभी मारा गया है! और क्या यह उसीकी खोज में इसवक्त इस सूनसान जगह में आई है। क़िस्सहकोताह! मुझे शरारत सूझी और मैंने चटपट उस नकाबपोश बुड्ढी के सवालके जवाब में सिर्फ़ "हूं" करदिया।

शायद अपने खातिरख्वाह जवाब पाकर उसने कहा,—"अफ़सोस आज तुझे निहायत परेशान होना पड़ा होगा। मैं अपने वादे पर यानी ठीक वक्तपर आती, लेकिन आज उसका कंबख़्त शौहर शाम ही से उसके पास आ बैठा और अभी अभी वह वहां से टला है। इसी सबब से मुझे अपने ठीक वक्तपर यहां पहुंचने में देर हुई, क्योंकि मैं आही कर क्या करती और तुम्हें लेही जाती तो लेजाकर कहां या किसके पास बिठाती। मगर ख़ैर, अब रात एक पहर से ज़ियादह बाक़ी नहीं है. इसलिये आजही अलस्सुबह तुम्हारा वहांसे लौटना ग़ैरमुमकिम है. इसलिये क्या तुम आज की बाक़ी रात, कल का सारा दिन और रात भर वहां रहसकते हो। अगर कोई हर्ज वाक़ः न होतो मैं अभी अपने हमराह तुम्हें ले चलने के लिये तैयार हूं, वरन कल ठीक वक्तपर यहां मौजूद रहना।"

अय ग़ज़ब। यह क्या मुआमिला है। या ख़ुदा! बुड्ढी क्या. यह तो कोई अजीब बला नज़र आई! सचमुच. मैंने उसकी बातों का बिल्कुल मतलब न समझा. पर इतना ज़रूर समझा कि यह बेचारी किसी ग़ैर शख़्स के धोके मुझसे ये सब बातें कह गई। तो क्या इसे उसी पाजी से मतलब था, जो अभी मारागया! ऐसा हो सकता है, क्योंकि ज़रूर वह बदज़ात यहां पर इसी बुड्ढी की राह तकता होगा, लेकिन ज़ब उसने मुझे वहां पर अपनी राहमें कांटे के मिसाल समझा तो लाचार. मुझसे उलझ पड़ा और दोज़ख़रसीदः हुआ। ख़ैर, इस ख़याल को तो मैंने यहीं छोड़ा और कुछ अजीब तमाशे के देखने की जो धुन समाई तो चटपट मैंने बहुत ही धीमी आवाज़ से, जिसमें आवाज़ पहिचानी न जाय. सिर्फ़ इतनाही कहा,—"मैं चलने के लिये तैयार हूं।"

वल्लाह, फिरतो अच्छी दिल्लगी शुरू हुई। यानी उस मक्कारा बुड्ढी ने मेरी आंखों पर पट्टी बांधनी शुरू की। उसकी इस अजीब हर्कत से, गो, मैं दिलही दिलमें एक मर्तबः ज़रा हिचका, फिर आपही आप सोचने

लगा कि,-" अजी ! हर्ज क्या है। एक बुढ़िया ही तो है, यह मक्कारा मेरा कर ही क्या लेगी, और तल्वार तो अभी मेरे कब्ज़ेमें है, ज़राभी किसी क़िस्मका खुटका हुआ कि फ़ौरन राह साफ़ कर डालूंगा।"

ग़रज़ यह कि उसने अपने ख़ातिर ख़ाह मेरी आखों पर बखूबी पट्टी बाँधदी, जिससे सचमुच मैं अन्धा सा हो गया।

फिर उसने एक छड़ी का सिरा मुझे थम्हादिया और आप आगे हो मुझे उस तरह वहाँ से लेचली, जैसे अक्सर बाज़ारों में मैंने उन मुहताजों को भीख माँगते हुए देखा है, जो अन्धे को लकड़ी पकड़ा कर अपने हमराह लिये फिरते हैं।

मतलब यह कि वह अजीब बुड्ढी मुझे ऊंची नीची गड्ढों में चढ़ाती उतारती, घूमघूमौने का चक्कर खिलाती हुई एक घंटे तक योंहीं मुझे परेशान करती रही। गो, आंखें बंद रहने के सबब मैं यह नहीं जान सकता था कि किस रास्ते से मेरा गुज़र हो रहा है, मगर इतना मैं ज़रूर दिलही दिलमें ग़ौर करता था कि अजब नहीं कि वह चालाक बुड्ढी मुझे थोड़ीसी राह में ही इस लिये बार बार घुमा रही है कि जिस में मैं असली रास्ते का अन्दाज़ा न कर सकूं। पर यह उसका ख़याल महज़ ग़लत था, क्योंकि आंखें बंद रहने परभी मैं अपनी अटकल और अंदाज़ से उसकी पेचीली राह को कुछ कुछ समझ गया था।

ख़ैर, खुदा, खुदा करके उस शैतान बुड्ढी की राह शायद पूरी हुई और वह एक जगह पर ठहर गई, लेकिन वह कौनसी जगह थी, हज़ार ग़ौर करने पर भी मैं इस का अंदाज़ न कर सका। उसवक्त उस बुढ़ी ने मुझे ठहरा कर मेरे हाथ से छड़ी लेली थी, इस लिये मैं नहीं जानसक्ता था कि मुझे छोड़ कर वह क्या करने लगी, या कहां ग़ायब होगई लेकिन नहीं, वह ग़ायब नहीं हुई थी, और अगर हुई भी थी तो सिर्फ़ थोड़ीहीदेर के लिये। यानी मुझे वहीं पर ठहरने का इशारा करके और मेरे हाथ से छड़ी लेकर वह क्या करने लगी, यह तो मैंने नहीं जाना, पर उस वक्त एक हलकी सी आवाज़ मेरे कानों ने ज़रूर सुनी, जोकि अक्सर किसी

दर्वाज़े के खोलने के मौके पर हुआ करती है। इसके बादही उस ने मेरा हाथ थाम लिया और मुझे एक ऊंचे से चबूतरे पर, जिसकी बनावट शायद कब्र सी रही होगी, चढ़ा लेगई। फिर वह नीचे उतरी और मुझे भी उसने हाथ के सहारे से नीचे उतारा। फिरतो लगातार वह मेरा हाथ पकड़े हुई सीढ़ियां उतरने लगी और जब पूरे चालीस डंडे सीढ़ियां वह मुझे नीचे उतार लेगई तो फिर वैसीही अवाज़ मेरे कानोंमें पहुंची, जैसी कि अभी अभी मैंने ऊपर सुनी थी। शायद यह उस दर्वाज़े के बंद होने की आवाज़ हो जिससे हो कर यह मुझे नीचे लाई है, लेकिन यह तो अभीतक मेरा हाथ पकड़े हुई बराबर की ज़मीन में चलरही है तो ऊपर वाले दर्वाज़े को बंद किसने किया ?

ख़ैर, जो कुछहो वह बुड्ढी मेरा हाथ पकड़े ही बराबर आगे बढ़ती गई। गिनती के सौ क़दम वह मुझे लेगई होगी कि ज़मीन कुछ नम और ढालुआं मिली। और योंहीं दो सौ क़दम लगातार ढालुआं ज़मीनमें की उतराई के बाद वह मुझे ज़मीन के चढ़ावपर लेचली। चढ़ाई भी पूरे सौ क़दम की थी जिसे तय करने के बाद वह बुड्ढी मुझे वहीं ठहरा और मेरा हाथ छोड़ कर नजाने किधर गई और उसके अलग होतेही मेरे कानों में एक चरहि की आवाज़ गई जोकि किसी दर्वाज़े के खुलने की थी। इसके बाद फिर उसने मेरा हाथ थाम लिया और शायद चौखट पार करके, (मगर चौखट का निशान मैंने नही पाया था) सीढ़ियां चढ़ने लगी। यहां पर भी पूरी चालीस. सीढ़ियां मुझे चढ़नी पड़ीं और जब ऊपर बराबर की ज़मीन में बुड्ढी ने मुझे पहुंचाया तो नीचे वाले दर्वाज़े के बंद होने की आवाज़ मैंने पाई! अब मेरा ध्यान बदल गया और मैं यह समझने लगा कि ज़रूर ये दर्वाज़े किसी हिकमत से खोले और बंद किए जाते होंगे, जिन्हें बुड्ढी ने मुझ से अलग हो और उनके पास जाकर तो खोला, मगर उन्हें बंद किया दूरही से, मेरा हाथ पकड़े ही पकड़े।

आख़िरश, ऊपर आकर उसने मेरी आंखों पर की पट्टी खोलदी

और कहा,—"जनाबमियां, नज़ीर खां ! दोस्तमन ! मेरी बेअदबी मुआफ़ करना। लाचारी ही ऐसी है कि मुझे तुम्हारी आंखों पर बदस्तूर आजभी इतने सदमें पहुंचाने पड़े।"

मैने ज़रा गला दबा कर धीरे से कहा,—"अजी, बी ! इस का कुछ ख़याल न करो।"

उसने कहा,—"अल्हम्दलिल्लाह। ख़ैर अब ज़रा थोडी देर तुम यहीं ठहरे रहो, मैं देख आऊं तो तुम्हें अन्दर ले चलूं।"

मैंने मुख्तसर तौर पर सिर्फ़,—"बेहतर" कहकर उसकी बात का जवाब दिया और वह शायद चली गई, क्योंकि उसी वक्त मैंने किसी दर्वाज़े के खुलने और भिड़ने की बहुत ही धीमी आहट पाईथी।

वह जगह जहां पर बुढ्ढी मुझे तनहां छोड़ गई थी, कैसी थी, इस की जांच करने के लिये मैं ज़मीन में बैठकर अंधेरे ही में उसकी लंबाई चौड़ाई नापने लगा और थोड़ी ही देर की जांच में मैंने यह जान लिया कि यह कोठरी आठ हाथ की लंबी चौड़ी चौकोर है और उसके चारो ओर एक २ दर्वाजा है, जिनमें ताले तो नहीं लगे हैं, पर वे बंद ज़रूर हैं, कोठरी का फ़र्श गच किया हुआ है और दीवार भी पक्की है लेकिन वह कितनी ऊंची है, खड़े होकर हाथ ऊंचा करने पर भी इस बात का अन्दाज़ा मैं न कर सका, क्योंकि अंधेरा ऐसा घना था कि गोया मैं स्याही के दर्या में डुबो दिया गया होऊं।

जब तक मैं उस कोठरी की नाप खोज करता रहा, मेरा ख़याल बँटा हुआ था, लेकिन जब मैं उस शेख़ चिल्ली के खिलवाड से फ़ारिग़ हुआ तो मेरे दिल में तरह २ के ख़याल पैदा होने लगे और उनसे सिर खाली करने के लिये मैं मज़बूत हुआ। क्योंकि उस बुड्ढी के आने में देर होने लगी, गो वह जल्द लौट आने का वादाकर गई थी। ग़रज़ यह कि मेरी घबराहट बढ़ने लगी, दिल में कुछ कपकपी पैदा हुई, हिम्मत दिल का साथ छोड़ने पर अमादा हुई और जान एक अजीब उलझन में फंस गई। उस वक्त मेरे दिल में जो कुछ ख़यालात एक के

बाद दूसरे पैदा होने लगे थे, उनमें पहला यह था कि,—"अय यूसुफ़! तू तो अपने को आक़िल लगाता था, पस समझदार होकर यह तू ने क्या किया! एक की जान ली, सो तो लीही, पर इस आफ़त की बुढ़िया के चकाबू में जान बूझकर तू ने अपने तईं आप क्यों फसाया। अब बहुत देर नहीं है, जब कि तू किसी अजनबी नाज़नी के, या किसी के रूबरू पहुंचाया जायगा; और जब वहां रोशनी में तू पहचाना जायगा, या तेरी तलाशी लेने पर तेरे जेब में से उस अजनबी की चीठी तस्वीर, छुरी और अशर्फ़ियां बरामद होंगी, तो तुझ पर क्या गुज़रेगा और कैसी क़यामत बर्पा होगी !!! अफ़सोस। तू भारी बला में आकर गिरफ्तार हुआ।"

मैं दिलही दिल में यही सोच कर कुछ बदहवास सा होने लगा था कि एकाएक एक दर्वाज़ा, जो उस कोठरी के चारों बग़ल वाले दर्वाज़ों में से एक था, खुल गया और हाथ में मोमी शमादान लिये हुए मैंने उस दर्वाज़े के चौखट पर एक परीजमाल को देखा; जिसकी उम्र अठारह उन्नीस साल से ज़ियादह न होगा। कमसिनी के साथ ही साथ उसकी खूबसूरती, नज़ाकत, और नमकीनी इस आला दर्जे की थी कि जिसका जोड़ा शायद बहिश्त में दिखलाई पड़े तो पड़े। वह नाज़नी उस वक्त ज़र्दोज़ी के काम का एक निहायत नफ़ीस सब्ज़ जोड़ा पहिरे हुई थी और उसके तन पर जड़ाऊ ज़ेवर बड़ी नफ़ासत के साथ अपनी अपनी अपनी जगह पर रौनक़ थे।

ये जितनी बातें मैं कह गया, उन्हें मैंने बात की बात में देख लिया था। क्योंकि ज्योंही वह दर्वाज़ा खुला और शमादान लिए हुई वह परीजमाल चौखट के पास पहुंची कि मुझ पर नज़र पडते ही वह झिझकी और त्योरी बदलकर मुझे सिर से पैर तक देखने लगी। लेकिन यह कार्रवाई एकही लहजे में पूरी होगई और उसने चौखट के बाहर निकल मुस्कुराकर मेरा हाथ थाम लिया और जिस दर्वाज़े से वह आई थी, मुझे साथ लिये हुई अन्दर घुसी और भीतर जाकर इस दर्वाज़े को बंद करके उसने कुण्डे में ताला लगा दिया फिर

उसकी कुंजी को अपनी कुर्ती के जेब में रख और मुझे लेकर वह एक बहुत ही लंबे चौड़े और निहायत सजीले कमरे में पहुंची।

वहां पर कई शमादान रौशन थे, जिन के उजाले में मैंने उस कमरे की नफ़ासत, सजावट, और खूबसूरती को अपनी बारीक नज़रों से बखूबी तौला, और तब मैंने यह समझा कि मैं इस वक्त जहां पर मौजूद हूं, यह जगह कोई मामूली जगह नहीं, बल्कि किसी बड़े भारी अमीर शख़्स की ऐशगाह है।

वह कमरा चालीस पचास हाथ से कम लंबा न था, और चौड़ई उसकी बीस पच्चीस हाथ से कुछ ज़ियादह न थी। लंबाई की सतह में उसके दोनो जानिब पांच पांच दर्वाज़े थे और चौड़ाई की तरफ सिर्फ़ तीन तीन। कमरे में निहायत उम्दः और बेशक़ीमत क़ालीन बिछा हुआ था। जावजा हाथीदांत और संगमर्मर के मेज़, कुर्सी, चौकी और तिपाइयां क़रीने से सजी हुई थीं, जिन पर खेल खिलौने, शराब की बोतलें, प्याले, चौसर शतरंज वग़ैरह सजे थे। संदली अलमारियों में निहायत उम्दःजिल्ददार किताबें और शराब की बोतलें सजी हुई थीं। उम्दः २ झाड़,फ़ानूस,दीवारगीर वग़ैरह से कमरे की रौनक़ बहिश्त का समा दिखलाती थी और उस वक्त, जबकि वह अजनबी सब्ज़परी मेरा हाथ थामे हुई हैरत भरी निगाहों से मुझे नीचे से ऊपर तक शायद अपनी बारीक नज़रों के पलड़े पर तौल रही थी। बड़े २ क़दआदम आईने हर एक दर्वाज़ेके जवाब में, ज़रा दर्वाज़े से हटकर खड़े किए गये थे, लेकिन वहां पर जितनी नायाब और बेशक़ीमत तसवीरें लगी हुई थीं, वह सिर्फ़ गंदी ही नहीं, बल्कि इंसान के दिल पर बुरा असर पहुंचाने का दावा रखती थीं। कमरे के हर एक दर्वाज़े पर रंगबिरंगे रेशमी पर्दे पड़े हुए थे और सचमुच ऐसा सूफ़ियाना कमरा मैंने कभी ख़्वाब में भी नहीं देखा था।

क़िस्सह कोताह! जबतक मैं उस कमरे को देखता रहा, वह परीजमाल मेरा हाथ पकड़े हुई मुझे घूरती रही, जिसे मैंने कनखियों से जान लिया था। अख़ीर में, जब मैंने भी मुस्कुराकर उससे चार आंखें

कों तो उसने मुस्कुराहट के साथ अपनी गर्दन नीची करली और पहिला सवाल जो उसने मुझसे किया, वह यह था,—

"अय, अजनबी तू कौन है ?"

वल्लाह आलम ! ऐसी सुरीली, ऐसी शीरीं, ऐसी नज़ाकत से भरी हुई आवाज़ तो मैंने कभी ख़्वाब में भी नहीं सुनी थी ! मगर ख़ैर, तब तो मैं कुछ कुछ ढीठ होगया, क्योंकि वह परी मेरा हाथ अभी तक अपने हाथ में लिए हुई थी ! ग़रज़ यह कि मैंने साथही उसके सवाल का जवाब दिया, कहा—"बेख़ुदी के आलम में गिरफ़ार एक वफ़ादार।"

उस परी ने मेरा हाथ छोड़ और एक अजीब ढंग से भौवें मरोर और नज़रों से ज़हरीले तीर छोड़ कर कहा,—"और तेरा नाम ?"

मैंने भी ज़रा आंख घुमाकर कहा,—"नाकाम, सियहफ़ाम, बदनाम, गुलफ़ाम !!!"

उस परीने कहा,—"अल्लाह, अल्लाह ! तू तो अजीब बशर है ! ख़ैर, यह तो बता कि तू क्योंकर यहां आया, या तुझे कौन यहां लाया ?"

मैंने कहा,—"मैं अपने पैरों से दरेदौलत तक आपहुंचा और मेरी ख़ुशक़िस्मती मुझे यहां तक लेआई।"

यह सुन उस परी ने ज़रा अपनी मुस्कुराहट को रोक और रुखाई के साथ त्यौरी चढ़ा कर कहा,—

"बल्कि तू यों समझ कि तेरी क़ज़ा तुझे यहां घसीट लाई है, जो अभी तुझे अपने गले लगाएगी।"

मैंने शोख़ी के साथ कहा,—"अल्हम्दलिल्लाह ! यह अच्छी ख़ुशख़बरी सुनाई आपने ! लेकिन माहेलका ! इस वक्त तो मैं मरने के लिए तैयार नहीं हूं !!!"

उसने अपनी मुस्कुराहट को अपने रंगीन ओठों तले दबाकर कहा,—"मगर तुझे बहुत जल्द अपनी अजल के साथ मुलाक़ात करने के लिये तैयार हो जाना चाहिए, क्योंकि मेरी तल्वार बहुत जल्द तेरी जान का फ़ैसला किया चाहती है।"

मैंने कहा,—"अय, शहेहुस्न ! तेरी क़ातिल आंखें ही क्या कम हैं जो तू तल्वार उठाने के सद्मे को अपने ऊपर लेना गवारा करती है ! और अगर ऐसाही मंजूर हो तो,—

"खुद गला काटूं, अगर ख़ंजर इनायत कीजिए।
देखिए, दुख जायगी, नाज़ुक कलाई आपकी ॥"

मेरी शोख़ी का जवाब वह कुछ दिया ही चाहती थी कि एक घंटी के बजने की आवाज़ मेरे कानों में सुनाई दी, जिसके सुनतेही मैं तो मैं, वह परी मुझ से भी ज़ियादह घबरा गई। बड़ी फुर्ती से मुझे एक दर्वाज़े के पर्दे की आड़ में खड़ा करके सिर्फ़ इतनाही कह कर वह हट गई कि,—"यहीं चुपचाप खड़े रहो।"

वह पर्दा, गो कुछ दबीज़ था, पर उस में के बूटे के जाल में से मैं उस कमरे के बाहर कुछ कुछ ज़रूर देख सकता था। ग़रज़ यह कि ज्योंही वह परीजमाल पर्दे से हटकर एक आरामकुर्सी पर जाकर बैठी थी कि अदब से झुकी और हाथ बांधे हुई एक लौंडी उसके सामने आ पहुंची और सिर झुका कर बोली,—"सुबह होगया, हुज़ूर ! जहांपैनाह जाफ़रानी कमरे में तशरीफ़ लाए हैं और हुज़ूर को याद करते हैं।"

यह सुनकर उस परी ने कहा,—"तू आगे बढ़, मैं अभी पोशाक बदल कर आती हूं।"

इतना सुनतेही वह लौंडी तो सर झुकाकर वहां से चली गई और वह परीजमाल मेरे जानिब आने लगी। वह अपनी आरामकुर्सी पर से उठकर दोही चार क़दम मेरी तरफ़ बढ़ी होगी कि जहां पर मैं खड़ा था, मेरे पीछे वाला दर्वाज़ा बेमालूम खुल गया और किसी ने बड़ी फुर्ती और आसानी से मुझे अपनी तरफ़ खैंच लिया। यहां तक कि मैं जबतक अपने को सम्हालूं और यह जानूं कि मुझे किसने खैंचा, मेरे हाथ पैरों को किसी ने बड़ी फुर्ती के साथ कसकर बांध दिया और फिर मेरी आंखों पर पट्टी बांधी गई। इसके बाद दो शख़्स, जो शायद मर्द रहे होंगे, और ज़रूर वे मर्द ही थे, मुझे उठा कर न जाने किधर लेचले। पावघंटे तक बराबर ऊपर नीचे चढ़ते

उतरते एक जगह पर जाकर उन्होंने मुझे ज़मीन में उतारा और मेरे हाथ-पांव खोल दिए। इसके बाद जब मेरी आंखों की पट्टी खोली गई तो मैंने अपने तईं एक अंधेरे तहख़ाने में पाया, जहांकी ज़मीन नम थी और खाट बिछौना तो दरकिनार, एक टुकड़ा टाट का भी वहां पर मौजूद न था, जिस पर मैं खड़ा होता, बैठता या आराम करता। उसके बाद मैंने क्या देखा कि वहीं पर वही नक़ाबपोश बुड्ढी हाथ में एक मनहूस चिराग़ लिये मेरे सामने आपहुंची, जो मुझे इस अजीब भूलभुलैयां में लेआई थी।

उसने मुझे बेतरह झिड़कियां और गालियां दीं और इतना कहती कहती वह फ़ौरन उस तहख़ाने से बाहर निकल गई कि,—बेईमान, दग़ाबाज़, जालिये बदमाश! अब तू यहीं बग़ैर आबोदाने के तड़प तड़प कर मर और अपनी शोख़ी का नतीजा देख!"

अल्लाह! यह क्या हुआ! आह! मैं किस बला में आफंसा! ओफ़! मैंने हरचंद उस बुड्ढी को रोकना चाहा, लेकिन वह किसी तरह न रुकी और गालियां देती और दिया लेती हुई वहां से चली गई। उसके जाने पर उस क़ब्र सरीखे अंधेरे तहख़ाने में मैं तनहा रह गया; और तब मैंने अपना जेब टटोला तो अपनी कुल चीज़ों और तल्वार को ज्योंकी त्यों पाया। अंधेरा हद्द दर्जे का था, इसलिये मैंने दीया जलाने के सामान को जेब से निकाल कर मोमबत्ती जलाई और उसके उजाले में उस ख़ौफ़नाक़ तहख़ाने में की, जो बहुत ही तंग, गंदा, नमदार, और बदबू से भरा हुआ था; कैफ़ियत देखी और फिर इस ख़याल से बत्ती को बुझा कर मैं ज़मीनही में बैठ गया कि जिसमें सारी बत्ती आज ही ख़तम न होजाय, बल्कि उससे आख़िरी दम तक काम लिया जासके।

इसके बाद मैं ख़ुदा को याद करने और अपनी हालत पर ग़ौर करने लगा, और इस अम्र के समझने के लिये भी कोशिश करने लगा, कि अब आगे क्या होने वाला है।

दूसरा बयान

उस तहख़ाने में, जिसमें उस वक़ मैं मौजूद था, दिन रात बराबर था; क्योंकि वहांपर अंधेरा इतना गहरा था कि गोया तमाम दुनियाँ के अंधेरे ने सुबह होने पर वहीं आकर पनाह ली हो ! लेकिन इतना मैं जान चुका था कि सबेरा होगया है। क्योंकि जब मैं उस परीजमाल के कमरे में पर्दे की आड़ में खड़ा था, एक लौंडी ने आकर उस परीजमाल से सुबह होने की ख़बर सुनाई थी; इसी से मैंने समझ लिया था कि सुबह होगई है; लेकिन जैसी मनहूस जगह में उस वक़ मैं था, अंधेरे के सबब दिन रात में कोई फ़र्क नज़र नहीं आता था।

अफ़सोस, मैं उसी नमदार ज़मीन में घंटों तक बैठा बैठा अपनी बदक़िस्मती पर रोता रहा; यहां तक कि एक तरह की बदहवासी मुझपर सवार होरही थी ! इतनेही में दोज़ख़ सरीखे गंदे तहख़ाने का दर्वाज़ा धीरे से खुला और हाथ में चिराग़ लिये वही मनहूस बुड्ढी सामने नज़र आई। उस पर नज़र पड़तेही मैं शेर की तरह उछल कर अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ और चहाता था कि उस बुड्ढी को पकड़ कर और उसका गला दबाकर उसे इस बात के लिये मजबूर करूं कि वह मुझे इस क़ैद से रिहा करदे; लेकिन उस बदज़ात बुड्ढी ने मेरे मतलब को समझ लिया और झट वह चौखट के बाहर जा खड़ी हुई और शेरनी की तरह गरज कर बोली,——

"बस, ख़बर्दार ! हरामज़ादे ! अगर तू अपनी जगह से ज़रा भी हिला, या मुझपर किसी क़िस्म की ज़्यादती करने का इरादा किया तो फ़ौरन तू अपनी जान से हाथ धोएगा। इस वक़ तेरी जान मेरे हाथ में है और तू हज़ार सर धुनने पर भी मेरा एक बाल भी बाँका नहीं कर सकता।"

अय, गज़ब ! उस खुर्राट बुड्ढी की बातों ने सचमुच मेरा कलेजा हिला दिया और तब मेरी हिम्मत न पड़ी कि मैं उस शैतान की

बच्चो की ओर बढ़ूं या उस पर अपना वार करूं। गो, मेरी तल्वार उस वक्त तक मेरे क़बज़े में थी, मगर नहीं, पस्तहिम्मती ने उस वक्त मुझे बिल्कुल बोदा और बेकाम कर दिया था। लाचार मैं जहां का तहां चुपचाप खड़ा रहा और मेरे चहरे पर उस चिराग़ की धुंधली रौशनी डालकर उस शैतान की नानी ने कहा,—

"बदबख़्त, बदज़ात! दरयाय गोमती में से एक शख़्स की बेसिर की लाश पाई गई और पहचानी गई है। इसके कहने की कोई ज़रूरत नहीं है कि वह कौन शख़्स था, लेकिन, हां, यह बिल्कुल सही है कि उसे कल रातको तूने ही मारा और उसका सर काट कर लाश गोमती में डालदी। बस, सच बतला! अगर अपनी जान की ख़ैर तू चाहता हो तो जल्द सच सच बतला कि तूही ने न उस बेचारे को मारा है?"

मैं उस बुड्ढी की बातों से बहुतही घबराया, लेकिन अपने दिल को मज़बूत कर और मरने के लिये मुस्तैद होकर मैंने कहा,—"तो क्या तू इस बात का वादा करती है कि अगर मैं सचसच सारा हाल कहूं तो तू मुझे फ़ौरन क़ैद से रिहा कर देगी?"

बुड्ढी,—"हां, अगर मेरे दिल ने तेरी बातों की सचाई को क़बूल किया तो फ़ौरन तू आज़ाद कर दिया जायगा, वरन तामर्ग तू यहीं पड़ा पड़ा बे आबोदाने के तड़प तड़प कर मर जायगा।"

मैंने कहा,—"तो पेश्तर, तुझे यह बतलाना होगा कि तू मेरी बातों की सचाई क्योंकर क़बूल करेगी?"

बुड्ढी,—"यह तो बहुत सहज बात है; यानी अगर तू यह क़बूल करे कि,—हां, मैंने ही उस शख़्स को मारकर दर्या में डाल दिया है, तो मैं जानूंगी कि तूने दरअसल सच कहा।"

मैं बोला,—"तो समझ लो कि यह बात बिल्कुल सही है, और मेरी ख़लासी करो।"

बुड्ढी,—(जलकर) "हुश, पाजी, बदमाश! इस तरह तेरी ख़लासी नहीं की जायगी, बल्कि यों तू छुटकारा पा सकता है कि तू

एक काग़ज़ पर अपना दस्तख़त करके उस काग़ज़ को मेरे हवालेकर दे तो मैं अभी तुझे इस क़ैदख़ाने के बाहर निकाल दे सकती हूं।

यह सुन मैंने जल्दी से कहा,—"लाओ, वह काग़ज़ मुझे दो; मैं फ़ौरन उस पर दस्तख़त कर दूं।"

यह सुन उस बुड्ढी ने अपने ढीले कुरते के जेब में से एक काग़ज़ निकाल कर मेरे सामने फेंका और साथ ही एक मोमबत्ती जला कर उसने मेरे हाथ में देदी। इसके बाद उसने क़लम दावात मुझे दी और मैं उसी मनहूस कोठरी की ज़मीन में बैठ कर उस काग़ज़ में लिखी इबारत को पढ़ने लगा। ज्यों ज्यों मैं उस काग़ज़ को पढ़ता गया, मेरे ताज्जुब की हद न रही और सारी इबारतके पढ़ लेने पर मैंने उस शैतान बुड्ढी की सारी मक्कारी को समझा कि वह मेरे साथ क्या सलूक किया चाहती है !!!

उस काग़ज़ में, जिसे उस मक्कार बुड्ढी ने अपना दस्तख़त कर देने के लिये मुझे दिया था, सिर्फ़ कई सतरें थीं, जो ये हैं,—

"मेरा नाम यूसुफ़ है और मेरा मकान लखनऊ शहर के एक नामी महल्ले हुसेनाबाद में है। मैं मुसव्विर हूं और तस्वीर बनाकर अपनी औक़ातगुज़ारी करता हूं। शाही अस्तबल के दारोग़ा, मियां नज़ीरखां से मेरी कुछ दिली अदावत थी, इस ग़रज़ से उसे मैंने कल रात को मार कर उसकी बेसिर की लाश दर्याए गोमती में बहा दी और इस वार्दात का हाल अपनेही हाथ से लिखकर मैं आम लोगोंमें मशहूर करता हूं और इस बात की इजाज़त देता हूं कि अगर कोई शख़्स बदज़ात नज़ीर का सच्चा वफ़ादार हो तो वह मेरे सामने आए और मुझे गिरफ्तार करने की जुरर्त दिखलाए।"

उस बदमाश बुड्ढी के दिए हुए काग़ज़ की यही इबारत थी। मैं हैरान था कि इतनी जल्दी इस मक्कारा को मेरे नाम, पेशे और मकान का पता क्योंकर लग गया ? क्या यह कंबख़्त मुझे पहचानती थी ! लेकिन उस इबारत के पढ़ने से मुझे एक बात का फ़ायदा ज़रूर हुआ

कि मैंने यह बात बखूबी जान ली कि जो शख्स कल रात को मेरे हाथ से मारा गया, वह शाही अस्तबल का दारोग़ा नज़ीरखां था।

ख़ैर, मैंने उस काग़ज़ को फ़ौरन जला डाला। यह देख वह बुड्ढी चीख़ मार उठी और कड़क कर बोली,-"कंबख्त! तूने यह क्या किया?"

मैंने कहा,—"तेरे सारे पाजीपन पर पानी फेर दिया।"

बुड्ढी,—"तो मैंने समझ लिया कि तेरी क़ज़ा तेरे सर पर सवार हो चुकी है।"

मैंने कहा,—"ऐसा तो मैं भी समझता हूं, लेकिन यह तो बतला कि तूने मुझे क्योंकर पहचाना?"

बुड्ढी,—"लखनऊ के मशहूर मुसव्विर याक़ूब के बेटे यूसुफ़ को कौन नहीं जानता! गो, अभी तेरी उम्र मेरे ख़याल से शायद उन्नीस बीस साल की होगी और तेरे चेहरे पर अभीतक डाढ़ी मूछोंके निशान नहीं नज़र आते हैं, लेकिन तू खूबसूरती और अपने फ़न में एक ही है। मैं कई मर्तबः तेरी दूकान पर से तरह तरह की तस्वीरें ख़रीद लाई हूं; यही वजह है कि मैं तुझे पहचानती हूं; लेकिन, अफ़सोस, कलरात को मैंने बड़ा धोखा खाया।"

उस बुड्ढी ने मेरे बारे में जो कुछ कहा, बहुतही सही कहा; क्योंकि मैं आम लोगों में अपने फ़न का उस्ताद, खूबसूरत, जवांमर्द और फ़ैयाज़ गिना जाता था, और दरअसल, अभीतक डाढ़ी मूंछ की जगह बिलकुल सफ़ाचट थी।

कुछ देरतक वह पाजी बुढ़िया मुझे इस तरह घूरती रही कि शायद निगलना चाहती हो! आख़िर, मैंने कहा,—"बी, गुमनाम! तुमने ढगं तो अच्छा निकाला था कि मुझसे इस काग़ज़ पर दस्तख़त करा कर उस काग़ज़ को किसी ढब से तुम क़ाज़ी के हाथ में पहुंचा देती और फिर मुझे किसी ऐसी जगह पर लेजा पटकतीं, जहांपर तुम्हारे इशारे से शाही गारद के सिपाही मुझे गिरफ्तार करने के लिये पहिले ही से मुस्तैद रहते, और फिर जो कुछ मेरा नतीजा होता, या जैसी

बुरी तरह से मेरी जान ली जाती, इसका अंदाज़ा तुम्हारे अलावे मैं भी बखूबी कर रहा हूं। अब तुम सच बतलाओ कि तुम्हारी ऐसीही मन्शा थी, या नहीं !!!"

मेरी बातों को बड़े ग़ौर के साथ वह ख़ब्बीस बुढ़िया सुनती रही और उसके खूंख़ार चेहरे पर उस वक्त बेढब चढ़ाव उतार होते रहे; जिससे मैंने बखूबी समझ लिया कि उसने अपने दिल की बात मेरे मुंह से सुनकर बड़ा ताज्जुब किया और अख़ीर में यों कहती हुई वह चली गई कि,—"बस, अब तू बे आबोदाने के तड़पतड़प करमरजा !!!"

उसके पीठ फेरतेही दरवाज़ा बंद होगया और मैं फिर अपनी बदक़िस्मती पर अफ़सोस करने लगा।

वह मोमबत्ती, जो उस काफ़िर बुढ़िया ने दी थी, अभी तक कोठरी के फ़र्श पर खड़ी हुई बल रही थी, लेकिन अब मैंने उसका जलाना बेफ़ायदे समझ, उसे बुझाकर अपने जेब के हवाले किया और मैं तरह तरह के ख़यालों में उलझ गया।

मैंने क़यास से ऐसा समझा कि अब शायद दो पहर का वक्त हुआ होगा ! क्योंकि मैं रोज़ दोपहर को खाना खाया करता था, इसलिये मुझे भूख ने सताया और प्यास ने उससे भी ज्यादह मुझे परेशान किया।

मैं शायद यह कह आया हूं कि महीना जेठ का था, जब मैं नज़ीर को मार और खुद नज़ीर बन कर उस मक्कारा बुड्ढी के हमराह उस आलीशान मकान में जाकर इस आफ़त में फंसा था। अफ़सोस, अगर मेरी दिलाराम मुझसे जुदा न की गई होती तो क्यों मैं रात को यों पागलों की तरह घूमा करता और इस बला में फंसता !!!

आज दो महीने से एक दिन ऊपर हुआ कि मेरी दिलरुबा दिलाराम का पता नहीं है। मैंने उसे बखूबी खोजा ढूंढा, और तलाश किया; मगर सब कोशिश बेफ़ायदे हुई, और मेरी प्यारी दिलाराम का कहीं पता न लगा। बस, जबसे वह गायब हुई है, मैं दीवाना हो रहा हूं

और मुमकिन है कि उसकी जुदाई में बहुत जल्द पूरा सौदाई हो जाऊंगा। जब से प्यारी दिलाराम नज़रों से दूर हुई है, न मेरा दिल तस्वीर में लगता है और न किसी दूसरे काम में, बस, सिर्फ़ जब भूक लगती तो मैं कुछ खा लेता और बराबर सौदाइयों की तरह इधर उधर घूमता फिरता ख़ाक छाना करता हूं।

ख़ैर, अब तो मेरी मौत आही चुकी है और मुमकिन है कि वह मुझे बड़ी बेरहमी के साथ गले लगाएगी, लेकिन कोई हर्ज नहीं। क्योंकि शुक्र है खुदा का कि मेरे बाद अब कोई मुझे रोनेवाला नहीं है जिसके लिये मुझे फ़िक्र, तरद्दुद या अफ़सोस हो। मां तो मुझे जनते हो मर गई थी, लेकिन वालिद ने मुझे हर तरह से पाल पोस और पढ़ा लिखा कर होशियार किया। अफ़सोस, दो बरस से वे भी क़ब्र के अन्दर सोते हैं और मुमकिन है कि मुझे भी बहुत जल्द उनके पास जाना पड़ेगा। ख़ैर कोई हर्ज नहीं, जब कि मेरी माशूक़ा प्यारी दिलाराम ही मेरे हाथ से जाती रही तो अब मेरा जीना महज़ फ़ज़ूल और बेकार।

मैं योंही तरह तरह के ख़यालों में उलझा हुआ न जाने कितनी देर तक आप ही आप बड़बड़ाया किया, लेकिन भूक और प्यास की तकलीफ़ ने अब मुझे बहुत ही परेशान किया और मैं घबरा कर उस ख़ौफ़नाक तस्वीर को अपने दिलपर खींचने लगा कि जिससे मेरी मौत होने वाली है! अफ़सोस, आबोदाने के बग़ैर बड़ी तकलीफ़ के साथ मेरी जान ली जायगी !!!

उस वक्त मैंने दिलही दिलमें इस इरादे को खूब पक्का कर लिया कि,—'अब चाहे कुछ भी हो, लेकिन अबकी बेर अगर वह बुड्ढी यहां आई तो ज़रूर उसकी जान लूंगा, और जैसे होसकेगा अपने तईं इस बला से छुड़ाऊंगा।' मगर अब यह उम्मीद नहीं होती थी कि वह मनहूस बुड्ढी फिर यहां आकर अपना नापाक चेहरा दिखाएगी !!!

यकायक मैं चिहुंक उठा और चटपट मोमबत्ती के टुकड़े को

जला कर उसे वहीं ज़मीन में खड़ा कर दिया और अपने जेब से उन चीज़ों को निकाल कर ग़ौर से देखने लगा, जो मैंने उस बदज़ात नज़ीर के जेब में से पाई थीं।

उन चीज़ों में अशर्फ़ियां तो कोई देखने की चीज़ न थी, लेकिन, हां! एक ख़त, हाथी दांत पर बनी हुई एक तस्वीर, और एक छोटा सा छुरा, ये तीन चीज़ें ऐसी थीं, जिन पर ग़ौर करना बहुत ज़रूरी था।

पहिले मैंने उस ख़त को बड़े ग़ौर से पढ़ा और पढ़ने के बाद उसे बड़ी हिफ़ाज़त के साथ कुर्ते के अन्दर फ़तुही के जेब में रख लिया। इसके बाद उस छुरे पर मैं ग़ौर करने लगा, जिसपर कुछ इबारत खुदी हुई थी और जिसकी मूठ सोने की थी और उसपर हीरे जड़े हुए थे। उस मूठ पर भी हीरों के जड़ाव से बड़ी खूबी के साथ किसी एक शख़्स का नाम बनाया गया था।

ग़रज़ यह कि उस बेशक़ीमत छुरे को भी मैंने बड़ी हिफ़ाज़त के साथ अपनी कमर में इस तौर से खोंस लिया कि जिस में उस के गिरने का ख़ौफ़ न रहे।

अब आई तस्वीर की बारी! उसे भी मैंने खूब उलट पलट कर देखा। वह पांच इंच लंबे, और तीन इंच चौड़े हाथीदांत पर निहायत खूबी के साथ बनी हुई थी।

इस क़िस्से के पढ़ने वाले मेरी बात सुनकर चौकेंगे, लेकिन नहीं, मैं अपने होश हवास दुरुस्त करके कहता हूं कि वह तस्वीर मेरी प्यारी दिलाराम की ही थी। लेकिन, उस तस्वीर के देखने से जो कुछ ख़याल मेरे दिलमें पैदा हुए, वे सब ऐसे क़ातिल थे कि जिन्होंने मेरे दिल के साथ वह काम किया, जो ख़ंजर जिगर के साथ करता है।

एक तो यह कि मैंने वह तस्वीर नहीं बनाई थी, बल्कि सच तो यह है कि मैंने आजतक अपनी माशूक़ा की कोई तस्वीर बनाई ही नहीं क्योंकि जब मैं उसकी तस्वीर बनाने बैठता, तब वह यों कहकर न बनाने देती कि,—'इस खिलवाड़ में फ़िज़ूल वक्त ज़ाया न करो और

वह तस्वीर बनाओ, जिससे दो पैसे मिलें, 'क्योंकि मैं अपनी फ़ैयाज़ी के सबब हमेशा मुफ़्लिस बना रहता था।

दूसरे यह कि—जिसने दिलाराम की यह तस्वीर बनाई, वह ज़रूर बहुत अच्छा मुसव्विर होगा, क्योंकि तस्वीर ऐसी ही साफ़ बनी हुई थी। लेकिन उसे दिलाराम के देखने का मौक़ा कहां मिला!

तीसरे—अगर यह तस्वीर दिलाराम ही की हो, और ज़रूर उसी की है,—तो ज़रूर यह तब उतारी गई है, जब दिलाराम मेरे हाथ से जाती रही है। लेकिन इस तस्वीर में दिलाराम जैसी बेशक़ीमत पोशाक पहरे हुए है और वह जैसी खुश व खुर्रम नज़र आती है, उसका ऐसा होना, उस हालत में, जबकि वह मेरे पास से दूर की गई है, या तो बिल्कुल नामुमकिन है, या यह मेरी दिलरुबा दिलाराम ही नहीं, बल्कि कोई और ही नाज़नी है !!!

इस अख़ीर की बात पर मैंने बहुत ज़ोर दिया और बार बार अपने दिल को समझाया कि,—'यह मेरी दिलाराम नहीं है;' लेकिन दिल ने मेरी एक न मानी और वह उस तस्वीर को दिलाराम की ही तस्वीर तसुव्वर करने से बाज़ न आया।

मैंने सोचा,—"तो क्या दिलाराम अब किसी बड़े भारी अमीर की मुहब्बत में फंसकर मुझे बिल्कुल भूल गई है? और क्या अब वह मुझे छोड़कर इस क़दर खुश व खुर्रम है, जैसा सुबूत कि उस की इस तस्वीर के तरीक़े से पाया जाता है !!!"

अल्लाह! अल्लाह! तो क्या मेरी दिलरुबा दिलाराम अब मुझे बिल्कुल भूलकर इस क़दर ऐश वो दौलत की चाट में पड़ गई! लेकिन उसकी तस्वीर से नज़ीर को क्या निस्बत !!! हां हो सकता है, और इसी सबब से तो उसकी लाश को पहचानकर मैंने उस पर थूका था !!!

अल्लाह! तो क्या मेरी दिलाराम के दिल में दग़ा थी? क्या उस ने मेरे साथ दग़ा की?

यह सोचतेही मुझे ग़श सा आगया और मैं चक्कर खाकर वहीं

ज़मीन में गिर गया और बहुत देरतक बदहवास पड़ा रहा।

कितनी देरतक मैं उस बेहोशी के आलम में मुबतला रहा, इसकी मुझे कुछ ख़बर न हुई, लेकिन जब मैं होश में आया तो देखा कि बत्ती बुझ गई थी और अंधेरे का कोई ठिकाना ही न था। आख़िर, मैंने उस तस्वीर को भी उठाकर अपनी फ़तुई के जेब में रक्खा और चाहा कि दिलाराम की बेवफ़ाई का बदला खुद अपनी ही जान से लूं कि इतनेही में एक धमाके की आवाज़ मेरे कानों में गई और मैंने चकपका कर क्या देखा कि वही परी जमाल, कि जिस से रात को एक आलीशान कमरे में मुलाक़ात हुई थी हाथ में एक हलका मोमी शमादान लिये खड़ी है।

उसने मेरे चेहरे पर रोशनी डाली और मुझे देख कर एक आह सर्द खेंची, जिसे मैंने बखूबी सुना। आख़िर, वह बोली,—"बस, जल्द उठो और मेरे साथ आओ।"

मैंने उठते उठते दहशत से कुछ घबरा कर कहा,—"मुझे कहां जाना होगा?"

मेरे दिल का भेद वह समझ गई और मेरी ओर देख ज़रा सा मुस्कुरा कर बोली,—"घबराओ नहीं, मैं वह बेदर्द मनहूस आसमानी नहीं हूं।"

मैं चट उठकर उस परीजमाल के साथ हुआ और दिल ही दिल में इस बातको मैंने समझ लिया कि जिस बुड्ढी ने मुझे इस क़ैद में ला डाला था, शायद उसी के लिये इस परी जमाल ने यह इशारा किया हो और उसका ही नाम आसमानी हो!

अलग़रज़, मैं उस परीजमाल के पीछे चला लेकिन जिस राह से बुड्ढी मुझे लाई थी, या यों समझिये कि जो इस कोठरी का दरवाज़ा था, वह तो ज्यों का त्यों बंद था, मगर उस कोठरी की पत्थर की दीवार में एक नई राह पैदा करके वह परीजमाल आई थी। सो वह मुझे साथ लिये हुए उसी राह से बाहर हुई और हम दोनों के बाहर होतेही एक धमाके की आवाज़ हुई।

मैंने पीछे फिर कर देखा तो दर्वाज़े का कहीं नामोनिशान भी न था और पत्थर की चिकनी दीवार नज़र आती थी।

वहां के पत्थर को उस परीजमाल ने क्योंकर हटाया, या फिर उसे क्योंकर बराबर किया, इसका हाल मुझे मुतलक़ न मालूम हुआ! आने के वक्त वह क्यों कर उस पत्थर को हटा कर आई थी यह मैं नहीं देख सका था; लेकिन जाने के वक्त तो वह रौशनी दिखलाती हुई मेरे आगे थी, पर उस दीवार का पत्थर आप ही आप किस हिक्मत से बराबर हो गया, इसका मतलब ज़रा भी मेरी समझ में न आया।

उस ख़ौफ़नाक तहख़ाने से मुझे निकाल कर वह परीजमाल मुझे कैसी जगह में लेगई थी, यह मैं उस वक्त न जान सका; क्योंकि मुझे अपने साथ उस क़ैदख़ाने से निकालते ही उसने अपने हाथ का शमादान गुल कर दिया, उससे मैं कुछ भी न देख सका।

अंधेरा होने पर उस परीजमाल ने मेरे हाथ में एक पलीता और आग जलाने का सामान देकर कहा,—"अजनबी! तू इस पलीते को जलाकर यहां की कुल कैफ़ियत जान सकेगा।"

इतना कहकर उसने क्या किया, यह मुझे नहीं मालूम; लेकिन फिर वैसे ही धमाके की आवाज़ मेरे कानों में आई, जैसी अभी मैं ने उस पत्थर के खोलने और बंद होने के वक्त सुनी थी।

आख़िर मैंने पलीता जलाया और उसको रौशनी में देखा कि,—मैं एक बहुत ही संगीन गोल इमारत में हूं; जिसके हर चहार तरफ़ सिवाय मज़बूत और बेजोड़ पत्थर की दीवार के दर्वाज़े का कहीं नामोनिशान भी नहीं है। लेकिन मैं हैरान था कि हर तरफ़ से बंद इमारत के अन्दर मेरा दम क्यों नहीं घुटता और मैं मज़े में सांस क्यों कर ले सकता हूं!'

ख़ैर, मैंने घूम घूम कर उस गोल इमारत के हर एक कौने को टटोला, लेकिन मुझे इस बात का पता न लगा कि यहांपर का पत्थर क्योंकर हटाया गया था।

उस गोल कमरे में तीन कोठरियाँ थीं और ज़रूरियात के कुछ सामान वहाँ पर मुहैया थे। उस गोल इमारत के बीचोंबीच ज़ंजीर के सहारे से एक लैम्प लटक रहा था, जिसे मैंने एक तिपाई पर चढ़कर रौशन कर दिया और ज़रूरी कामों से निबटकर कुए में से पानी निकाल कर मैं खूब नहाया। नहाने से मेरी तबीयत कुछ हरी होगई और सूखे कपड़े बदल कर, जो वहाँपर मौजूद थे, मैंने निहायत लज़ीज़ खाना खाया, जो बिल्कुल ताज़ा, बल्कि गरमागरम था। इसके बाद एक गिलास शराब पीकर मैं पलंग पर जा लेटा, जिसपर निहायत उम्दः और दलदार मख़मली गद्दा बिछा था।

मैं हैरान था कि इस अजीब इमारत के अन्दर, जो इतने आराम की चीज़ें मुहैया हैं, वे किसके वास्ते ऐसी पोशीदा और बंद जगह में इकठ्ठी की गई हैं? मगर ख़ैर, इन फ़ज़ूल बातों के सोचने की उसवक्त मुझे न फ़ुर्सत थी और न अक़्ल ही मेरा साथ देती थी। इसलिये मैंने उस पलंग पर सिर्हाने की तरफ़ रक्खी हुई चहारदर्वेश नामी क़िस्से की किताब उठाली और उसी लैम्प की साफ़ रौशनी में मैं पढ़ने लगा। लेकिन दो ही चार वर्क़ के पढ़ते ही मेरा जी ऊब गया और मैं उठकर उस कमरे में टटोलने वाली नज़र से देखता हुआ टहलने लगा। मैंने अपने भरसक बहुत कोशिश की; और अपनी अक़्ल दौड़ाई, मगर इस बात का सूराग़ मैं ज़रा भी न लगा सका कि मुझे इसके अन्दर वह परीजमाल किस हिकमत से पत्थर की चट्टान हटा कर लाई है!

तो मैं इतनी कोशिश क्यों करता था! इसीलिये कि अगर कोई राह यहाँ से निकलने की मिले तो मैं अपनी जान लेकर भागूँ और अपने तईं इस बला से बचाऊँ। लेकिन जब हज़ार कोशिश करने पर भी मैं कुछ भी न कर सका तो लाचार हो, पलंग पर जाकर पड़ रहा और थोड़ी ही देर में गहरी नींद में सो रहा।

तीसरा बयान ।

मैं कब तक बेख़बर पड़ा हुआ सोया किया, इसकी मुझे कुछ भी
बर न थी, लेकिन जब मेरी आंखें खुलीं, तो मैंने क्या देखा कि,—
ही परीजमाल, जो मुझे उस मनहूस क़ैदख़ाने से यहां ले आई थी,
ी पलंग के पास एक कुर्सी पर बैठी और पलंग की पाटी का
सना लगाए हुए मेरी तरफ़ मुहब्बत से देख रही है।'

उसकी ऐसी महरबानो और मुहब्बत को देख मैं चट उठ बैठा
र उसका शुक्रियाअदा करके कहने लगा,— "अय शहेहुस्न! गो,
भी तक मुझे यह नहीं मालूम है कि मैं किस परीपैकर की नेकियों के
झ से दबा चला जाता हूं; लेकिन हां, इतना तो मेरा दिल ज़रूर
से कह रहा है कि,—'अय यूसुफ़! इस वक्त तू जिस नाज़नी की
रबानियों के सदक़े होरहा है, वह कोई मामूली औरत नहीं है,
कि वह रुतबे और दौलत में इतने आलेदर्जे पर है कि तुझसे करोड़ों
चीज़ों को मोल ले सकती है।' इसलिये अय, मेहरबान सब्ज़परी!
मैं यह जान सकता हूं कि इस वक्त मैं किस रहमदिल और खूबरू
ज़नी का मेहमान हो रहा हूं?"

मैंने वहशत के आलम में एक दम इतनी बातें कह डालीं, पर
सुनकर उस परीजमाल ने ज़रा मुस्कुरा कर अपनी क़ातिल आंखें
चहरे पर जमाईं और हंसकर कहा,—"यूसुफ! तू जो इतना फ़िज़ूल
गया, उसका मतलब मैं सिर्फ़ इतना ही समझती हूं कि तू यह
ना चाहता है कि इस वक्त तू कहां पर है और तेरे रूबरू जो
नी बैठी हुई है, वह कौन है?"

उस परीजमाल की बातें सुन कर मैंने कहा,—" हां, हां! मेरा
लब सिर्फ़ इतना ही है, जितना कि तुमने समझा है।"

उस परीजमाल ने अंगड़ाई लेकर कहा,—"ख़ैर, तो मैं अपना और
का हाल तुझे पीछे बतलाऊंगी, बिल्फ़ेल मैं तुझ से यह पूंछा
ती हूं कि तू कौन है; यहां क्योंकर आया और नज़ीर को तू ने
मारा?"

मैंने कहा,—"ये बातें तो मैं अभी तुम्हें बतलाए देता हूं।"

यों कहकर मैंने अपनी दिलरुबा दिलाराम के ग़ायब होने, रातको दर्याये गोमती के किनारे नज़ीर से छेड़छाड़ होने, उसे मारकर उसके ज़ेब से अशर्फ़ी वग़ैरह के पाने, उसकी लाश को दर्याए गोमती में बहा देने और आसमानी बुढ़िया के साथ आंखों में पट्टी बंधवाकर उस कोठरी में पहुंचने के हाल को सिलसिलेवार सुनाकर मैंने कहा,—

"मुझे उस कोठरी में छोड़कर आसमानी किधर ग़ायब होगई थी इसकी मुझे कुछ ख़बर नहीं; लेकिन वहां पर तुम पहुंचकर अपने आलीशान कमरे में मुझे लेगई थीं, यह मुझे याद है। फिर जब घन्टी बजने की आवाज़ आई तो तुमने मुझे पर्दे की आड़ में खड़े होने का हुक्म दिया और मैं वहां खड़ा रहा। थोड़ी ही देर बाद मेरे पीछे का दर्वाज़ा खुला और किसी ने ज़बर्दस्ती मुझे अपनी ओर खैंचकर मेरी आंखों पर पट्टी बांध दी और जब मेरी पट्टी दूर हुई तो मैंने अपने तईं उसी मनहूस तहख़ाने में पाया, जहां से तुम्हारे क़दमों की बदौलत मेरी रिहाई हुई और अब मैं बड़े आराम में हूं।"

इसके बाद मैंने उस परीजमाल से यह भी कह दिया कि वह शैतान बुड्ढी मुझ से कैसे काग़ज़ पर दस्तख़त कराया चाहती थी! पर मैंने उस कागज़ पर दस्तख़त न किया और उसे जला डाला।

मेरी बात सुनकर उस परीजमाल ने कहा,—"ख़ैर, इस बारे में अभी मैं तुम से बहुत कुछ बात करूंगी और अपना पता भी तुम्हें बतलाऊंगी; लेकिन पेश्तर मैं उस ख़ंजर, तस्वीर और ख़त को देखा चाहती हूं; जिन्हें तुमने नज़ीर के जेब में से पाया है और जो अबतक तुम्हारे पास मौजूद हैं। हां, उन अशर्फ़ियों के दिखलाने की कोई ज़रूरत नहीं है, क्योंकि उनसे मुझे कोई मतलब नहीं।"

उस परीजमाल की बातें सुनकर मैंने अपनी फ़तुही के ज़ेब में से ख़त और तस्वीर, वो कमर में से ख़ंजर निकाल कर उस परीजमाल के आगे रख दिया। लेकिन ज्यों ही उसने उस ख़त, तस्वीर और ख़ंजर पर नज़र डाली, बेतहाशा उसके मुंह से एक गहरी चीख़

रूबरू गुज़रीं, लेकिन किसी दरख्वास्त पर भी कुछ ग़ौर न किया गया। करे कौन! बादशाह को तो ऐय्याशी से एक लहज़ः भी फ़ुर्सत नहीं। धीरे २ दर्बार के ख़ास २ लोगों में यह बात फैलने लगी कि,–"जो नौजवान और ख़ूबसूरत शख़्स ग़ायब होते हैं, वे शाहीमहल-सरा' के अलावे और कहीं नहीं ग़ायब होते हैं; और जो वहां गया, वह फिर ज़िन्दः वहां से बाहर नहीं आता। लेकिन ताज्जुब तो इस बातका है कि फिर उन कंबख़्तों की लाशें क्या होतीं हैं! क्या महल सरा के अन्दर ही वे तहेगोर करदी जाती हैं!"

"अलग़रज़ मेरे सिरपर यह ख़फ़क़ान सवार हुआ और मैंने इस बात का पक्का इरादा कर लिया कि मैं इस अम्रका, ज़रूर पता लगाऊंगा। मेरे दोस्तोंने मुझे हरचंद समझाया और इस ख़तरे से किनारे रहने की नसीहत दी, लेकिन, मैंने किसी की एक न सुनी और इस हिमाक़त का मज़ा अब मैं बख़ूबी चख रहा हूं।

"ग़रज़ यह कि मैं हर शब को कुछ रात जाते ही अपनी सूरत बदल कर इधर उधर घूमा करता और रात रात भर इसी तरह सारे शहर में गश्त लगाया करता। एक रोज़ रात के वक्त मैं दर्याए गोमती के किनारे टहल रहा था कि इतने ही में एक ख़ब्बीस बुड्ढी मेरे पास आई और बोली,—"अगर ज़िन्दगी का मज़ा चखना है तो मेरे साथ आ।"

"मैं तो यह चाहता ही था, बस चट उसके पीछे हो लिया और कुछ दूर जानेपर उस शैतान बुड्ढी ने मेरी आंखोंपर पट्टी बांधी और मुझे घंटों तक इधर उधर घुमाती फिराती शाहीमहलसरा के अन्दर लेगई। वहां पहुंचने पर मेरी आंखों परकी पट्टी खोली गई; तब तो मैंने एक आलीशान कमरे के अन्दर, अपने रूबरू एक निहायत हसीन नाज़नी को मुहब्बत की नज़र से घूरते और मुस्कुराते देखा, दरअसल वह देहली वाली मुश्तरी रंडी के अलावे और कोई न थी।

"आख़िरश एक हफ्तेतक मैंने उस परीजमाल के साथ खूब ही मज़े उड़ाये। और उसने अपने कमरे के क़रीब ही एक बेमालूम

तिलस्मी कोठरी में मुझे छिपा रक्खा। आठवें रोज़ जब मैं नींद से जागा तो मैंने अपने तईं इस अजीब इमारत के अन्दर पाया। लेकिन शुक्रखुदा का है कि मेरी किताब मेरे सिरहाने धरी थी और क़लम मेरे जेब में मौजूद थी।

"बस, आज चार दिनों से मैं इस अजीब तिलस्म के अन्दर क़ैद हूं, जिसमें कहींपर भी दर्वाज़े का नामोनिशान नहीं है, और बहुत कोशिश करने पर भी मैं दर्वाज़े का पता नहीं लगा सका हूं अफ़सोस बग़ैर आबोदाने के चार रोज़ गुज़र गये और मैंने इस अर्सेमें यहां किसी की सूरत न देखी। ख़ैर अब मैं ज़रूर मरूंगा, इसलिये नश्तर देकर अपने खून को निकाल, उससे इस ख़त को मैं लिखकर इस किताब के अन्दर रख देता हूं, ताकि अगर मुझसा कोई बदनसीब यहां आए और इस किताब को देख यहां से छूटने की तदबीर करे। बस, अब मैं खुदा की याद में मशगूल होता हूं और इस खत को पूरा करता हूं।"

"अल्लाह, अल्लाह, मैं उस ख़त का मतलब समझकर निहायत परेशान हुआ और आंखों के सामने अपनी मौत को नाचते देख एक दम बड़े ज़ोर से चीख़ मार उठा, जिससे वह गोल इमारत गूंज उठी। इतनेही में उस तिलस्मी मकान की दीवार का पत्थर अपनी जगह से दूर हुआ और उस राह से वही लौंडी मेरे लिये खानालेकर आपहुंची जो आज कई घंटे पहिले उस परीजमाल के बुलाने और उसकी ख़्वाब-गाह में आसमानी की लाश की ख़बर सुनाने आई थी।

पांचवां बयान।

उस लौंडी को देखते ही मैं उठ बैठा और साहब सलामत के बाद मैंने कहा,—" बीबी ! तुम्हारा नाम क्या है ? "

यह सुनकर उसने खाने की रकाबी को एक तिपाई पर रख दिया और मेरी ओर देख, ज़रासा मुस्कुरा कर कहा,—"मेरा नाम पूछकर आप क्या करेंगे ? "

मैंने कहा,—" क्या नाम बतलाने में भी कोई हर्ज है ? "

उसने कहा,—"आख़िर, आपको मेरे नाम से मतलब ही क्या है ?"

मैंने कहा,—" मतलब यही है कि अगर ज़रूरत पड़े तो मैं तुम्हें किस नाम से पुकारूंगा ! "

उसने कहा,—" आपको इसकी ज़रूरत ही क्या है। मैं सिर्फ़ इसीलिये तैनात की गई हूं कि आपको ठीक वक्त पर उम्दः खाना पहुचाया करूं; सो तो मैं करूंहीगी; बस, इसके अलावे और कोई काम मैं आपका नहीं कर सकती, इसलिये मेरे नाम जानने की कोई ज़रूरत नहीं है। हां, अगर कोई ज़रूरत आपको ऐसी ही आपड़े तो आप मुझे सिर्फ़ 'लौंडी' कहकर ही पुकार सकते हैं। "

ये बातें उसने मुस्कुराते हुए कहीं, पर उनमें रुखाई ज़रूर थी, इसलिये मैंने फिर उससे कुछ ज़ियादह छेड़छाड़ करनी मुनासिब न समझी। मुझे चुप देख वह आपही बोली और कहने लगी,—" साहब उठिये और खाना खाइये, क्योंकि देर होंने से यह ठंढा हो जायगा।

यह सुनकर मैंने कुछ रुखावट के साथ कहा,—" मुझे आज भूख नहीं है, इसलिये अपने खाने को वापिस ले जाओ। "

मेरी ये बात सुनकर उसने अपने हाथ पर हाथ मार कर एक क़हक़हा लगाया और कहा,—" हज़रत ! यह नाज़ तो आप किसी नाज़नी को दिखलाइयेगा। "

यह सुनकर मुझे कुछ तो गुस्सा आया और कुछ हंसी आई, पर

गुस्से को दिल के अन्दर ही दबा कर मैंने कहा,—"तुम किसी नाज़नी से क्या कम हो।"

उसने हंस कर कहा,—"वल्लाह! तो क्या आप मुझ से शादी करना चाहते हैं?"

मैंने कहा,—"मान लो कि अगर ऐसा ही मेरा इरादा हो तो क्या तुम मेरी ख़्वाहिश पूरी न करोगी?"

उसने कहा,—"लेकिन, साहब! आपकी बातों का क्या ठिकाना!"

मैंने कहा,—"यह क्यों?"

उसने कहा,—"यह यों कि मर्द की ज़ात बड़ी बेमुरौवत होती है। क्योंकि शुरूशुरू में तो ये लोग बड़े बड़े वादे करते हैं, लेकिन जहां चार दिन गुज़रे कि सारे क़ौलोक़रार को मुतलक़ भूलकर ऐसे तोतेचश्म बन जाते हैं, गोया कभी कोई वास्ता ही न रहा हो। ऐसी हालत में आपकी बातों पर कौन यक़ीन कर सकता है?"

मैंने कहा,—"बी बेनाम! आपने तो अपने इन्साफ़ से दुनियां के सभी आदमियों को एक ही सा ठहरा दिया!"

यह सुनकर उसने एक क़हक़हा लगाया और कहा,—"तो क्या आप उन खुदग़रज़ लोगों की जमात से अपने को अलग रक्खा चाहते हैं?"

मैंने कहा,—"मानलो कि अगर मेरा ऐसा ही इरादा हो तो?"

उसने कहा,—"तो क्या आप अपनी दिलरुबा दिलाराम से अब मुतलक़ सरोकार न रक्खेंगे!"

मैंने कहा,—"इसमें दिलाराम की क्या ज़िक्र है?"

उसने कहा,—"क्यों! दिल तो एक ही है न; पस, वह अगर मुझसे लगाइएगा तो फिर दिलाराम के लिये क्या रह जायगा और अगर दिलाराम से लगाइएगा तो मेरे लिये क्या बचा?"

मैंने कहा,—"बी गुमनाम! तुम तो बड़ी मज़ाक की औरत हो!

वल्लाह, जैसी तुम ख़ूबसूरत, कमसिन और नाज़ुक-बदन हो, वैसी ही तुममें तबियतदारी भी कूट कूट कर भरी हुई है।"

उसने कहा,—"बस, मुआफ़ कीजिए, मैं अपनी तारीफ़ आप कर लूंगी। आइए, खाना खाइए, क्योंकि मैं ज़ियादह देरतक यहां नहीं ठहर सकती; क्योंकि मेरे मालिक का मुझे ऐसा ही हुक्म है।"

मैंने कहा,—"बीबी! अगर तुम मेरे साथ खाना खाना क़बूल करो तो मैं खाऊं, वरना अपना खाना वापिस ले जाओ।"

वह बोली,—"और बेगमसाहब से कह दूं कि उन्होंने इसलिये खाना वापिस कर दिया कि मैंने उनके साथ खाना खाने से इनकार किया था! क्यों!"

मैंने कहा,—"ख़ैर, जो तुम्हारे जी में आवे सो करो।"

वह बोली,—"साहब! आपको बेगम के साथ खाना खाना ज़ेबा देता है, न कि मुझसी एक कमतरीन लौंडी के साथ।"

नाज़रीन मुझे मुआफ़ करिएगा, कि मैं अपनी नालायक़ी की दास्तान आपको सुना रहा हूं। क्या करूं लाचार हूं। जबकि मैंने इस बात की क़सम खाई है कि मैं अपने गुज़श्तः हालात बिल्कुल सही सही लिखूंगा तो फिर उन्हीं बातों को तो मैं लिख सकता हूं, जो बिलकुल सही हैं। क़िस्सह कोताह, बहुत कुछ छेड़छाड़ के बाद मैंने उस लौंडी का हाथ थामकर उसे अपने बग़ल में बैठा लिया और उसके साथ बड़े शौक़ से खाना खाया। ऐसे क़ैदख़ाने में जहां हर वक्त मौत सिर पर नाचा करती है और जहां से छुटकारा पाना बिल्कुल ग़ैर मुमकिन है, एक नाज़नी को बग़ल में बैठाकर खाना खाने में क्या लुत्फ़ नज़र आता है, इसकी लज़्ज़त वेही नाज़रीन उठा सकते हैं, जिन्हें कभी ऐसा मौक़ा मिला हो। लेकिन मेरी इस बेहूदा हर्कत से बहुत से लोग मुझसे चिढ़ जायंगे और मुझे निरा कमीना समझने लगेंगे; लेकिन नहीं, ऐसा न समझना चाहिए; क्योंकि ऐसी क़ैद से बग़ैर उस गुमनाम लौंडी की मदद के मैं टलू क्योंकर सकता और

बग़ैर दोस्ती पैदा किए, वह मुझे उस क़ैदखाने के बाहर कब कर सकती ! इसके अलावे वह गो, लौंडी थी, लेकिन उसकी खूबसूरती, नज़ाकत, और बातें ऐसी थीं, कि जिनसे यही बात ज़ाहिर होती थी कि यह औरत किसी अच्छे ख़ान्दान की है और किसी मुसीबत में मुबतिला होने ही से लौंडी के दरजे को पहुंची है।

गरज़ यह कि मैंने बातों ही बातों उस लौंडी से .खूब गहरी दोस्ती पैदा करली और जब वह मुझसे फिर मिलने का वादा करके वहां से चली गई तो दिलही दिल में निहायत .खुश हुआ और ऐसा समझने लगा कि अब अगर .खुदा ने चाहा तो मैं बहुत जल्द इस बला से छुटकारा पाजाऊंगा।

उसके जाने पर इन्हीं बातों की उधेड़ बुन में मैं देर तक लगा रहा और फिर मुझे नींद आ गई।

छठवां बयान ।

कब तक मैं सोया हुआ था, इसकी मुझे कुछ ख़बर न रही, लेकिन जब मेरी आंखें खुलीं तो मैंने उसी बांदी को वहांपर टहलते हुए देखा मुझे जगा हुआ जानकर वह मेरे पलंग के पास आई और मुस्कुराकर बोली,—"आप तो खूब सोना जानते हैं।"

मैं उठ बैठा और हाथ पकड़ कर मैंने उसे अपने पास पलंग पर बैठा लिया और कहा,—"आप कब यहां तशरीफ़ लाईं ?"

यह सुनकर उसने एक क़हक़हा लगाया और हंसकर कहा,—"वल्लाह, अब तो आप मुझे 'आप' कहने लगे !"

मैंने कहा,—"तो अगर यह 'आप' नागवार ख़ातिर हो तो आप भी मुझे 'आप' न कहा करें।"

उसने कहा;—"बेहतर ! क्योंकि दोस्तानः बरताव में 'आप' लफ्ज़ की कोई ज़रूरत नहीं। लेकिन अगर मलका के सामने तुम से कुछ कहने की ज़रूरत होगी तो मैं उस वक्त तुम्हें 'आप' ज़रूर कहूंगी मगर जहां तक मुमकिन हो, तुम मलका के सामने मुझ से न बोलना और मेरी ओर मुहब्बत की निगाह से हर्गिज़ न देखना, वरना हम तुम दोनों की जान मुफ्त जायगी और तुम्हें फिर दिलाराम का मिलना दुश्वार हो जायगा।"

मैंने कहा,—"तुम घबराओ नहीं, मुझ से ऐसी ग़लती हर्गिज़ न होगी। लेकिन बी गुमनाम ! यह तो बतलाओ कि मेरी प्यारी दिलाराम मुझे कब दस्तयाब होगी ?"

उसने हंसकर कहा,—"क्यों हज़रत ! अब दिलाराम के खोजने की क्या ज़रूरत है, जब कि आपने मुझ से दिल लगाया है !"

उसकी इस बात ने गोया मेरे कलेजे में ज़हरीली बरछी मार दी, जिसके दर्द से मैं बेताब होगया; लेकिन अपनी बदक़िस्मती पर ख़याल करके उस चोट को मैंने भीतर ही भीतर दबा लिया और बड़ी मुश्किल

से ज़रा मुस्कुराकर कहा,--"लेकिन, मुझे यह तो बतलाओ कि अगर दिलाराम और तुम--दोनों को मैं वैसा ही प्यार करूं, जैसा कि लोग अपनी आंखों की दोनों पुतलियों पर मुहब्बत रखते हैं तो इसमें तुम्हें क्या उज्र हो सकता है ?"

वह बोली,--"अजी ! हज़रत ! कहीं दिल भी दो हुआ है ! पस, यह सरासर ग़ैरमुमकिन है कि एक शख्स दो नाज़नियों को यकसां प्यार कर सके।"

मैंने कहा,--"तो क्या जिनके यहां एक से ज़ियादह नाज़नियां हैं, वे उन सभों के साथ यकसां मुहब्बत नहीं करते !"

वह बोली,--"नहीं, हर्गिज़ नहीं; क्योंकि ऐसा होही नहीं सकता पस, अभी से अच्छा है कि हमारे तुम्हारे दिल की सफ़ाई हो जाय और आइन्दे के लिये कोई ख़रख़शा बाक़ी न रह जाय।"

मैंने कहा,--"तुम क्या सफ़ाई चाहती हो ?"

वह बोली,--"सौत की सफ़ाई।"

मैंने कहा,--"इसका क्या मतलब है, खुलासे तौर से कहो ?"

वह बोली,--"यही कि अगर तुम्हें मुझ से ताल्लुक़ रखना हो तो दिलाराम का ख़याल अपने दिल से एक दम भुला दो।

मैंने कहा,--"यह तो नहीं हो सकता।"

वह बोली,--"तो फिर अब मुझसे तुम किसी क़िस्म की उम्मीद न रखना।"

मैंने कहा,--"यह तो, बीबी ! तुम नाहक़ मुझपर ज़ुल्म करती हो। अजी ! बी ! मैं तुम दोनो को यकसां प्यार करूंगा।"

वह बोली,--"लेकिन, मुझे ऐसे प्यार की ज़रूरत नहीं है। मैने सिर्फ़ इतना तुमसे इसीलिये कहा कि तुम मुझसे मुहब्बत करने पर आमादा होरहे थे, वरना मुझे इन बातों के कहने से कोई मतलब न था और न अब है।"

इतना कह कर और तमक कर जब वह पलंग पर से उठने लगी

तो मैंने उसके हाथ को थाम लिया और कहा,—"देखो बीबी! इतनी नाराज़ न होवो और अगर तुम्हें मेरी मुहब्बत मंजूर नहीं है तो बराहे मेहरबानी इस क़ैद से तो मेरा छुटकारा करदो।"

वह कहने लगी,—"ऐसा तो तभी हो सकता है, जब कि तुम मुझ से मुहब्बत करो और दिलाराम का ख़याल अपने जी से बिलकुल भुला दो। वरनः तामर्ग़ तुम इसी क़ैदख़ाने में पड़े पड़े सड़ा करोगे और यहां से ताज़ीस्त न छूट सकोगे।"

यह सुनकर मैंने भी जोश में आकर कहा,—"तो ख़ैर, ऐसा ही सही। मैं करोड़ों सदमे उठा कर अपनी ज़िन्दगी बर्बाद कर सकता हूँ; लेकिन दिलाराम की याद, या उसकी खोज नहीं छोड़ सकता और मिलने पर उसे हर्गिज़ अपने सीने से अलग न करूंगा।"

"तो तुम यहीं पड़े पड़े सड़ा करो।" यों कहकर वह बड़ी तेज़ी के साथ पोशीदः दरवाज़ा खोलकर वहां से चली गई और मैं अपने साथी, तरह तरह के ख़यालों का साथ देने के लिये मजबूर हुआ।

सातवां बयान।

इसी तरह देर तक मैं अपने ख़यालों की उलझन में उलझा रहा, फिर मुझे नींद आगई और मैं सो गया। कितनी देरतक मैं सोया रहा; इसका बयान मैं नहीं कर सकता, लेकिन जब उस परीजमाल ने मुझे आकर जगाया तो मुझे मालूम हुआ कि सुबह होनें में अभी दो तीन घन्टे की देर है।

उसके जगाने पर मैं उठ बैठा और मुंह हाथ धोकर पलंग पर आ बैठा, उसी पर वह परीजमाल भी आज मेरे बग़ल में बैठ गई और बड़ी मुहब्बत से मेरे गले में बाहें डालकर उसने मेरे गालों का बोसा लेलिया।

अल्लाह आलम! उस वक्त मैं सोया था, या जागा, इसकी मुझे कुछ भी ख़बर न रही और मस्ती के आलम में आकर मैंने भी उसे अपने सीने से लगा कर बेतहाशा बोसे लेने शुरू कर दिए। इसके अलावे जब मैंने कुछ और हाथ पैर बढ़ाने शुरू किए तो वह झिझक कर पलंग से नीचे उतर गई और पासही रक्खी हुई तिपाई पर बैठ, मुस्कुरा कर बोली,—"बस, दोस्त! आज यहीं तक रहने दो, कल फिर इसी वक्त मैं तुमसे मिलूंगी, उस वक्त तुम अपने दिलके बिल्कुल अरमान निकाल लेना।"

उसके हटते ही मुझे गोया पारा मार गया, जिस से मेरा सारा बदन सुन्न हो गया और काठ की मूरत के मानिन्द मैं पलंग पर बैठा बैठा उसका चेहरा निहारा किया। मुझे चुपचाप सन्नाटे के आलम में देखकर वह हंसपड़ी और बोली,—"आह, दोस्त! तुम इतने सुस्त क्यों पड़ गए?"

मैंने कहा,—"क्या करूं, तुमने दिलरुबा! मेरे दिल का बेतरह खून किया, और खून करके भी उसमें ऐसी बेमौके आग लगादी कि जिस को जलने से मुमकिन है कि कुछही लहज़े में मेरी रूह ख़ाक होजायगी।"

यह सुन कर वह मुस्कुराने लगी और बोली,-" अजी, वह ख़ाक अक्सीर का काम देगी, ज़रा उसे अच्छी तरह जलने तो दो। मगर ख़ैर, इस वक्त मैं तुमसे जिस ग़रज़ से मिलने आई हूं, अब उसे तुम्हारे आगे ज़ाहिर करती हूं। मुझे उम्मीद कामिल है कि तुम अगर मुझे दिल से प्यार करते होगे तो हर्गिज़ झूठ न बोलोगे।"

मैंने जोश में आकर कहा,-" माहेलका ! झूठ ! अफ़सोस, अभी तक तुमने मेरे दिलको न पहचाना ! अजी, हज़रत ! तुमसे भला मैं कभी झूठ बोल सकता हूं ! और ऐसी हालत में, जबकि तर्फ़ैनके दिल का पर्दा उठ गया है और दोनों जानिब से बहकर मुहब्बत का दर्या एक दूसरे से मिल गया है।"

मेरी बातें सुन कर वह ज़रासा मुस्कुराई और कहने लगी,-" मैं तुमसे यह जानना चाहती हूं कि तुमने उस बांदी से, जो कि तुम्हें खाना पहुंचाने आती है, कुछ दिल्लगी की है।"

नाज़रीन ! उस परीजमाल के इस सवाल के सुनते ही मेरी रूह कांप उठी और मैंने दिल ही दिल में यह ग़ौर कर लिया कि हो न हो, उस बदकार लौंडी ने मेरी कोई शिकायत इससे ज़रूर की है। क्यों कि वह मुझसे इस बात पर नाराज़ हो गई थी कि मैं उसके ख़ातिर दिलाराम को नहीं भूल सकता था आख़िर मुझे चुप देखकर उस परी-जमाल ने मुझे सिरसे पैर तक घूरकर देखा और कुछ बेरुखीके साथ कहा,-" क्यों, हज़रत ! बोलते क्यों नहीं।"

मैंने कहा,—" साहब ! मैं क्या बोलूं ! क्योंकि तुम ऐसा बेहूदः सवाल करती हो कि जिसका कोई जवाब ही नहीं है। भला, इसे तुम खुद सोच सकती हो कि जब मेरा दिल तुम पर मायल हुआ है तो फिर मैं उस लौंडो से क्योंकर दिल्लगी करूंगा !"

उसने कहा,—" तो क्या उसके साथ तुम्हारी कोई लगावट नहीं है ?"

मैंने कहा,—" लगावट ! अजी हज़रत ! मैंने तो अब तक उससे

एक बात भी नहीं की है। बस, वह खाना लाकर रखजाती है और चली जाती है।"

वह बोली,—"लेकिन, उस लौंडी ने तो तुमसे कुछ न कुछ छेड़-छाड़ ज़रूरही की होगी क्योंकि वह निहायत तबीयतदार औरत है।"

मैंने कहा,—"होगी! मैं तो अबतक उसे निरी गूंगी बहरी समझता था, क्योंकि आजतक उसने मुझसे एक बात भी न की।"

वह बोली—"लेकिन यह तो तुम सरासर झूंट कहते हो! क्योंकि उस दिन आसमानी की लाश की ख़बर उसी बांदी ने तो आकर मुझे यहां दी थी। फिर तुम इसे गूंगी कैसे कहते हो!"

यह बात उस परीजमाल ने सच कही। वाक़ई, उस वारदात की ख़बर इस लौंडो ने मेरे सामनेही दी थी, लेकनि उस वक़ यह बात मुझे याद न थी। सो मुझे कुछ ग़ौर करते देख वह कुछ बेरुखी के साथ कहने लगी,—"बस, बस, अब ज़ियादा सफ़ाई न दिखलाओ। मैं समझ गई कि तुम मुझे चकमे देते हो और उस लौंडी के साथ ज़रूर कुछ न कुछ लगावट रखते हो। मैं जहांतक समझती हूं, तुम उसको अपने साथ लेकर यहांसे भागा चाहते हो, लेकिन अगर ऐसा तुम्हारा ख़याल है तो यह सरासर तुम्हारी हिमाक़त है; क्योंकि ऐसा करने से वह लौंडो तो मारी जाहीगी; लेकिन तुम्हारे धड़पर भी सर क़ायम न रह सकेगा। भला यह क्या मुमकिन है कि बग़ैर मेरी मरज़ी के तुम यहां से बाहर जासको!"

उस परीजमाल की बातों से मैं बहुत हैरान इसलिये था कि मेरी लगावट का हाल इसे क्योंकर मालूम हुआ! क्या, यह आग उसी शैतान लौंडीने तो नहीं भड़काई। आख़िर मैं कुछ सोचकर कहने लगा,—"दिलरुबा! मुझे ताज्जुब होता है कि आज तुम इस क़िस्म की बहकी बहकी बातें क्यों करने लगीं! अय हज़रत! मुझसे और उस लौंडी से किसी क़िस्म का लगाव नहीं है, लेकिन तुम्हें अगर मेरे कहने पर यक़ीन न हो तो यह बिहतर होगा कि मेरे लिये खाना पहुंचाने केलिये तुम

किसी दूसरी लौंडी को तैनात करदो। मैं समझता हूं कि ऐसा करने से फिर तुम्हारे दिल में मेरी जानिब से कोई खटका न रह जायगा।"

उसने कहा,—"लेकिन, इसके करने से कोई नतीजा नहीं; वजह इसकी यह है कि मेरी ख़िद्मत में एक से एक बढ़कर लौंडियां हैं, बस जो यहां आएगी, उसीके साथ तुम छेड़छाड़ करोगे, और उसीको अपनी लच्छेदार बातों में फंसाकर यहांसे भगाने की बंदिशें बांधोगे।"

मैंने कहा,—"मुझे क्या ख़फ़कान सवार हुआ है कि मैं तुम सरीखी हूर को छोड़ कर लौंडी के साथ यहांसे भागने की कोशिश करूंगा? अजी साहब! मैं तो यही चाहता हूं कि ताक़यामत मैं तुम्हारे क़दमों के साए तले पड़ा रहूँ और मरने पर तुम अपने हाथों से इसी कमरे के अन्दर मुझे दफ़ना दो।"

इतना सुनकर उसने अपनी कुर्ती के जेब में से एक काग़ज़ को निकालकर मेरे हाथ में दिया और कहा,—"तो, अगर तुम मुझे इस क़दर प्यार करते हो तो इस काग़ज़ पर अपना दस्तख़त कर दो। तब मैं समझूंगी कि वाक़ई, तुम मुझे तहेदिल से प्यार करते हो और यहां से भागने या मेरी किसी लौंडी से मुहब्बत करने का कभी इरादा न करोगे।"

मैंने उसके हाथ से वह काग़ज़ लेकर पढ़ा, जिसके पढ़ते ही मुझे घुमटा सा आने लगा और यही जान पड़ने लगा कि गोया कोई मेरा कलेजा एंठकर उसके अन्दर से मेरी रूह को बाहर कर रहा हो।

नाज़रीन! वह एक 'तलाक़नामा' था, जिसका मतलब यही था कि,—"मैं अपनी दिलाराम को काज़ी के रूबरू इसलिये तलाक़ देता हूं कि वह बदचलन औरत है।"

अफ़सोस! उस काग़ज़ को पढ़कर मैंने उसके टुकड़े टुकड़े कर डाले। यह देख वह परीजमाल शेरनी की तरह तड़पकर उठी और अपनी कमर से लटकते हुए ख़ंजर को खैंच, तनकर बोली,—

"तो अब तू मरने के लिये तैयार हो, क्योंकि जब तूने इस काग़ज़ पर अपने दस्तख़त न किए तो अब मैं तुझे हर्गिज़ जीता नहीं छोड़ सकती।"

"आह, मुझे इसी ऐन जवानी में मरना पड़ा। प्यारी दिलाराम! तू कहां है! अफ़सोस मरने के वक्त मैने तेरे चांदसे मुखड़े की झलक न देखी! ख़ैर अगर तू जीती है तो ताक़यामत जीती रह और अगर मर गई है तो ज़रूर ही तू मुझे बहिश्त में दस्तयाब होगी। लेकिन अगर मेरे दिल में कोई मलाल रहा जाता है तो यही है कि मरने से पेश्तर मैं तेरी सूरत न देख सका।"

मेरी उस बेबसी पर उस परीजमाल को कुछ भी तर्स न आया और उसने अपने हाथ को ऊँचा करके कहा,—"तो, बस, अब तू मरने के लिये तैयार होजा।"

मैंने कहा,—"ले, बेरहम! मैं तैयार हूं।" यों कहकर मैंने अपने कलेजे को उसके आगे कर दिया। देर न थी कि उसका क़ातिल हाथ उस तेज़ छुरे को मेरे कलेजे के पार कर देता, कि इतने ही में उसी गोल इमारत का वही चोरदर्वाज़ा एक धमाके की आवाज़ से खुल गया और एक वैसीही परीजमाल आती हुई नज़र आई जैसी कि एक (परीजमाल) मेरा ख़ून करने के लिये तैयार थी। इस अजीब कैफ़ियत को देखकर मैं एकदम घबरा गया और सोचने लगा कि,—"या ख़ुदा! यह कैसा तमाशा है कि एक ही सूरत शकल की दो परीजमाल कहां से आगई।

क़िस्सह कोताह! मैं तो अपने सोचने में ही ग़र्क़ था, पर इधर जो कुछ तमाशा हुआ, उसका हाल सुनिए।

ज़्योंहीं धमाके की आवाज़ हुई, त्योंहीं वह परीजमाल, जो मुझे मारने पर तुली हुई थी, बेतरह झिझककर कई हाथ पीछे की ओर हट गई, और ज्यों ही दूसरी परीजमाल उस कमरे के अन्दर आई त्योंहीं वह (पहिली) बड़ी फुर्ती के साथ उस कमरे से निकल भागी। यह सारा काम उतनी ही देर में होगया, जितनी देर में पलक गिरती है।

मैंने देखा कि इस अजीब तमाशे को देखकर जितना मुझे ताज्जुब हुआ था, मैंने अंदाज़ ही से समझलिया कि उतना ही ताज्जुब उस (दूसरी) आई हुई परीजमाल को भी हुआ होगा । क्योंकि उसने आते ही मुझ से जैसे जैसे सवालात करने शुरू किये थे, उनसे यही बू निकलती थी। उसने आते ही मुझसे पूछा,—" हैं ! यह क्या मामला है ? "

मैं,—" यह तो मैं भी जानना चाहता हूं ? "

वह,—" यह कौन थी ? "

मैं,—" जो तुम हो ! "

वह,—" हां, सूरत शकल से तो वह मुझसी ही जान पड़ती थी, लेकिन दरअसल वह कौन औरत थी ?

मैं,—" यह मैं क्या जानूं ?

वह,—" वह यहां क्यों कर आई ? "

मैं,—" जिस तरह तुम आईं ? "

वह,—" वह तुम्हें क्यों मारा चाहती थी ? "

मैं,—" इसलिये कि मैं उसके साथ इश्क़मज़ाकी नहीं किया चाहता था । "

वह,—" हूं,—लेकिन ये काग़ज़ के टुकड़े कैसे हैं ? "

मैं,—" यह एक परचा था, जिसपर वह मुझसे दस्तख़त कराया चाहती थी । "

यह सुनकर उसने उन टुकड़ों को उठाकर मिलाना चाहा, ताकि उस परचे का मज़मून पढ़ाजाय, लेकिन उसके टुकड़े इतने बारीक थे, कि जिनका मिलाना ग़ैरमुमकिन था । यह देखकर उसने उन्हें फिर ज़मीन में फेंकदिया और कहा,—" इस परचे में क्या लिखा था ? "

इस पर मैंने उससे झूठमूठ बात बनाकर कहा,—" इसमें उसी इश्क़मज़ाकी की पोख़्तगी के लिये मेरे दस्तख़त की ज़रूरत थी । "

वह,—" ऐसा ! तो यह उस शादी का गोया इक़रारनामा था ? "

मैं,—हां, ऐसाही था । "

वह,—" लेकिन, यह पाजी औरत कौन थी, जिसने बिल्कुल मेरी ही सूरत बनाली थी ! "

मैं,—" यह मैं क्या जानूं ! बल्कि अब तो मुझे तुम पर भी शक होता है । क्योंकि मेरी अक्ल इस वक्त कुछ भी काम नहीं देती कि मैं तुम दोनों में किसे असली समझूं और किसे बनावटी । "

वह,—" असली मैं हूं । मैंनेही पहले पहल तुम्हें उस कोठरी में देखा था, जिसमें तुमको छोड़कर आसमानी ग़ायब होगई थी, मैंनेही तुम्हें आसमानी की क़ैद, यानी उस मनहूस तहख़ाने से छुड़ाकर यहां ला रक्खा और मुझको तुमने तस्वीर वग़ैरह दिया था । "

मैंने कहा,—" इससे मैं यक़ीन करता हूं कि तुम्ही असली होगी। लेकिन इस कमरे के चोरदरवाज़े के खोलने का हाल तो सिवा तुम्हारे और तुम्हारी लौंडी के, कोई तीसरा शख़्स नहीं जानता न ? "

उसने कहा,—" हां, अबतक मैं भी ऐसाही समझती थी और मुझे यक़ीन है कि मेरी नेक लौंडी ने, जिसपर मुझे पूरा भरोसा है, हर्गिज़ इस कमरे या इसके ताले का भेद किसी पर ज़ाहिर न किया होगा।

मैं,—" तो वह लौंडी कहां है ? "

वह,—" मैंने उसे किसी काम के लिये कहीं भेजा है । "

मैं,—" मैं समझता हूं कि ज़रूरही किसी तुम्हारे दुश्मन ने यहां के पोशीदः हालात जान लिए हैं और वह मेरे खून का प्यासा बन रहा है, मुमकिन है कि तुम्हारी ग़ैरहाज़िरी में वह मेरी जान लेडाले । "

यह सुनकर उसने कहा,—" हां, यह तो सही है । इस वास्ते अब इस मुक़ाम पर तुम्हारा रहना सरासर नामुनासिब है । अच्छा, मैं अभी उस लौंडी को भेजती हूं, वह तुम्हें यहांसे बाहर कर देगी ।

यह सुनकर मुझे कुछ खुशी हुई और मैंने जल्दी से पूछा,—" क्या शाहीमहल के बाहर वह मुझे करदेगी । "

वह बोली,—" हां, ऐसाही होगा और जब जब मुझे तुमसे मिलने की ज़रूरत होगी, वही लौंडी बआसानी तुम्हें यहां ले आएगी ।

यह सुनकर मुझे निहायत खुशी हुई कि भला बाद मुद्दत के मैं आज़ाद तो होऊंगा, फिर अगर दिलाराम जीती है और उसके दिल में मेरी मुहब्बत की निशानी बाक़ी है, तो वह किसी न किसी दिन मुझे ज़रूर ही मिल जायगी।

मैं येही सब बातें सोच रहा था कि उसने मेरे हाथ को अपने हाथों में लेकर कहा,—"प्यारे यूसुफ़! तुम मुझे भूल न जाना, क्योंकि मैं तुम पर दिल से मुहब्बत रखती हूं और जब मैं चाहूं, तब तुम ज़रूर आना।"

मैंने जल्दी से कहा,—"दिलरुबा! तुम किसी बात की फ़िक्र न करो और मुझे अपने नज़दीक ही समझो। क्योंकि तुम मुझे जब याद करोगी मैं फ़ौरन हाज़िर होऊंगा।"

वह,—"लेकिन यूसुफ़! इस वक्त जिस काम के लिये तुम्हारे पास आई थी, इस झमेले में उसे तो बिल्कुल भूल ही गई थी। वह बात यह है, कि तस्वीर वग़ैरह चीज़ें जो तुम से मैंने पाई थीं वे सब बहुत हिफ़ाज़त की जगह में रखने पर भी ग़ायब होगईं, बस, इसी बात का सुराग़ लगाने मैंने अपनी उस बांदी को कहीं भेजा है।

यह सुनकर मैं कुछ घबरा उठा और बोला,-"क्या ग़ायब होगईं? ओफ़! तो इससे आपका कुछ ज़ियादह नुक़सान तो न होगा!"

वह,—"नुक़सान की बातें न पूंछो, लेकिन ख़ैर, अब मैं ज़ियादह देर तक यहां नहीं ठहर सकती।"

इतना उसने कहा ही था कि उस इमारत का वही चोरदरवाज़ा फिर धमांके की आवाज़ के साथ खुल गया और वही लौंडी सामने से आती हुई नज़र आई। उसे देखते ही उस परीजमाल ने पूछा,-"क्या वे चीज़ें मिलीं!"

लौंडी,—(बदहवासी से) "जी नहीं, उनका अभी तक कुछ पता न लगा। ख़ैर, हुज़ूर यहां से जल्द भागें, क्योंकि यहां का पूरा पता किसी ने जहांपनाह को देदिया है और वे बड़े गुस्से में भर कर इसी तरफ़ आरहे हैं।"

इसके बाद उस चोरदरवाज़े के बाहर कुछ आहट मालूम हुई जिसे जानकर उस परीजमाल ने किसी हिकमत से वहां पर रौशन चिराग़ को बुझा दिया और अंधेरे के दर्या में वह कमरा डूब गया। फिर मुझे नहीं मालूम कि क्या हुआ।

क्योंकि मेरे हाथों को किसी मज़बूत हाथों ने पकड़ा और किसी ने ज़बरदस्ती मेरी नाक में बेहोशी की दवा ठूंस दी और मैं बेहोश होगया। कितनी देरतक मैं बेहोश था, इसकी मुझे कुछ भी ख़बर न रही, पर जब मैं होश में आया तो अपने तईं एक बहुत ही तंग कोठरी में एक चारपाई पर पड़े हुए पाया, जिसमें एक ही दरवाज़ा था और ताक़ पर एक धुंधला चिराग़ जल रहा था। मैंने आंखें मलकर इन सब बातों को जब अच्छी तरह से देखा तो क्या नज़र आया कि वह शैतान की ख़ाला आसमानी बुढ़िया दर्वाज़ा रोके हुई मेरे सामने खड़ी है! यह देखते ही मुझे फिर ग़श आ गया और मैं बेहोश होगया। क्योंकि मैंने आसमानी को देखकर अपने दिल में यही तसौवर किया था कि मैं मर गया हुं और मर कर अपने गुनाहों की सज़ा पाने के लिये उसी दोज़ख़ में पटका गया हूं, जहां पर गुनहगार आसमानी भी लाई गई है।

आठवां बयान।

कितनी देर तक मैं उस बेहोशी के आलम में मुतिबला रहा इसकी मुझे कुछ ख़बर न रही; लेकिन जब मैं होश में आया तो मैंने क्या देखा कि मैं एक ख़ाली चारपाई पर पड़ा हुआ हूं, जिस पर किसी क़िस्म का बिछावन नहीं है। यह देखकर मैं देरतक पड़ा २ उस कोठरी के चारों ओर देखने लगा, जोकि बहुत ही तंग, गंदी, नमदार और बदबू से भरी हुई थी। उसकी तंगी का हाल नाज़रीन सिर्फ़ इतनी ही बात से समझलें कि उस चारपाई के हर चहार तरफ़ सिर्फ़ एक २ हाथ जगह और ख़ाली थी। वह कोठरी चौखूंटी, पत्थरों से बनी हुई, मज़बूत और इतनी तंग थी कि मैं ज़मीन में भी तन कर खड़ा नहीं हो सकता था। उसकी पाटन भी पत्थरों से इस क़िस्म की बनाई थी कि जोड़ नहीं मालूम होता था! उसमें सिर्फ़ एक ही दरवाज़ा था, जिसकी जांच मैंने उठकर की तो मालूम हुआ कि वह लोहे के पत्तरों से जड़ा हुआ है और निहायत मज़बूत है; मैंने उसके खोलने के लिये बहुत ही कोशिशें कीं, पर सब बेकार हुई क्यों कि वह बाहर से बंद था। उस कोठरी में एक ताक़ पर एक मनहूस चिराग़ जल रहा था, जिसका उजाला इतना धुंधला था कि जो उस तंग कोठरी के लिये भी पूरे तौर पर काफ़ी न था।

ग़रज़ यह कि मैंने खाट से नीचे उतर कर उस कोठरी की भरपूर जांच की, पर वह इतनी संगीन बनी हुई थी और उसका दरवाज़ा इतना मज़बूत था कि मेरी अक्ल हैरान होगई और मेरी हिम्मत ने मेरा साथ छोड़ दिया! फिर ज़मीन की जांच करने के लिये मैंने वह चारपाई उठानी चाही, पर वह बहुत कुछ ज़ोर करने पर भी अपनी जगह से न हिली; क्योंकि वह लोहे की थी और उसके चारों पाये ज़मीन में गाड़े हुए थे और ज़मीन पत्थरों से पटी हुई थी।

ग़रज़ यह कि जब मैंने वहां से अपने भागने की कोई सूरत न देखी तो लाचार हो, उसी खरहरी खाट पर आकर मैं पड़ रहा और और पड़ा पड़ा देर तक अपनी बदक़िस्मती को कोसता रहा। फिर

यकबयक मेरे दिल में यह बात आई कि पेश्तर मैंने जब कि पहली मर्तबः मैं होश में आया था, इस दर्वाज़े पर मैंने आसमानी को देखा था। तो क्या वह मरी नहीं है! या उसकी रूह इस दोजखसरीखे क़ैदख़ाने में मेरा मुंह चिढ़ाने और सताने आई। और यह भी तो हो सकता है कि यह मुक़ाम दोजख़ का कोई हिस्सा हो, और मैं मरकर अपने गुनाहों की सज़ा पाने के लिये यहां पर लाकर रक्खा गया होऊं! मुमकिन है कि बात ऐसी ही हो और यही वजह है कि मुझे आसमानी की रूह दिखलाई पड़ी!

लेकिन देर तक इन्हीं बातों पर ग़ौर करने से मेरा जी घबरा गया और देरतक मैं बदहवास पड़ा रहा। फिर मेरा ख़याल कुछ बदला और मैंने अपनी उन चीज़ों को सम्हाला, जो मेरे साथ थीं। मैंने देखा कि मेरी कुल चीज़ें मेरे पास हैं, इसलिये यह कभी मुमकिन नहीं है कि मैं मर गया होऊं। बेशक मैं ज़िन्दः हूं और इस मनहूस जगह में फिर क़ैद किया गया हूं। इसलिये यह भी मुमकिन है कि दर असल वह आसमानी या उसकी रूह हर्गिज़ न रही होगी, सिर्फ़ मेरे ख़याल ने उसकी सूरत गढ़ ली होगी। और यह भी तो मुमकिन है कि आसमानी अभी तक जीती हो! लेकिन नहीं, उसके मरने या मारे जाने में कोई शक नहीं है। बस, यातो वह सिर्फ़ मेरा ख़याल ही ख़याल था, या आसमानी की रूह मुझे सताने आई थी।

या इलाही! उस कम्बख़्त की रूह का ख़याल होते ही। मेरा कलेजा दहल उठा और मैं दिल की कमज़ोरी के सबब देर तक बदहवास पड़ा रहा।

यह आलम कबतक रहा, इसका ठीक ठीक अन्दाज़ा तो मैं नहीं कर सका, लेकिन इतना ज़रूर कह सकता हूं कि घंटों तक मैं उसी उधेड़बुन में लगा रहा। इतने ही में उस तंग कोठरी में नमालूम किधर से हवा का एक ऐसा झोंका आया कि वह मनहूस चिराग़ गुल हो गया और अंधेरा होते ही मेरी खाट ज़ोर से हिली।

इस अजीब कैफ़ियत के देखते ही मैं एक दम से घबरा गया और

मैने चाहा कि खाट से उतर कर इस बात की जांच करूं कि इतनी मज़बूत लोहे की खाट क्यों कर हिली, लेकिन मुझे ऐसा करने का मौक़ा ही न मिला। क्योंकि ज्योंहीं वह खाट हिली, त्योंही नीचे की ओर जाने लगी, और जब तक मैं कुछ ग़ौर करूं, वह तेज़ी के साथ बहुत ही नीचे जारही। जहां तक उसके जाने की हद रही होगी, वहां तक जाकर वह ठहर गई और एक लहज़ः ठहर कर वह इस तेज़ी के साथ उलटी कि मैं एक दम से नीचे पानी में जा गिरा और जब तक अपने हाथ पैर सम्हालूं, कई ग़ोते खागया।

आह! उस वक्त मेरे दिल पर जो कुछ गुज़री, उसका बयान मैं किसी तरह नहीं कर सकता और न उस मुसीबत का अन्दाज़ा प्यारे नाज़रीन ही किसी तरह कर सकते हैं। उस खौफ़नाक अंधेरे में भी मैं अपनी मौत को अपनी आंखों के आगे नाचती हुई देख रहा था और कुछ ही लहज़े के लिये अब मैं इस दुनियां में मेहमान था। मैने उस ग़ज़ब के अंधेरे में चारों ओर कुछ दूर तक बढ़कर देखा, पर किसी ओर मुझे दीवार न मिली, डूबकर भी कई मर्तबः मैने ग़ोते लगाए, पर पानी की तह तक मैं न पहुंच सका। तब मैने दिलही दिल में यही समझा कि या तो यह खूब लंबा चौड़ा और निहायत गहरा तालाब होगा, या दर्याय गोमती में मैं गिराया गया होऊंगा।

ग़रज़ यह कि मैं खुदा को याद करता हुआ बराबर तैरने लगा। अपने खयाली अन्दाज़े से मैं हर चहार तरफ़ दूर तक बढ़ता गया, लेकिन मुझे किसी तरफ़ भी किनारा न मिला। ग़ोते भी मैने कई मर्तबः लगाए, लेकिन पानी की तह तक मैं न पहुंचा। योहीं बहुत देरतक मैं तैरता रहा और दिलही दिल में यही सोचता रहा कि बस, अब की झपेटे में मौत मुझे खाया चाहती है।

धीरे धीरे मेरे हाथ पैर ढीले होने लगे, दम फूलने लगा और सारे बदन में कपकपी होने लगी। यहां तक कि मैं थक कर ग़ोता खागया और इस मर्तबः मैं पानी की तहतक पहुंचा। वहां पहुंच कर मैने एक बहुत ही मोटी ज़ंजीर पाई, जो शायद लोहे की रही होगी। उसके

पाते ही मुझे कुछ सब्र हुआ और मैं उसे थाम्ह कर एक ओर को तेज़ी के साथ चला।

कुछ देर तक वही ज़ंजीर पकड़े हुए चलने के बाद मैं एक ऐसी जगह पर पहुंचा, जहां पर मेरी गर्दन तक पानी था, इसलिये मैं खुदावंद करीम का शुक्रिया अदा कर के सुस्ताने लगा और जब कुछ तबीयत ठिकाने हुई तो मैं उसी ज़ंजीर को पकड़े हुए फिर आगे बढ़ने लगा। कुछ दूर आगे बढ़ने पर मैं पानी से निकल कर सूखे में आया, जहांकी ज़मीन एक तरह से दलदल थी, मै ज़ंजीर को पकड़े हुए, बहुत सम्हल कर पैर रखता हुआ कुछही दूर और आगे गया था कि मुझे कुछ उजेला नज़र आया और मैं वहीं ठहर कर उजेले को देखने और उस पर ग़ौर करने लगा। लेकिन वह उजेला इतनी दूर पर था और इतना धुंधला था कि सिवाय जुगनूं के और वह कुछ भी नहीं मालूम देता था।

आखिर, मैं धीरे धीरे बढ़ता हुआ, जब उस उजेले के क़रीब पहुंचा तो क्या देखता हूं कि एक पत्थर की संगीन दीवार में वह ज़ंजीर, जिसे थाम्हे हुए मै यहां तक पहुंचा था, एक कड़े में लटकाई हुई थी और उसके पासही एक हाथ की दूरी पर दीवार में एक नक़ली सांप बना हुआ था। उसकी आंखों में दो बेशक़ीमत जवाहिर जड़े हुए थे, जिनकी चमक से उस मुक़ाम पर इतना उजाला ज़रूर था कि जिसकी मदद से मैं वहां पर की चार चार हाथ दूर तक की सारी कैफ़ियत बखूबी देख सकता था।

पेश्तर तो मैंने अपने पेट से पानी निकाला, फिर अपने कपड़े पहिन कर मैं सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिए। कुछ देर तक तो मैं तरह २ के ख़यालों में उलझा रहा, फिर यकायक मेरे ध्यान में यह बात आई कि ज़रा इस सांप को तो टटोलें, देखें, इससे कोई राह निकलती है या नहीं। यह सोचकर मैं उस सांप की मूड़ी पकड़ कर इधर उधर घुमाने लगा, लेकिन वह न घूमी; तब मैंने उसका सिर अपनी तरफ़ खैंचा तो वह एक बालिश्त तक बाहर खिंच आया

उसके खिंचतेही एक धमाके की आवाज़ हुई और उसके बग़ल वाला एक पत्थर ज़मीन के अंदर घुस गया। यह तमाशा देखकर मैं बहुत चकपकाया और ख़ुदा को याद कर धीरे २ उस राह के अन्दर घुस गया। भीतर घुसकर मैने देखा कि दूसरी ओर भी दीवार में वैसा ही सांप बना हुआ है और वह भी एक बालिश्त दीवार से बाहर निकला हुआ है। यह देखकर मैंने उस सांप को भीतर की तरफ ठेल दिया तो चट वहां का पत्थर बराबर हो गया और दर्वाज़े का नामोनिशान भी न रहा।

अब मैं दूसरी तरफ़ था, लेकिन उस ओर भी सांप की आंखों से निकलती हुई अजीब चमकने कुछ दूर तक उजाला कर रक्खा था। लेकिन उस उजाले से मेरा काम नहीं निकलता था। पहिले तो मैंने यह सोचा कि अगर इस सांप की आंखों के दोनों जवाहिर मैं लेसकूं तो मेरा बहुत काम निकलेगा; लेकिन जब मैं उन्हें न उखाड़ सका तो लाचार होगया और उस सुरंग में आगे की ओर मैंने पैर बढ़ाया।

वह सुरंग क़रीब चार हाथ के चौड़ी, इतनी ही ऊंची पत्थरों की दीवार से मज़बूत और आगे की ओर बराबर ऊंची होती गई थी। ज़मीन उसकी नम थी और शायद ज़मीन में पत्थर नहीं बिछा था; ख़ैर, मैं ख़ुदा २ करता हुआ आगे बढ़ा और ज्यों ज्यों मैं आगे बढ़ता गया, साथ ही साथ अंधेरा भी खूब ही बढ़ता गया।

योहीं कुछ दूर जाकर वह सुरंग घूमी और इसी तरह कई जगह पर घूमती हुई एक मुक़ाम पर जाकर ख़तम होगई। वह सुरंग मेरे अंदाज़ से ढाई सौ क़दम से कम लंबी न रही होगी।

अब मैं फिर तरद्दुद में पड़ गया, क्योंकि सुरंग के ख़तम होजाने पर अंधेरे के सबब यह मैं नहीं जान सकता था कि वहां की क्या कैफ़ियत है या उस जगह से अपना छुटकारा क्योंकर, होसकता है।

मतलब यह कि जब मैं हर चहार तरफ़ बहुत कुछ टटोल चुका और कोई चीज़ इस क़िस्म की मैंने न पाई कि जिसकी मदद से मैं उस

मनहूस जगह से निकल सकूं, तो मैं अपनी ज़िन्दगी से ना उम्मीद होकर वहां धरती में बैठ गया और देर तक तरह तरह के ख़यालों में उलझा रहा। कितनी देर तक मेरी यह हालत रही, यह तो अब मैं नहीं बतला सकता, लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि मैं बहुत देर तक बदहवास रहा।

इतनेही में मेरे कान में एक पटाखे की आवाज़ गई, जिससे मैं चौकन्ना होकर उठ खड़ा हुआ और इधर उधर देखने लगा। कुछही देर बाद मैंने रोशनी देखी, जिससे मेरा बिखरा हुआ दिल बटुर कर इकट्ठा हो गया और मैंने देखा कि—आह ग़ज़ब, सुरंग के दर्वाज़े पर हाथ में जलता हुआ पलीता लिये वही शैतान की नानी आसमानी खड़ीहै।

उस बद शकल और बदज़ात चुड़ैल को देख कर मेरी रूह कांप उठी और उससे चार आंखें होते ही मैंने अपनी गर्दन झुका ली। मुझे ज़मीन की तरफ़ निहारते हुए देख कर आसमानी शेरनी की तरह गरज उठी और कड़क कर बोली,—"कंबख़्त, दोज़ख़ी कुत्ते! तु अभी तक जीता है! अफ़सोस, मौत का निवाला होकर भी तू यहां तलक जीता जागता आ पहुंचा!

उसकी कड़ी आवाज़ सुन कर थोड़ी देर के लिये मेरा सारा बदन सनसना उठा और मैं ज़मीन का तरफ़ देखता हुआ चुपचाप खड़ा रहा। मुझे चुप देख कर वह शैतान बुड्ढी फिर गरज़ उठी और बोली, "पाजी नामाक़ूल! अभी तक तू जी रहा है?"

अब तो मैंने भी अपने दिल को मज़बूत किया और उसकी ओर देख कर कहा,—

"बदज़ात, बुड्ढी! मैं भी तुझ से यही सवाल करता हूं कि तू भी तो मर गई थी; पर मर कर तू दौज़ख़ से क्योंकर लौट आई?"

यह सुनकर वह झल्ला उठी और मेरी ओर बेतरह घूरकर बोली,—"बदज़ात लौंडे! मैं तेरा खून पीने लौट आई हूं, ताकि तू अपनी शरारत का मज़ा चक्खे और इस दुनियां में ज़ियादह दिन तक

रहकर बदमाशी का बाज़ार गर्म न कर सके।"

मैंने कहा,—"और हरामज़ादी! तू यों जुल्म का बाज़ार लगाए रहे और यहां से अपना मुंह काला न करे!"

वह बोली,—"चुपरह, शोहदे! वरना मैं अभी तेरी जीभ पकड़ कर खैंच लूंगी और तेरे तन की बोटियां काट २ कर चील कौओं को खिला दूंगी। अफ़सोस! तू अभी तक जीता जागता मेरी आंखों के सामने खड़ा है और मैं अभी तक तेरा कलेजा न चबा सकी!"

मैंने जल्दी से कहा,—"बस बस, अब ज़ियादह ज़बांदराज़ी न कर, वरना अभी मैं मारे लातों के तेरा भुरता बनाकर चख जाऊंगा।"

इतना सुनकर वह कमर से खंजर खैंच कर मुझ पर पलीता लिए हुए ही झपटी। अगर मैं होशियार न रहा होता तो उम्मीद थी कि उसका क़ातिल खंजर मेरे कलेजे से पार पहुंच गया होता, लेकिन मैं पहिले ही से होशियार था, इसलिये उछलकर उसके बग़ल में हो गया और बडी फुर्ती के साथ मैंने उसकी कलाई ऐंठकर खंजर छीन लिया। गो, मुझे उसपर निहायत गुस्सा आ गया था, लेकिन बूढ़ी औरत समझकर मैंने उसे क़त्ल करना मुनासिब न समझा, सिर्फ़ एक लात तानकर मैंने उसके कूल्हे पर ऐसी लगाई कि वह गिरकर अंटा चित्त होगई और उसके हाथ से गिर कर पलीता बुझ गया! ये सारी बातें पलक मारते ही हो गई थीं।

इतने ही में—"मारो, बांधो, पकड़ो—" कहते हुए कई नकाबपोश हाथों में खंजर लिये हुए आ पहुंचे, जिनमें से एक शख्स के हाथ में एक जलता हुआ पलीता भी था।

गरज़ यह कि जबतक मैं सम्हलूं उनमें से एक ने तांत का फन्दा मेरे गले में डालकर मेरे हाथों को बेकार कर दिया और मेरे उस खंजर को छीनकर, जोकि मैंने आसमानी से छीन लिया था, मुझे ज़मीन में पटक, कस कर मेरे हाथ पैर बांध दिए।

इसके बाद फिर वे सब आपस में ये बातें करने लगे ।—:

एक,—" इस कम्बख़्त को अभी क़त्ल कर डालो । "

दूसरा,—" नहीं, नहीं, इसे इसी तरह यहां पड़ा रहने दो कि भूख प्यास के मारे तड़प २ कर मर जाय । "

तीसरा,—" नहीं; भाई ! इस ख़ंजर को इस पाजी के कलेजे के पार कर दो । "

चौथा,—" मगर नहीं, इसे इस तर्कीब से मारना चाहिये कि जिसमें बड़ी तकलीफ़ के साथ इसकी जान निकले । "

पांचवां,—" वह कौन तर्कीब है ? "

चौथा,—" यही कि इसे उठाकर उसी तालाब में डालदो, ताकि हाथ पैर बंधे रहने के सबब यह डूब जाय और निहायत तकलीफ़ के साथ इसकी जान निकले । "

नाज़रीन ! मैं चुपचाप पड़ा पड़ा उन क़ातिलों की बात सुनता रहा, लेकिन बोला कुछ भी नहीं; क्योंकि हाथ पैर बंधे रहने और हथियार छिन जाने के सबब मैं बिल्कुल लाचार हो रहा था । इसके अलावे एक बात और भी बड़े ताज्जुब की थी, जिसपर ग़ौर करने के सबब मेरा ख़याल उस वक्त कुछ बंटा हुआ था ! वह बात यह है कि वे पांचों नकाबपोश, जहां तक मैं ख़याल करता हूं मर्द न थे, बल्कि वे सब नौजवान औरतें थीं, जिन्होंने अपने छिपाने के लिये सिर्फ़ मर्दानी पोशाक नहीं पहनली थीं, बल्कि अपने अपने चेहरे पर सभोंने नकाब भी डाल ली थी । इसके अलावे उस चौथी औरत की आवाज़ के सुनते ही मैं चौंक उठा था, क्योंकि उसकी आवाज़ कुछ पहचानी हुई सी मालूम देती थी, लेकिन उस वक्त मेरे ख़याल में यह बात न आई कि यह औरत कौन है और इसकी आवाज़ मैंने कहां पर, वो कब सुनी है; क्योंकि नाज़रीन सोच सकते हैं कि उस वक्त मेरे दिल पर क्या गुज़र रही थी !

क़िस्सह कोताह, उसी चौथी औरत की बात को सभों ने पसन्द किया । इतने ही में आसमानी भी होश में आई और उठकर मुझे गालियां देने लगी ; अब तक वह बदहवास पड़ी थी; क्योंकि

मेरी भरपूर लात उसके कूल्हे पर लगी थी। पस, उसने भी उठते ही उन सब नकाबपोशों की ओर हाथ हिलाकर कहा, कि-" इस मूज़ी को अभी उसी तालाब में लेजा कर डाल दो।"

मतलब यह कि आसमानी की ज़बानी भी यही फ़ैसला सुनकर उन सभों ने मुझे उठा लिया और जिस रास्ते से घूमता हुआ मैं यहां तक आया था, उसी ओर वे सब मुझे ले चले। उस वक्त जलते हुए पलीते को अपने हाथ में लेकर आसमानी बड़ी खुशी के साथ आगे आगे चल रही थी।

मैं उस वक्त अपने जीने की बिल्कुल ऊम्मीद छोड़ कर अपने ख़ुदा को याद करने लग गया था, क्योंकि उन कंबख़्तों से मैंने अपने वास्ते कुछ भी कहना सुनना बिल्कुल फ़ज़ूल और बेबुनियाद समझा था।

आख़िर, वे सब भी उसी तरह सांपवाले रास्ते कोखोलते हुए उसी तालाब पर पहुंचे, जिसमें से अभी थोड़ी देर पहिले मैं निकला था।

वहां पहुंच कर उसी चौथी औरत ने अपने सब साथियों को सुना कर कहा,--"भई, तुम सब इसे इसी तालाब में डाल कर जल्द लौटना, क्योंकि मैं ऊपर वाला दर्वाज़ा खुला छोड़ आई हूं, इस वास्ते मैं अब यहांसे जाती हूं।"

यह न जाने कहां का दर्वाज़ा था, जिसके खुले रहने का हाल सुनकर शायद सब घबरा उठे और बोले,--" आह, तुमने यह क्या गज़ब किया। ख़ैर तो तुम अभी यहां से कूंच करो।"

यह सुनकर वह चौथी औरत बड़ी तेज़ी के साथ वहां से भागी और उसके जाने पर वे चारों औरतें मुझे लिए हुई उसी ज़ंजीर को पकड़े पानी में धंसीं। आह! उस वक्त मेरे दिल पर कैसी क़यामत बरपा हो रही थी, इसका बयान मैं नहीं कर सकता। आख़िर उन बे-रहमों ने गले तक पानी में जाकर मुझे ज़ोर से पानी में डाल दिया और गिरतेही मैं कुछ दूर पानी के नीचे चला गया, लेकिन पानी ने बहुत जल्द मुझे ऊपर फेंक दिया और तैराकी के फ़न में पूरा दख़ल

रहने के सबब हाथ पैर बंधे रहने पर भी मैं पानी के ऊपर जहाज़ी गोले की तरह बहने लगा। लेकिन इतना मैं बखूबी समझ चुका था कि इस तरह मैं बड़ी मुश्किल से घंटे दो घंटे तक पानी पर ठहर सकूंगा और ज्योंही दम उखड़ा, डूबकर मर जाऊंगा। आह! उस वक्त की मुसीबत का बयान मैं क्योंकर करूं।

लेकिन, उस हालत में भी मैं अपने मालिक को न भूला था और हर लहज़े उसीको अपनी मदद के वास्ते पुकार रहा था। योंही पानी पर बहते बहते आधे घंटे भी न बीते होंगे कि मैं क्या देखता हूं कि किसी जानिब से एक जलता हुआ काफूर का ढेला पानी में आ गिरा, लेकिन हाथ पैर बंधे रहने के सबब मैं घूम फिर नहीं सकता था कि इस बात की जांच करता कि वह ढेला किधर से आया, या उसे किसने फेंका।

ख़ैर, मैं यही अगर मगर सोच रहा था कि पानी में किसी क़िस्म की 'छप छप' की आवाज़ हुई, जैसी कि 'डांड' खेने से होती है। यह आवाज़ सुनकर तरह तरह के ख़याल मेरे दिल में पैदा होने लगे, लेकिन सिवाय ख़याली पुलाव पकाने के और मैं कुछ भी न जान सका, क्योंकि एक तो अब काफूर का डेला बुझगया था और दूसरे मैं किसी जानिब को घूम फिर नहीं सकता था।

इतने ही में फिर एक जलता हुआ काफूर का ढेला पानी में गिरा और तब उसके उजाले में मैने देखा कि एक छोटी सी किश्ती मेरी तरफ़ आ रही है। यह देखकर मैने तहेदिल से खुदा का शुक्रिया अदा किया। इतनेही में एक बहुतही धीमी आवाज़ मेरे कानों में गई, जिसका मतलब यह था, "क्या तुम अभी तक होश हवास में हो?"

मैने भी उसी तरह धीरे से कहा,—"हां, अभी तक तो, खुदा के फ़ज़ल से मैं सांस लेरहा हूं।"

इतना सुनते ही उस किश्ती पर जो शख़्स था, उसने एक तेज़ छुरी से रस्सी काटकर मेरे हाथ पैरों को आज़ाद कर दिया, फिर धीरे से कहा,—"इतनी ताक़त मुझमें नहीं है कि मैं तुम्हें इस किश्ती पर

चढ़ा सकूं, क्योंकि अगर ज़रा भी इसने करवट ली तो उलट जायगी; इसलिये तुम इसकी पतवार पकड़लो तो मैं इसे खेकर किनारे पर ले चलूं।"

इतना सुन और पतवार को पकड़ कर मैंने कहा,—"बहुत खूब, अब आप किश्ती को किनारे पर लेचलें और मेरी जान बचाने का सवाब लें। खुदा आपको इस नेकी के एवज़ में वह दौलत बख़्शेगा, कि जिसका बयान करना मेरी ताक़त से बाहर है।"

नाज़रीन! वह काफ़ूर का दूसरा डेला भी बुझ गया था, इसलिये मैंने यह नहीं जाना कि मेरी जान बचानेवाला औरत है या मर्द, क्योंकि उसने दो एक बातें इतने धीरे धीरे की थीं कि मैं उसकी आवाज़ से कुछ भी नहीं जान सका था कि वह औरत है, या मर्द।

ग़रज़ यह कि थोड़ी ही देर में वह किश्ती किनारे लगी और उसी अजनबी मेहरबान ने अपने हाथों का सहारा देकर मुझे पानी से बाहर किया। उस वक्त भी खूबही अंधेरा था।

मैं पानी के बाहर तो हुआ, लेकिन मेरा सिर चक्कर खा रहा था इसलिये मैंने अपने दोनों हाथों से उसको ज़ोर से पकड़ लिया और धीरे धीरे इतना कहा,—" अय, मेहरबान, दोस्त! तू मुझे सम्हाल; क्योंकि मुझे चक्कर आ रहा है और मैं ग़श खाकर गिरा चाहता हूं।"

नवां बयान।

बस इसके बाद फिर क्या हुआ, इसकी मुझे कुछ भी ख़बर नहीं लेकिन जब मेरी आंख खुली तो मैं क्या देखता हूं कि मेरा सिर मारे दर्द के टुकड़े टुकड़े हुआ जाता है और सारे बदन में भी शिद्दत से दर्द है। मैने उठना चाहा, पर उठ न सका, क्योंकि मुझे ऐसा जान पड़ा कि मैं निहायत कमज़ोर हो रहा हूं।

यह हाल देखकर मैने करवट ली पर चैन न पड़ा तब दूसरी करवट बदली, तो भी चैन न हुआ। अख़ीर में घबराकर मैं चित्त पड़ा रहा और सोचने लगा कि मैं कौन हूं; कहां हूं, यह मुक़ाम कौन है और यहांका मालिक कौन है; लेकिन उस वक्त मेरी समझ में कुछ न आया और मैंने आंखें बंद कर लीं।

फिर कब तक मैं बदहवास रहा, इसका बयान मैं नहीं कर सकता, लेकिन दुबारः जब मैं होश में आया तो मैने क्या देखा कि एक नकाबपोश औरत मेरे सिरहाने बैठी हुई मेरे सिर में कोई दवा मालिश कर रही है। यह देखकर मैने उससे यह पहला सवाल किया.—
"मैं कहां हूं?"

मेरे इस सवाल को सुनकर शायद उसे कुछ खुशी हासिल हुई होगी, क्योंकि उसने बड़ी हमदर्दी के साथ कहा,—"या रब! तू बड़ा कारसाज़ है।"

मैने ज़रा ठहर कर फिर उससे पूछा,—"मैं कहां हूं?"

यह सुन और मेरे कान के पास अपने मुहं को लाकर उसने बहुत ही धीरे से कहा,—"चुपचाप पड़े रहो; क्योंकि अभी तुम बहुतही कमज़ोर हो।"

मैने कहा,—"तुम कौन हो?"

उसने उसी तरह धीरे से कहा,—"चुप रहो, तुम अपने दोस्त के यहां हो!"

मैंने तड़प कर कहा,—" दोस्त ! ऐं ! इस बदकार दुनियां में क्या मेरा भी कोई दोस्त है ? नहीं हर्गिज़ नहीं। किसी ज़माने में मेरा भी एक दोस्त था, लेकिन अब वह भी न रहा। आह ! दिलाराम ! सिवा तेरे मेरा क्या और भी कोई दोस्त है ?"

ऐं, यह क्या ? इतना मैंने कहा ही था कि मेरे चेहरे पर एक बूंद पानी कहीं से टपक पड़ा, जिसे मैंने सिर उठा कर देखा और जांचा तो मुझे ऐसा जान पडा कि वह पानी की बूंद शायद उसी नक़ाबपोश के आंसू की थी। यह देखकर मैं बड़े शशपंज में पड़ा कि यह औरत कौन है जो मेरी इतनी ख़िदमत कर रही और मेरे लिये आंसू बहा रही है। लेकिन मेरी समझ में कुछ न आया। इतने ही में उस औरत ने उठकर ताक़ पर रक्खी हुई एक शीशी उतारी और उसमें से कई बूंदें मेरे मुंह में टपका दीं, जिनके पड़ते ही एक बेर तो मैं कांप गया, फिर थोड़ी देर में मुझे गहरी नींद आगई।

फिर नींद खुलने पर मैंने अपने तईं जांचकर देखा तो मुझे यह जान पड़ा कि पहिले के बनिस्बत अब मेरी तबियत कुछ सही है सर दर्द भी कम है और तमाम बदन में कुछ ताक़त भी मालूम देती है। यह जानकर मैं निहायत खुश हुआ और अपने मालिक का शुक्रिया अदा किया।

इसके बाद धीरे धीरे मैं उठकर खाट से नीचे उतरा और उसी कोठरी में, जिसमें मैं था, टहलने लगा। वह कोठरी १२ हाथ लम्बी, चौड़ी और क़रीब छः हाथ के ऊंची थी। उसमें सिर्फ़ एक ही दर्वाज़ा था, जोकि लकड़ी का था और बाहर से बन्द था। उसमें उजेला और हवा आने के लिये पूरी उंचाई पर हर चहार तरफ़ तीन २ मोखे बने हुए थे ! ग़रज़ यह कि यह कोठरी साफ़ थी और इसमें सिवाय मेरी चारपाई के अगर कुछ था तो पानी की सुराही, गिलास और कुछ दवाइयां।

उस वक्त मुझे शिद्दत की भूख लगी हुई थी, लेकिन वहां पर ऐसी कोई चीज़ मौजूद न थी, जिसे खाकर मैं दो घूंट पानी पीता।

लाचार मैं आकर चारपाई पर लेट गया और हर चहार तरफ़ अपने ख़याली घोड़े दौड़ाने लगा।

सोचते २ पिछली सब बातें मेरे ख़याल में आई और मैंने समझ लिया कि जिस शख़्स ने उस तालाब से निकालकर मेरी जान बचाई, वह और यह नकाबपोश औरत, जो अब मेरी ख़िदमत कर रही है, ये दोनों एक ही शख़्स हैं। ग़रज़ यह कि इन्हीं बातों पर ग़ौर करते करते मेरा सिर फिर चक्कर खाने लगा, इसलिये मैंने आंखें बन्द कर सोने का इरादा किया। लेकिन नींद न आई और देर तक मैं पड़ा पड़ा तरह तरह के ख्याली पुलाव पकाने लगा।

इतने ही में उस कोठरी के दर्वाज़े के खुलने की आहट मैंने पाई और सिर उठाकर देखा तो जान पड़ा कि हाथ में एक रकाबी लिए वही नकाबपोश औरत आरही है।

शायद, उसने भी मुझे सिर उठाकर देखते, देख लिया होगा, इसलिये हाथ की रकाबी एक ताक़ पर रख और मुस्कुराकर कहा,-'खुदाके फ़ज़लसे आज मैं तुमको बहुत अच्छी हालत में देख रही हूँ।'

यह सुनकर मैं उठकर पलंग पर बैठ गया और बोला,-"बेशक खुदा बंद करीम का मैं दिल से शुकुरगुज़ार हूं कि जिसने तुमको मेरी मदद के लिये भेजा।"

मैं यह बात कह आया हूं कि उस कोठरी में सिवा मेरी चारपाई के और कोई कुर्सी या मूढ़ा न था, इसलिये वह नकाबपोश औरत ज़मीन ही में बैठगई और बोली,—"कुछ भूख मालूम देती है?"

मैंने कहा,—"आज मैं घन्टों से मारे भूख के तड़प रहा हूँ।"

वह बोली,—"ख़ैर, तो, लो, हाज़िर है।"

यों कह कर वह उठी और ताक़ पर से रकाबी लाकर उसने मेरे सामने रख दिया और कहा,—"यह शोरुवा है और यह हलवा है, इनके खाने से बदन में बहुत जल्द ताक़त आवेगी।"

मतलब यह कि पहले तो चुपचाप मैंने खाना खाया, जिससे

तबीयत कुछ हरी होगई; फिर मैं उस नकाबपोश औरत से बातें करने लगा ! मैंने कहा,—" अब मैं उम्मीद करता हूं कि इस वक्त तुम मेरे चंद सवालों का सही सही जवाब दोगी।"

उसने कहा,—" तुम्हारे सवालों के जवाब देने में तो मुझे कोई उज्र नहीं है, लेकिन बात यह है कि अभी तुम इतने कमज़ोर हो कि थोड़ी देर तक बात चीत करने में ही तुम्हारा सिर चक्कर खाने लगेगा।"

मैंने कहा,—" बात तो ठीक है, लेकिन अब मेरा जी इस क़दर ऊब रहा है कि बग़ैर कुछ हाल जाने, मेरे दिल को तस्कीन नहीं होता।"

उसने कहा,—"ख़ैर तो, दो चार रोज़ और सब्र करो, इसके बाद मैं तुम्हारे कुल सवालों का जवाब, जो कुछकि मैं जानती होऊंगी, ज़रूर दूंगी ; और इस वक्त मैं यहां ज़ियादह देर तक ठहर भी नहीं सकती।"

यों कहकर वह उठी और ताक़ पर से एक शीशी उतार और उसमें के अर्क़ की कई बूंदें एक गिलास पानी में डाल कर उसने मुझे पिलादी और इधर उधर की बातें करनी शुरू कीं। कुछही देर में मैं सोगया और फिर मुझे कुछ भी ख़बर न रही कि क्या हुआ।

दसवां बयान।

मेरी आंखें जब खुलीं, सबेरा होगया था; क्योंकि आखें मलतेही मेरी नज़र अपने सामनेवाली दीवार में बने हुए रौशनदान पर पड़ी, जिससे सुबह की सफ़ेदी मेरी कोठरी में आरही थी। मैं उठकर अपने खुदा की याद में मशगूल हुआ। कुछ देरके बाद जब मैंने खुदा की इबादत से फ़ुर्सत पाई और उजाला भी कुछ ज़ियादह हुआ तो मैं उस कोठरी को देख एक दम से ताज्जुब के दर्या में डूब गया।

अल्लाह! यह, वह कोठरी न थी, जिसमें उस तालाब से निकालकर वह नकाबपोश औरत मुझे लेआई थी और बड़ी मुहब्बत के साथ मेरी ख़िदमत करती थो, बल्कि यह दूसरीही कोठरी थी, जो एक अजीब कैफ़ियत की थी। वह दस बारह हाथ के क़रीब लंबी, उतनी ही चौड़ी और आठ हाथ ऊंची थी, और ज़मीन से पांच हाथ की उंचाई पर एक तरफ़ तीन रौशनदान बने थे, जिनमें से होकर रौशनी और हवा आती थी! वह पक्की गच की हुई थी और उसके चारों तरफ़ की दीवारों पर तरह तरह की तस्वीरें लिखी हुई थीं। कोठरी के बीचोंबीच मेरा पलंग बिछा हुआ था, जिसपर उम्दः बिछावन बिछा था। इसके अलावे उस कोठरी में एक और भी अजीब चीज़ थी, वह यह कि उस कोठरी के हर चहार तरफ़, ज़मीन में, दीवार से सटकर, चार क़दआदम हबशी खड़े थे, जिनके हाथों की नंगी तल्वारें ज़मीन की ओर झुकी हुई थीं।

लिखने में तो देर भी हुई, लेकिन बात की बात में पलंग पर बैठे ही बैठे मैंने ये सारी कैफ़ियतें देख लीं, जिनके देखने से दहशत, ताज्जुब, और दिलचस्पी, ये तीनों बातें एक साथ मेरे दिल में कबड्डी मारने लगीं। मैंने दिल ही दिल में कहा कि,—"अय यूसुफ़! दिलाराम के फ़िराक में तू कहां २ मारा २ फिर रहा है और तेरी बदक़िस्मती तुझे कैसे कैसे कूएं झंका रही है। अभी तो इतना ही है, लेकिन देखना, आगे और क्या क्या तमाशे दिखलाई देते हैं।

इन्हीं बातों पर ग़ौर करते करते मैं अच्छी तरह उन हबशियों

की ओर देखने लगा, लेकिन वे ज्यों के त्यों अपनी २ जगह पर जमे रहे और ज़रा भी न हिले। यह देखकर मैंने उनमें से एक की ओर देखकर कहा,—" क्यों भई ! यहां पर मैं क्यों लाया गया हूं ? "

लेकिन मेरी बात का उसने कुछ भी जवाब न दिया, तब मैंने दूसरे से पूछा,—" भई, तुम्हीं बतलाओ, यह जगह कौनसी है ? "

मगर वह भी ख़ामोश रहा। यह देखकर मुझे ताज्जुब हुआ कि ये कम्बख़्त गूंगे बहरे हैं क्या ? ग़रज़ यह है कि इसी तरह मैंने पारी २ से तीसरे और चौथे से सवाल किये, पर वे दोनों भी ज़रा न मिनके। तब तो मुझे यह शक हुआ कि क्या यह जानदार नहीं, सिर्फ़ बेजान खिलौने हैं ?

यह ख़याल पैदा होते ही मैं पलंग से उतर पड़ा और उनमें से एक की तरफ़ बढ़ा। मैं उससे ३ हाथ की दूरी पर था कि उसने अपने दोनों हाथों की तल्वारें तानीं। यह देखकर मैं पीछे हटा, तो मेरे हटते ही उसके हाथों की तल्वारें वैसी ही झुक गईं, जैसी पहले थीं।

मतलब यह कि पारी २ से मैं उन चारों पुतलों की ओर गया पर जब मैं उनके क़रीब, यानी ३ हाथ की दूरी पर पहुंचता, तब वे अपने दोनों हाथों की तल्वारें, तानते, लेकिन ज्योंही मैं पीछे हटता, उनके हाथ फिर नीचे की तरफ़ झुक जाते थे। इसी तरह मैंने घन्टों तक यह खिलवाड़ किया, जिससे मुझे इस बात का पूरा यक़ीन हो गया कि दरअसल ये बेजान पुतले हैं और ऐसी हिकमत से बनाए गए हैं कि अगर अनजान आदमी उसके नज़दीक जाय तो उनके हाथों की तल्वारें ज़रूर ही उसके दो टुकड़े कर डालें। लेकिन ये कौन सी हिकमत से बनाए गए हैं, इसका हाल मैं नहीं जान सका।

बात यह कि जब देरतक हेराफेरी करने पर भी मैंने कोई तरकीब उनके हाथों से तल्वारों के निकाल लेने की न देखी, तब खड़े २ अपने जी में यह सोचने लगा कि क्या दीवार से सट कर अगर मैं चलूं तो उन पुतलों के पास तक पहुंच सकता हूं ? यह सोचकर मैं दीवार से सट कर धीरे धीरे उनमें से एक पुतले की ओर बढ़ने लगा। यहां तक

कि मैं तीन हाथ की दूरी पर जाकर ठहर गया, पर उसने पहिले की भांति अब की अपने हाथ न उठाए। तब तो मैं दो एक क़दम और आगे बढ़ा, पर वह ज्यों का त्यों खड़ा रहा। फिर तो मैं डरते डरते धीरे धीरे, एक एक क़दम आगे बढ़ने लगा। यहां तक कि उसके बिल्कुल बराबर पहुंच गया, लेकिन उसने हाथ न उठाया, यह देख कर मैं निहायत खुश हुआ और उसकी मुठ्ठी में से, आसानी से मैंने दोनों तल्वारें निकाल लीं।

इसी तरह पारी पारी से उन तीनों पुतलों की भी तल्वारें मैंने निकाल लीं और आठों तल्वारों को उसी पलंग के नीचे रख दिया। इसके बाद जब मैं फिर सामने की ओर से उन पुतलों में से एक की ओर बढ़ा तो उसने बदस्तूर फिर अपने दोनों हाथ ऊंचे किए, लेकिन इस मर्तबः मैं बेख़ौफ़ उसके पास चला गया और जाकर उसके सिर पर एक चपत जमाई।

चपत लगाने से मुझे ऐसा जान पड़ा कि उसके सिर पर कोई मेख ठुंकी हुई है। यह जान कर मैंने उसे इधर उधर घुमाना चाहा तो एक ओर को वह पेच घूमा। तब तो मैं बराबर उसे घुमाता गया। यहां तक कि जब वह पेच पूरी तरह से बाहर निकल आया तो पुतले का पेट आलमारी के पल्ले की भांति खुल गया और मैंने देखा कि उसके पेट के भीतर भी वैसा ही एक पेच है। मैंने उसे भी एक ओर को घुमाना शुरू किया और जब वह अपनी पूरी घुमाई पर जाकर रुक गया तो एक हलकी आवाज़ के साथ उसके तीन हाथ की दूरी पर का एक गज़ भर का चौखूंटा पत्थर पल्ले की तरह ज़मीन के अन्दर झूल गया।

इस अजीब तमाशे को देख कर मैं हैरान हो गया कि या खुदा! तूने मुझे अजीब भूलभुलैयां में ला फंसाया, लेकिन यह ख़याल होते ही मैंने अपने गालों पर तमाचे जमाए और सोचा कि इसमें खुदा का क्या क़सूर है! यह तो मैं अपनी बेवक़ूफ़ी का नतीजा पा रहा हूं।

ख़ैर, मैंने झांककर देखा तो वह एक सुरंग नज़र आई, जिसमें

उतरने के लिये सीढ़ियां बनी हुई थीं, लेकिन अंधेरा था। आख़िरश, मैं डरते डरते उसमें उतर गया और दस डंडे सीढ़ियों के तय करनेपर जब मैं बराबर की ज़मीन में पहुंचा तो वह एक छोटी और अंधेरी कोठरी के अलावे और कुछ न जान पड़ी। मैंने धीरे २ चल फिर कर उसके हर तरफ़ दरावाज़े का पता लगाया, लेकिन उस अंधेरी कोठरी में किसी जानिब भी मुझे कोई दरवाज़े का निशान न मिला। लाचार, मैं ऊपर लौट आया और जिस तरह से मैंने उस पुतले के दोनों पेच खोले थे, उसी तरह फिर कस दिए, जिससे वह सुरंग वाला पत्थर भी बराबर होगया। लेकिन तल्वार मैंने फिर उस पुतले के हाथ में न दी।

उसी तरह मैंने पारी पारी से उन तीनों पुतलों के पेच भी खोले, जिनसे तीन वैसी ही सुरंगें और कोठरियां पैदा हुई, लेकिन नतीजा कुछ भी न निकला और मैं थक कर पलंग पर आबैठा। उस वक्त उस कोठरी में एक अजीब क़िस्म की मस्ती पैदा करने वाली खुशबू आरही थी, जिससे मस्त होकर मैं झूमने लगा और कुछ ही देर में पलंग पर गिर कर बेहोश होगया।
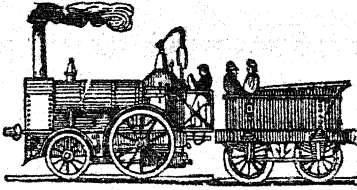
ग्यारहवाँ बयान।

कुछ देर के बाद जब मैं होश में आया तो क्या देखता हूं कि अब वह खुशबू, जिसकी मस्ती से मैं बेहोश होगया था, कोठरी में न थी, बल्कि उसकी जगह पर दूसरी ही क़िस्म की खुशबू भरी हुई थी, जिससे मेरे दिल की कली खिल गई और मैं दो एक अँगड़ाई ले कर पलंग पर उठ कर बैठ गया। बैठते ही मैने जो चारों तरफ़ नज़र घुमाई तो मैं क्या देखता हूं कि उन चारों पुतलों के हाथों में आठों तल्वारें मौजूद हैं, एक तरफ़ एक तिपाई पर गरमागरम खाना, सुराही गिलास और शराब की बोतल रक्खी हुई है और मेरे सिरहाने के तकिए के पास एक लपेटा हुआ काग़ज़ रक्खा हुआ है।

यह सब देख कर पहिले मैंने उस काग़ज़ को उठा लिया और खोल कर पढ़ा। उसमें यह बात लिखी हुई थी,—

"यूसुफ़!

"तुम घबराओ, नहीं। जब तक तुम्हारी बदक़िस्मती के दिन पूरे नहीं होते, तब तक तुम इसी जगह रहो। तनहाई की हालत और क़ैदख़ाने की तकलीफ़ से बेशक तुम्हारी तबीयत बहुत घबराती होगी, लेकिन क़िस्मत के खेल में किसी का चारा नहीं चलता।

"इन पुतलों में से सिर्फ़ एक पुतले की तरफ़ तुम जाना, क्योंकि तुम्हारे काम की चीज़ वही है। बाक़ी के तीनों पुतलों की ओर कभी भूल कर भी न जाना, वरना तुम्हारे जान की ख़ैर नहीं। आज तुमने बड़ी दिलेरी, बड़ी बेवक़ूफ़ी और जल्दबाज़ी काम किया कि इन पुतलों को तुमने छेड़ा। मौत के मुंह में तो तुम आज पड़ ही चुके थे, लेकिन खुदा के फ़ज़्ल से बच गए।

"तुम इस परचे से पूरब, पच्छिम, उत्तर और दक्खिन का हाल जानोगे। जिस तरफ़ तुम्हारा सिरहाना है, वह पूरब है। बस इतने ही से तुम पच्छिम, दक्खिन, और उत्तर का हाल जान लोगे। इससे मतलब मेरा सिर्फ़ यही है कि तुम पूरब तरफ़ वाले पुतले से ताल्लुक़

रखने वाली सुरंग में जाना। सीढ़ी से उतरते ही दाहिने हाथ की तरफ़ ज़मीन में एक मोमबत्ती और दीयासलाई मिलैगी। उससे तुम रौशनी कर लेना और सीढ़ी के सामने की दीवार में जो ख़रगोश का चेहरा बना हुआ है, उसकी गर्दन को तीन बेर घुमाना, जिसका नतीजा यह होगा कि वहाँकी दीवार का एक पत्थर हट जायगा और तुमको एक और कोठरी में जाने की राह मिल जायगी। उस कोठरी में हम्माम है, वहाँ पर तुम अपनी ज़रूरत की कुल चीज़ें पाओगे और मामूली कामों से फ़रागत हो सकोगे।

"यह बड़ी खुशी की बात हुई कि तुमने इन सुरंगों में जाने के तरीक़े खुद ब खुद जान लिये, इस वास्ते अब ज़ियादह लिखने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन फिर भी अख़ीर में तुम्हें चिता दिया जाता है कि और सुरंगों में जाने का कभी भूल कर भी क़स्द न करना। मुझे मुनासिब था कि मैंने पहिले ही से तुम्हें आगाह कर दिया होता, लेकिन ख़ैर फिर भी मेरी मुस्तैदी काम आई और तुमको उन तीनों सुरंगों में जाने पर भी बड़े भारी ख़तरे से बचा लिया, जिसकी तुम्हें कुछ भी ख़बर नहीं है।

"ठीक वक्त पर तुम्हें खाना पहुंचता रहेगा, लेकिन जब तक तुम्हारी बदक़िस्मती के दिन न बीतेंगे, तुम किसी शख़्स की सूरत न देख सकोगे, लेकिन इससे तुम घबराना नहीं। अगर किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो हम्माम में क़लम, दावात और काग़ज़ भी मौजूद है, लिख कर वहीं उस परचे को डालदेना तो तुम्हारी ज़रूरत रफ़ा होजायगी।

राक़िम, तुम्हारा मददगार"

मैंने इस ख़त को तीन चार मर्तबः ख़ूब ग़ौर से पढ़ा, जिससे मेरी तबीयत तो कुछ ठिकाने हुई, लेकिन फिर भी तरद्दुद ने मेरा साथ न छोड़ा और मैं तरह तरह के ख़यालों में उलझ गया।

क़िस्सह कोताह, मैं उस ख़त के लिखे मुताबिक़ सुरंग खोल कर हम्माम में गया और मामूली कामों से फ़ारिग हो और गुसल करके

अपनी कोठरी में लौट आया, और पुतले के हाथों में तल्वारें देदीं। फिर मैने खाना खाया और पलंग पर पड़कर देर तक आराम किया।

जब मेरी आखें खुलीं तो मैने क्या देखा कि रात होगई है, एक ओर शमादान जलरही है, और गरमागरम खाना भी रक्खा हुआ है। लेकिन मुझे भूख न थी, क्योंकि दिन के वक्त बहुत ही लज़ीज़ खाना भरपेट मैने खा लिया था। और क्या देखा कि सिरहाने की तरफ़ तीन चार क़िस्से वग़ैरह की किताबें रक्खी हुई हैं और एक परचा भी उनके साथ है, जिसमें सिर्फ़ यही लिखा हुआ है कि,—"यह तुम्हारे दिलबहलाव के लिये हैं।"

यह तो मैं चाहता ही था कि कोई किताब मिल जाती तो मेरी तनहाई की हालत में कुछ आराम देती, पस, मैने शमादान को पलंग के पास एक तिपाई पर रख लिया और उन किताबों में से 'बहार दानिश' नामी किताब पढ़ने लगा।
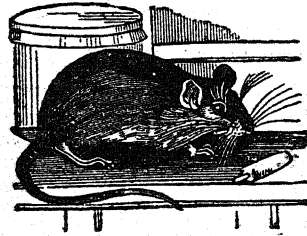
बारहवां बयान।

योंही दो हफ्ते मुझे उस अजीब कोठरी में बिताने पड़े, जिसमें उन चारों बेजान पुतलों और किताबों के अलावे मेरा कोई साथी न था और न मैंने इतने दिनों में किसी की सूरत ही देखी थी। गो, मुझे इस क़ैदख़ाने में किसी किस्म की तकलीफ़ न थी और उम्दः से उम्दः खाना बराबर पहुंचता रहता था, लेकिन नाज़रीन ग़ौर कर सकते हैं कि कौन इन्सान ऐसा है. जो ऐसी ज़िन्दगी से ऊब न जाय और अपने तईं आप मार डालने का इरादा न करे! लेकिन मैंने यह सब कुछ न किया और पाक परवरदिगार पर भरोसा रख कर अपना दिन काटना शुरू किया। गो, मैंने ऐसा इरादा कई मर्तबः किया कि इन पुतलों के हाथों में से एक तलवार लेकर अपना काम तमाम कर डालूं, लेकिन इस इरादे को मैंने मुतलक़ छोड़ दिया और अपने दिल ही दिल में कहा कि अय यूसुफ़! अब तो तू लगातार मुसीबतों को झेलते २ इसका आदी हो ही गया है, बस, क्यों न तू चुपचाप इस गर्दिश के दिनों को योहीं बिताता चल और यह भी देखता चल कि क़िस्मत तुझे कैसे कैसे तमाशे दिखलाती है। मुमकिन है कि या तो तू एक न एक दिन इस गर्दिश के चकाबू से साफ़ ही बच जायगा, या तेरी ज़िन्दगी का ख़ातमा योंहीं हो जायगा।

बस, जब मैं किताब के पढ़ने से फ़ुर्सत पाता और पलंग पर पड़ रहता, तब देर तक इसी तरह की बातें सोचा करता। होते होते मुझे इन बातों पर ग़ौर करने से दिलचस्पी हासिल होने लगी और मैं इसे भी ज़िन्दगी का एक लुत्फ़ समझ कर अपना दिन काटने लगा।

लेकिन मज़ा तो यह था कि हज़ारहां कोशिशें करने पर भी मैं उस शख़्स को न पकड़ सका, जो मुझे ठीक वक्त पर खाना पहुंचाया करता था। क्योंकि जिन दो क़िस्मों की खुशबू का बयान मैं ऊपर कर आया हूं, उनके सबब से मैं कुछ देर के लिये बेहोश हो जाता और फिर जब होश में आता, गरमागरम खाने को मौजूद पाता था। यह सिलसिला बराबर जारी था और मैं हैरान था कि या खुदा! यह 'शाही महलसरा'

क्या सारी 'अजायबुल्मख़लूक़ात' का ज़खीरा है?

नाज़रीन यह जान चुके हैं कि हम्माम में दावात, क़लम और काग़ज़ मौजूद थे और मेरे गुमनाम व पोशीद: मददगार का यह हुक्म भी था कि अगर मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो मैं बज़रिये ख़त के उसे आगाह करूं! लेकिन अब तक मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं पड़ी थी कि जिसके वास्ते मैं उस रंगीले मददगार को किसी क़िस्म की तकलीफ़ दूं, लेकिन अब मैंने यह सोचा कि यों चुपचाप ज़िन्दगी बसर करने के बनिस्बत यह कहीं बेहतर होगा कि मैं उसके साथ ख़त किताबत शुरू कर दूं और इस तरीक़े से वह लुत्फ़ उठाऊं, जो कि ख़त के ज़रिये हासिल हो सकता है। यह सोचकर दूसरे दिन जब मैं गुसल करने के वास्ते हम्माम में गया तो मैंने अपने उस अजीब मददगार के नाम इस मज़बून का एक ख़त लिखा।

"प्यारे, मेहरबान!

"गो, अभी तक मैं तुम्हारी सूरत शकल या नाम से आगाह नहीं हूं, और न यही जानता हूं कि तुम कौन हो और किस ग़रज़ से तुमने मुझे इस आराम के साथ यहां पर क़ैद किया है, लेकिन इतना मैं ज़रूर जानता हूं और मुझे अपनी इस जानकारी पर भरोसा है कि मैं अभी तक 'शाहीमहलसरा' की अजीब वो ग़रीब भूलभुलैयां से बाहर नहीं होने पाया हूं।

"मैं जहां तक ख़याल करता हूं, तुमको औरत ही समझ रहा हूं, मर्द नहीं; क्यों कि मर्दों में इतनी हमदर्दी कहां, जितनी कि तुम मुझ बदबख़्त पर ज़ाहिर कर रहे हो!

"अगर मेरा ख़याल सही है और तुम वाक़ई औरत ही हो, तो वह कौनसा सबब है, जिससे तुमने मुझे यहां पर रोक रक्खा है और अपना दीदार दिखलाना ग़ैर मुनासिब समझा है! क्या तुमने मुझे कोई खिलौना समझा है कि जिसके साथ यों खिलवाड़ कर रही हो, या तुम्हारा ईरादा कुछ और ही है, जिसके ज़ाहिर करने में शायद तुमको इतनी शर्म आती है, कि नक़ाब में अपना चेहरा छिपाकर भी

तुम मेरे सामने नहीं आतीं ! भई, तुमने तो शर्म को भी अपनी शर्म के आगे शर्मिन्दा कर दिया और उस नई दुलहिन की हया को भी बेहया बना दिया, जो अपने दूल्हे के पास पहिले पहिल, बहुत ही धीरे धीरे नकाब से मुंह छिपाकर जाती है !

"लेकिन, ख़ैर, यह तो बतलाओ कि तुम इतना हिजाब कब तक करोगी और वह कौनसी सायत होगी, जब मुझे तुम्हारा दीदार नसीब होगा। आख़िर, कभी तो ऐसा दिन ज़रूर आवेगा कि तुम मुझसे किसी न किसी सूरत में ज़रूर मिलोगी ! अगर ऐसाही, जैसा कि मैं सोच रहा हूं, तुम्हारा इरादा हो, तो फिर अब देर करने की क्या ज़रूरत है ! बस, झटपट चली आओ और जो कुछ चाहो, मुझसे अपनी ख़िदमत करालो ! मुझे तुम्हारे हुक्म में कभी कोई उज्र न होगा, और मैं वही काम करूंगा, जो तुम्हारी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ न होगा। अब मैं उम्मीद करता हूं कि तुम मेरे लिखने पर ग़ौर करोगी और बहुत जल्द मुझे अपना रुख़सार दिखलाओगी।

"मेरी इस शोख़ी को लिखावट को पढ़कर शायद तुम मुझसे इस क़िस्म की लिखावट का सबब पूछोगी, लेकिन तुम्हारे उस सवाल के पेश्तर क्या मैं तुमसे यह सवाल करना बेहतर नहीं समझता कि, जानेमनसलामत ! तुम्हारी शोख़ी वो नख़रे के आगे मेरी शोख़ी निरी पोच वो नाचीज़ है।

"इरादा तो मेरा यही था कि इस ख़त को और बढ़ाकर लिखूं लेकिन नहीं, पहिले ख़त में ज़ियादह तूल की ज़रूरत मैने न समझी और बहुतसी बातों को दूसरे ख़त के लिये छोड़ दिया।

"मैं उम्मीद करता हूं कि अब तुम शरारत को छोड़ और इन्सानियत को जगह देकर ज़रूर मुझसे मिलोगी, और अगर मिलने में अभी तुमको किसी क़िस्म की रुकावट होगी तो जवाब देने में कोताही कभी न करोगी।

तुम्हारा कोई बदबख़्त।"

ग़रज़ यह कि उस मज़मून के ख़त को लिखकर मैं वहीं पर क़लम-

दान में छोड़ आया और अपनी कोठरी में वापस आकर किताब देखने लगा यह बात मैंने सोच ली थी कि उस हम्माम में पहुंचने के लिये कोई पोशीदा रास्ता और भी ज़रूर होगा, जिस राह से मेरा मददगार वहां पहुंचेगा और अगर वह चाहेगा तो मुझे कल वहीं पर अपने ख़त का जवाब मिल जायगा। लेकिन बात कुछ और ही हुई, यानी वही मस्ती और बेहोशी पैदा करनेवाली खुशबू मेरी कोठरी में फैलने लगी ! मैंने हज़ार कोशिशें कीं और नाक में बखूबी लत्ते ठूंसे, लेकिन सब बेफ़ायदे हुआ और मैं थोड़ी देर के लिये बेहोश होगया। फिर जब मैं होश में आया, उस वक्त बदस्तूर दूसरे क़िस्म की खुशबू कोठरी में भरी हुई थी और ताज़ा वो गरमागरम खाना मौजूद था। मैंने शौक से खाने की रकाबी को लाकर पलंग पर रख लिया और ज्योंही उसका ढकना उठाया, मेरी नज़र उसमें रक्खे हुए एक ख़त पर पड़ी। यह देखकर मैंने उसे बड़े शौक़ से उठालिया और खाने के पेश्तर पहिले उसे पढ़लेना मुनासिब समझा। वह ख़त लिफ़ाफ़े के अन्दर बंद था और मुश्क की बू से इस क़दर बसा हुआ था कि मेरा दिल फड़क उठा और मैंने लिफ़ाफ़े को तोड़कर उसे पढ़ना शुरू किया। उसका मज़मून यही था,—

"जानेमनसलामत !

"मुझे यह जानकर निहायत खुशी हासिल हुई कि भला बाद मुद्दत के आपने मुझे याद तो किया ! मैं तो खुद चाहती थी कि हुज़ूर की ख़िदमत में चंद सतरें लिखकर पेश करूं; लेकिन ज़हेनसीब कि आपने बहुत जल्द मेरी ख़बर ली।

"आपका यह सोचना बहुतही सही है कि आप बिल्फ़ेल 'शाही-महलसरा' के अन्दरही हैं और आपसे मुंह छिपाकर आपकी मदद करने वाली एक नाचीज़ औरत ही है !

"अब रहा सिर्फ़ आपके इन दो सवालों का हल करना कि आप कब तक इस मुसीबत में मुबतिला रहेंगे और मैं कब आपकी क़दम-बोसी हासिल करूंगी ! इन सवालों के जवाब में मुख्तसर तौर पर मैं

अभी सिर्फ़ इतनाही लिखना मुनासिब समझती हूं कि अभी कुछ दिन आप और इसी जगह रहेंगे और बांदी जहां तक होसकेगा, बहुत जल्द आपकी ख़िदमत में हाज़िर होगी, लेकिन ज़रा सब्र कीजिये।

"मैं समझती हूँ कि अब आपकी सब बातों का जवाब हो गया। रहा सिर्फ़ मज़ाक का जवाब, उसका जवाब मैं खुद मिलकर आपको दूंगी, तब आपको बखूबी मालूम हो जायगा कि नए दुलहे के साथ दुल्हिन के हिजाब से मेरे हिजाब में कहां तक तफ़ावतहै।

"अख़ीर में इतना और लिखकर मैं इस ख़त को ख़तम करती हूं कि इसे पढ़कर सिर्फ़ चाक ही न कर डालियेगा, बल्कि जला कर इसका नामोनिशान भी मिटा दीजियेगा।

आपकी ख़ादिम एक नाचीज़।"

अल्लाह आलम! इस नाज़, नख़रे, प्यार, मुहब्बत, और हमदर्दी से भरे हुए ख़त को पढ़कर मेरी अजीब हालत होगई और मैं दिलही दिल में यह सोचने लगा कि या खुदा! यह क्या मुआमला है! यह औरत कौन है और किस ग़रज़ से यह छिपी छिपी मेरे साथ इतनी मुहब्बत कर रही है! क्या यह भी 'शाही महलसरा' की कोई ऐयाश औरत है, जो अपने दामे मुहब्बत में मुझे गिरफ्तार कर के मनमाना नाच नचाना चाहती है! और क्या यह भी उसी क़िस्म की औरत है, या उन्हीं में से कोई एक है, जो मुझसे दिलाराम की मुहब्बत छुड़ाया चाहती थी!

क़िस्सह कोताह, मैं इसी उधेड बुन में देर तक लगा रहा, लेकिन कोई बात दिल में जमी नहीं। अख़ीर में मैने उस ख़त को यह समझ कर न जलाया और अपने पास छिपा रक्खा कि शायद वक्त पर इस से कुछ काम निकले। बाद इसके मैने खाना खाया और कुछ देर आराम कर के किताब देखने लगा।

तेरहवां बयान ।

मैंने जी में अपने, एक दिन यह सोचा कि किसी क़िस्म की बेहोशी की दवा से मुझे बेहोश करके तब वह रंगीली औरत यहां खाना रखने आती है; तो अगर मैं उस बेहोशी की दवा का असर अपने ऊपर न होने दूं तो मुमकिन है कि उसे मैं पकड़ सकूं और यह जान सकूं कि यह औरत कौन है और किस इरादे से यह मुझे यहां पर यों अटकाए हुए है; लेकिन यह क्योंकर मुमकिन हो कि मैं उस बेहोशी की दवा के असर से अपने तईं बचा सकूं ?

सोचते २ मैंने यह तर्कीब निकाली कि या तो कम से कम आधे घन्टे तक सांस रोकने का मुहाविरा किया जाय, या किसी तरह उन ताक़ों में से किसी तक अपने तईं पहुंचाया जाय, जिनमें से होकर हवा और उजाला आता है।

लेकिन सांस रोकने का मुहाविरा तो बहुत दिनोंमें, बड़ी मुश्किल से होगा, लेकिन उस ताक़ तक पहुंचना उतना मुश्किल नहीं है। हम्माम में कई तिपाइयां मैंने देखी थीं; सो उन्हें मैं एक एक करके अपनी कोठरी में उठा लाया और एक मोटी रस्सी भी, जो वहां पर थी, लेआया। फिर मैंने एक तिपाई पर दूसरी, उसपर तीसरी, योंही सिलसिलेवार कई तिपाइयां इकट्ठी कीं, और उनपर चढ़कर ख़ुदा के फ़ज़्ल से मैं ताक़ तक पहुंच गया। ताक़ में लोहे के छड़ लगे हुए थे उनमें से एक छड़ में मैंने वही रस्सी बांध दी और उसे ज़मीन तक लटकादी। इसे मैंने इसी लिये लटकाया था कि जिससे आसानी से मैं नीचे कूद सकूं।

अलग़रज़, इतना कर चुकने पर मैं ऊपर ताक़ के पास बैठ गया और उस औरतका रास्ता देखने लगा, जो खाना लेकर आया करती थी उस ताक़ से मैंने झांक कर, दूसरी तरफ़ क्या है, यह बात जाननी चाही, लेकिन मैं यह न जान सका, क्योंकि उस ताक़ की बनावट इस क़िस्म की थी कि उजाला और हवा तो उस रास्ते से आती थी, लेकिन यह पता नहीं लगता था कि, उसके बाहर क्या है, और मज़-

बूत छड़ों के लगे रहने के सबब उस राह से बाहर निकलना भी मुश्किल था। अलावे इसके, वह ताक़ इतना तंग भी था कि इनसान बड़ी मुश्किल से उसके बाहर अपना सिर निकाल सकता था।

गरज़ यह कि मैं ताक़ के पास इस गरज़ से बैठा रहा कि ताज़ी हवा के सबब मुझपर बेहोशी का असर हर्गिज़ न होगा और ज्योंही वह चालाक औरत यहां आई कि चट मैं रस्सी के सहारे नीचे कूदकर उसे गिरफ़ार कर लूंगा। लेकिन बड़ा मज़ा हुआ! उस दिन सुबह से बैठे बैठे शाम होगई, पर खाना लेकर कोई न आया और मारे भूख के मैं बेचैन होगया। आख़िर झखमार कर मैं नीचे उतरा और पलंग पर बैठगया मुझे पलंग पर आकर बैठे देर न हुई थी कि वह बेहोश करने वाली मस्ती से भरी हुई ख़ुशबू कोठरी में फैलने लगी और बात की बात में मैं बेहोश हो गया।

थोड़ी देर बाद जब मैं होश में आया तो क्या देखता हूं कि कोठरी में रोशनी होरही है और तिपाई के ऊपर खाना रक्खा हुआ है। मैं चट उठकर रकाबी उठा लाया और ज्योंही उसका ढकना खोला, मेरी निगाह एक ख़त पर पड़ी। मैंने चट पट उसे उठा कर पढ़ा तो उसमें चंद सतरें इस मज़मून की लिखी हुई थीं,—

"हज़रत!

"आपकी कार्रवाइयों से मैं अनजान नहीं हूं। भला यह कैसी बेवकूफ़ी है कि आज दिनभर तुम भूखे रहे! अगर उस वक्त मैं तुम पर बेहोशी का असर डालती कि जिस वक्त तुम ताक़ के पास बैठे हुए थे, तो उसका क्या नतीजा होता! यही कि तुम बेहोश हो कर वहां से लुढ़क जाते और नीचे गिरकर अपने हाथ पैर तुड़ा बैठते। तुम्हारा यह ख़याल, कि ताक़ के पास रहने पर ताज़ी हवा सांस लेने को मिलेगी, जिससे बेहोशी का असर मुझपर न होगा, बिल्कुल ग़लत है। यहां तक कि तुम घंटों सांस रोक कर भी इस बेहोशी की दवा के असर से अपने तईं नहीं बचा सकते। पस, आइन्दे ऐसी बे सिर पैर की कार्रवाई करके न तो खुद तकलीफ़ उठाना और न मुझे परेशान करना, क्योंकि इसका नतीजा कुछ भी न निकलेगा। इस

लिये तुम मेरा कहना मानो और कुछ दिनों तक ख़ामोश होकर मेरे कहे मुताबिक़ इसी जगह आराम से रहो। मैं तुम्हें यक़ीन दिलाती हूं कि कि मुझसे तुम्हारी बुराई कभी न होगी, क्योंकि मैं तहेदिल से तुम्हारी भलाई चाहने वाली हूं।

सिर्फ़ तुम्हारी ही, वही—"

मैं इस ख़त को पढ़ कर बहुत ही चकराया और दिलही दिल में अपनी कार्रवाई पर निहायत शर्मिन्दा हुआ कि एक औरत मुझे किस तरह मनमाना नाच नचा रही है! लेकिन सिवाय चुप रहने के और चारा क्या था!

योहीं दो तीन दिन बीतने पर मैंने एक नई चाल चली, यानी उसी बेमालूम औरत को मैंने इस मज़मून का ख़त लिखा कि,—"लो साहब! मेरी आख़िरी सलाम लो! क्योंकि मैं इस तनहाई की तक-लीफ़ से ऊब गया हूं इसलिये उन कोठरियों में जाकर, जिनमें जाने के लिये तुमने मना किया है, अपनी जान देदेता हूं।"

इसका जवाब उस नाज़नी ने बड़े मज़े का दिया। उसने लिखा कि,—'दोस्तमन! यह तुमने बहुतही अच्छा किया कि अपने इरादे को ख़बर मुझे पहिले ही देदी। ख़ैर, शौक से तुम उन कोठरियों में जाओ, क्योंकि वहां के ख़तरे मैंने दूर कर दिए!"

चौदहवां बयान।

ऊपर जिस ख़त का हाल मैं दे आया हूं, उसके दूसरे दिन बड़े तड़के उठकर मैंने अपने सिरहाने एक परचा पाया और उसे उठाकर पढ़ा तो उसमें इस मज़मून की चंद सतरें लिखी हुई थीं।

"दोस्तमनसलामत! आज शाम के वक्त मैं तुमसे मिलूंगी और एक अजीब तमाशा तुमको दिखलाऊंगी, ताकि तुम्हारा दिल शाद हो और तुमको कुछ तसल्ली हो। मैं उम्मीद करती हूं कि उस वक्त मैं तुम्हें बिल्कुल तैयार पाऊंगी।

आह! इस परचे को पढ़ कर मैं निहायत खुश हुआ और उस परी से मिलने के लिये उसी वक्त तैयार होगया, लेकिन उसने शाम को मिलने के लिये लिखा था। सवेरे मैं उस दिन खुशी २ हम्माम में गया। वहां पर सभी चीज़ें मौजूद थीं; सो मैंने आईने के सामने खड़े होकर अपने घूंघरवाले बाल सवांरे। गो, मुझे अभीतक मूछ डाढ़ी नहीं निकली थी, लेकिन फिर भी मैंने अपनी डाढ़ी पर उस्तुरा फेरा और नहा धोकर अपनी कोठरी में वापस आया। उस वक्त वहां पर मेरे लिये खाना मौजूद था। आज मैंने बड़ी खुशी के साथ उस लज़ीज़ खाने को खाया और किताब देखने में मशगूल हुआ, ताकि दिन जल्दी बीत जाय, लेकिन आज का दिन ऐसा पहाड़ सा होकर आया था कि किसी तरह कटता ही न था। अख़ीर में मैंने घबराकर किताब रखदी और सोने की ठहराई, लेकिन कंबख्त नींद भी न आई लाचार किसी २ तरह करवटें बदल २ कर मैंने दिन बिताया और उस अपनी मददगार परी का रास्ता तकने लगा।

इतने ही में वही मस्ती और बेहोशी पैदा करनेवाली खुशबू उस कोठरी में फैलने लगी, जिसने मुझे थोड़ी ही देर में बेहोश करदिया और जब मेरी आंखें खुलीं और मैं होश में आया तो मैंने अपने तईं एक सजे सजाए और उमदः कमरे में गुदगुदी मख़मली पलंग पर लेटे हुए पाया।

यह देख हक्का बक्का सा हो मैं आंख मलमल कर चारों ओर देखने लगा, क्योंकि वहां पर मोमी शमादान जल रहा था, इतने ही में मैंने एक निहायत ही हसीन, नाज़ुकबदन और नौजवान नाज़नी को अपनी तरफ़ आते देखा। उसे देखते ही मैं तेज़ी के साथ उठकर खड़ा होगया और चाहता था कि कुछ कहूं, पर उसने अपने ओठों पर उंगली रखकर मुझे चुप रहने का इशारा किया और मेरे पास आकर धीरे से कान में कहा,—

"ख़बरदार, मुंह से चूं भी न करना और जो कुछ मैं करूं, उसे बग़ैर लब हिलाए देखते रहना। यों कहकर और मेरा हाथ पकड़कर वह मुझे उसी कमरे के बग़लवाली एक कोठरी में लेगई। वह कोठरी भी सजी हुई थी और वहां पर लटकी हुई घड़ी में मैंने देखा कि सात बज कर कई मिनट बीत चुके थे।

क़िस्सह कोताह, वहां लेजाकर उसने मुझे एक कुर्सी पर बैठा, मेरे लंबे बालों में खुशबूदार तेल डालकर चोटी गुही और चेहरे पर किसी क़िस्म का रौग़न लगाकर कोई सूखे रंग की बुकनी धीरे धीरे मली। इसके बाद उसने मुझे घेरदार लालरंग के रेशमी पायजामे को पहिराकर उसके घेरे को उठाकर आगे इज़ारबंद की जगह पर खोंस दिया। फिर नक़ली छाती लगाकर उसने मुझे ज़रदोज़ी काम की स्याह साटन की कुरती पहराई और इसके बाद बादले के काम की बहुतही बारीक सूफ़ियानी और धानी रंगकी ओढ़नी सिरसे उढ़ादी। इसके बाद मेरी कमर पर ज़री की पेटी कसी गई, क़रीने से ज़ेवरात पहिराए गए और हाथ में सोने की डंडी का जड़ाऊ एक मोरछल दिया गया।

नाज़रीन! वह रंगीली औरत जबतक अपनी मनमानी यह कार्रवाई करती रही, तबतक मैं सन्नाटा मारे हुए चुपचाप था, इसके बाद जब उसने मुझे अपने साथ चलने का इशारा किया तो मैंने धीरे से कहा,—

"अय हज़रत! मुझे ख़ासी नाज़नी बनाकर तुम कहां लेचलीं?"

यह सुनकर उसने बहुतही धीरे से मेरे कान में कहा,—"चुपचाप

मेरे साथ चले आओ।"

इतना कह कर वह आगे हुई और मैं उसके पीछे पीछे चला। यहां पर इतना कह देना मैं मुनासिब समझता हूं कि वह रंगीली औरत भी वैसी ही आरास्ता थी, जैसा कि उसने मुझे सवांरा था और उसके हाथ में भी एक वैसा ही मोरछल था।

मतलब यह कि वह औरत मुझे अपने हमराह लिए हुई उस कोठरी से निकल कर उस कमरे में आई, जिसमें पलंग पर मैंने अपने को होश हवास में पाया था। वहां आकर उसने एक आलमारी खोलकर अतर निकाला। आप मला और मुझे भी लगाया, फिर एक ख़ंजर मेरे कमरबंद में खोंस और दूसरा आप लगा, आलमारी बंद करके मुझे साथ लिए हुई उस कमरे से बाहर हुई। बाहर आकर उसने कमरे में ताला बंद कर दिया और मुझे साथ लेकर एक अंधेरी कोठरी में पहुंची। वहां पहुंच कर उसने उस कोठरी का दरवाज़ा भी बंद कर दिया और मेरा हाथ पकड़े हुई सीढ़ियां उतरने लगी। अंदाज़न बीस सीढ़ियों को तय करके वह जब बराबर की ज़मीन में पहुंची, तब उसने दियासलाई रगड़ कर रौशनी की।

उस वक्त मैंने उस परीपैकर के साथ अपने तईं एक मामूली कोठरी में पाया। वहां पर वह मेरी ओर देख कर हंसी और कहने लगी,—"क्यों हज़रत ! आपने अपने मज़ाक़ का जवाब भरपूर पाया या नहीं ! क्या आपने ऐसी भी नई दुल्हिन कहीं देखी है, जो अपने मनचले दूल्हे को इस तरह बात की बात में मर्द से औरत बना डाले !"

यह कह कर वह खिलखिला पड़ी और मैं भी हंस पड़ा, लेकिन मैं दिलही दिल में निहायत शर्मिन्दा हुआ और सोचने लगा कि यह तबीयतदार रंगीली औरत कौन है, जिसने मेरे साथ ऐसी बेढब दिल्लगी की। लेकिन, उस वक्त इन बातों पर ग़ौर करने का मौक़ा न मिला, क्योंकि उस औरत ने फ़ौरन ही यह कहा,—

"जनाबमन ! मैं तुमसे यह वादा कर चुकी हूं कि आज तुम्हें

कोई अजीब तमाशा दिखलाऊंगी; सो पहिला तमाशा तो यही दिखलाया कि तुम्हें ख़ासो नाज़नी बना डाला।"

मैंने कहा,—"हां ऐसा तो तुम करही गुज़रीं,—यानी तुमने मुझे अपनी लच्छेदार बातों में उल्लू बना कर मर्द से ख़ासी औरत बना डाली।"

उसने कहा,—"ख़ैर, यह तो सिर्फ़ तुम्हारे मज़ाक़ का जवाब मैंने दिया, और जिस तमाशे को मैं तुम्हें दिखलाना चाहती हूं, वह बादशाह सलामत के रूबरू होगा।"

मैंने घबरा कर पूछा,—"क्या, नसीरुद्दीन हैदर के दरबार में?"

उसने कहा,—"हां वहीं पर! पस, मैं तुमको वहां ले चलती हूं"

यह सुन कर मैं एक दम घबरा गया और बोलउठा,—"अल्लाह! यह तुम कह क्या रही हो! तुम मुझे बादशाह के दरबार में ले चलोगी?"

उसने कहा,—"हां! और इसमें हर्ज ही क्या है! अब तो तुम ख़ासी औरत बन रहे हो!"

मैंने कहा,—"लेकिन अगर बादशाह ने मुझे पहचान लिया, तो!"

यह सुन कर उसने एक क़दआदम आईने के ऊपर का परदा हटा दिया और मुझे उसके रूबरू लेजा कर खड़ा कर दिया और यों कहा,—"लो, अब तुम पहिले खुद तो अपने को पहचान लो, तब बादशाह के पहचानने की दहशत करना।"

दरहक़ीक़त, बहुत कुछ ग़ौर करने पर भी मैं अपने तईं आप न पहचान सका और उस रंगीली नाज़नी ने मुझे ऐसी खूबसूरत औरत बनाया था कि मैं अपने हुस्न पर आप दीवाना होगया। ग़रज़ यह कि मैंने जोश में आकर उस औरत से कहा,—"अल्लाह! आलम! तुम तो अजीब औरत हो!"

उसने कहा,—"अल्लाह, यह नाज़! इतना सितम न ढाहो!"

मैंने कहा,—"अजी हज़रत! जब कि आपके बनाए हुए, अपने

इस नक़ली हुस्न पर मैं ही दीवाना हुआ जाता हूं; तो, काश, अगर बादशाह की बद नज़र मुझ पर पड़ गई और उसने मुझ पर हाथ चलाया तो मैं क्या करूगी ?"

मेरी इस बात को सुनकर वह औरत खिलखिला कर हंस पड़ी और बोली,—"उस वक्त तुम उनकी बग़ल गरम करना।"

मैने कहा,—"अल्लाह ! यह नखरे रहने दो और सच कहो कि इस वक्त तुम मुझे कहां लेजाया चाहती हो !"

उसने कहा,—"घबराओ मत, तुम्हें बादशाह के दरबार में ले चलती हूँ। हम आठ नौ मोरछल-वालियों के झुन्ड में, तुम मेरी बग़ल में रहना। हम सब बादशाह के पीछे रहेंगी और वे पीछे फिरकर कभी न देखेंगे। अगर देख भी लेंगे और तुम पर उनका दिल भी आजायगा तो वहां पर वे तुम से कुछ भी छेड़छाड़ न करेंगे। बस, सिर्फ़ इतना ही कह देंगे कि,—"आज शब को तू मेरे ख्वाबगाह म आ।" उस वक्त हज़रत शराब के नशे में बदहवास रहेंगे, पस, तुम्हारे एवज़ में मैं जाकर उनकी बग़ल गरम करूंगी।"

मैने कहा,—"ख़ैर, यह तो हुआ, लेकिन तुम बतलाती हो कि तुम्हारे साथ और भी कई मोरछल-वालियां रहेंगी, पस अगर उनमें से किसीने मुझे पहचाना या मेरे साथ कुछ छेड़छाड़ की तो क्या होगा।

उसने कहा,—"सुनो, वहां पर किसी की भी इतनी मजाल नहीं है कि कोई लब हिला सके। इसके अलावे मोरछल-वालियां महल में सैकड़ों हैं और उन सबों की अफ़सर मैं ही हूँ। इसलिये इस बात का मुझे पूरा अख्तियार है कि जिस दिन जिन्हें चाहूं, चुनकर अपने साथ ले जाऊं; इसमें कोई टोकटाक नहीं सकतीं।"

मैंने कहा,—"तुम अजीब औरत हो ! लेकिन ख़ैर, यह तो बतलाओ कि अगर बादशाह के किसी दरबारी की नज़र ने मेरे नक़ली साज सामान को ताड़ लिया तो क्या होगा ?"

उसने कहा,—"अजी साहब ! तुम्हारा किधर ख्याल है ! इतनी

बड़ी किसकी मजाल है कि जो बादशाह की चहेती मोरछल-वालियों की ओर नज़र उठाकर देख सके। मतलब यह है कि तुम बिलकुल बेख़ौफ़ रहो और चलकर ज़रा शाही दरबार के लुत्फ़ को तो देखो! यह लज़्ज़त यहां से जाने पर फिर तुम्हें कभी नसीब न होगी। अगर तुम बादशाही दरबार में आले दरजे के नौकर हो जाओगे तब भी कभी ख्वाब में भी तुम बादशाही ख़ास जलसे में हर्गिज़ शरीक नहीं किए जाओगे।"

क़िस्सह कोताह वह नाज़नी मुझे अपने हमराह लिए हुई उस कोठरी के दर्वाज़े को खोलकर एक खुली छत पर निकली और वहां से ज़ीना उतर कर एक बड़े लम्बे चौड़े आंगन में पहुंची जो बिलकुल अंधेरा था और उसे पार करके एक बहुत ही लम्बे चौड़े दूसरे आंगन में पहुंची, जिसके चारों ओर बराबर बड़ी २ कोठरियां बनी हुई थीं, जिनमें बादशाह की मोरछल-वाली चहेतियां रहती थीं। सो आंगन में खड़ी होकर उसने एक आवाज़ लगाई,—"कौन २ मोरछल-वाली तैयार है?"

यह सुनते ही चारों ओर से टीड़ीदल की भांति सैकड़ों नाज़नियां आंगन में निकल आईं, जिनमें से पांच नाज़नियों को चुनकर मेरी साथिन ज़ीने के रास्ते से ऊपर चढ़ गई और वहांसे कई कोठे, अटारी और छतों को तय करती हुई एक आलीशान और सजे हुए कमरे में जाकर ठहर गई। इस कमरे में बराबर आमने सामने पांच २ दर बने हुए थे, जिनमें बहुत ही नफ़ीस और बेशक़ीमत हाथी दांत की चिकें पड़ी हुई थीं। यह कमरा बादशाह के आराम करने और सोने का था बस इसी से समझ लेना चाहिये कि इसकी सजावट किस आला दरजे की रही होगी! अल्लाह! मैं तो इस कमरे की सजावट को देख हैरान हो गया और जी में सोचने लगा कि अगर बहिश्त कोई चीज़ है तो वह इससे बहतर कभी न होगा।

उस कमरे के बाहर जो दूसरा बड़ा आलीशान कमरा था, वह बादशाह का ख़ास कमरा था। उसकी सजावट का भी कोई ठिकाना न था। जिस कमरे में कई औरतों के साथ मैं भी औरत की लिबास

में था उस कमरे के बाहर बड़े कमरे में एक बहुत उम्दा और बेश-क़ीमती तख्त बिछा हुआ था और उसके आगे एक संगमर्मर का गोल मेज़ था। उसके तीन ओर कई कुर्सियां रक्खी हुई थीं।

इन सब चीज़ों के देखने में मुझे बहुत ही कम वक्त लगा, क्योंकि बड़े कमरे में कई अंगरेज़ों के साथ बादशाह सलामत आगए। उस वक्त वे भी अंगरेज़ी लिबास में थे। सो आते ही उन्होंने अपनी अंग्रेज़ी टोपी उतार कर मेज़पर रखदी और तख्त पर आ बैठे। उन के बैठने के साथ ही चिकें हटाकर हम सब बाहर गए और तख्त के पीछे मोरछल लेकर क़तार बांधे खड़े हो गये।

फिर बादशाह के इशारा करने पर वे अंग्रेज़ भी अपनी अपनी टोपियां उतार कर कुर्सियों पर बैठ गए और ख़वासों ने लाकर मेज़ पर तरह तरह के खाने चुन दिए।

मैं उन मोरछल-वालियों के साथ, उन्हीं की तरह मोरछल लिए हुए आगे क़दम रखता और हाथ हिलाते हुए पीछे हट आता था। एक घंटे के बाद जब बादशाह अंगरेज़ों के साथ खाना खा चुके, तब शराब चली और इसके बाद मेज़ साफ़ करके उस पर गुलदस्ते, पानदान और इलाइची वग़ैरह की तश्तरियां चुन दीगईं। शराब और प्याले भी लाकर रक्खे गए।

फिर कई तवायफ़ें हाज़िर की गईं और उनका नाचना गाना शुरू हुआ। बीच बीच में शराब जारी थी और सबसे ज़ियादह प्याले बादशाह सलामत ही ख़ाली करते थे।

योहीं यह मजमा आधी रात तक रहा और जब बादशाह नशे से बदहवास होकर तख्त पर लेट गए तो गाना बजाना मौकूफ़ हुआ, रंडियां अपने भडुवों के साथ रुख़सत कर दीगईं और अंगरेज़ भी बची बचाई शराब की बोतलें अपने पाकेट में रख कर रफूचक्कर हुए।

इसके बाद उन्हीं मोरछल-वालियों ने मिलकर बादशाह को उठाया और सभी ने अपने अपने नाज़ुक बदनों का सहारा देकर बादशाह को चिक के अंदर दूसरे कमरे में लाकर पलंग पर लिटा दिया

इस के बाद सब मोरछल-वालियां भी रुख़सत हुईं और मेरी साथिन मुझे लिए हुई घूमती फिरती उसी कोठरी में आई, जिस में उसने मुझे मर्द से औरत बनाया था।

वहां आकर उसने मुझे फिर से मर्द बनाया और एक इतर इस क़िस्म का सुंघाया कि जिस के सूंघते ही मैं बेहोश हो गया और दूसरे दिन जब मेरी आंखें खुलीं तो मैंने अपने तईं उसी पुतलो वाली कोठरी में पाया।

अल्लाह! यह कैफ़ियत देखकर मेरी अक़्ल हैरान होगई और मैं अपने जी में यही समझने लगा कि जो कुछ मैंने देखा, ख़्वाब के अलावे और कुछ न था, क्योंकि उसके बाद फिर कई दिनों तक मेरी मुलाक़ात उस अजीब औरत से नहीं हुई थी।
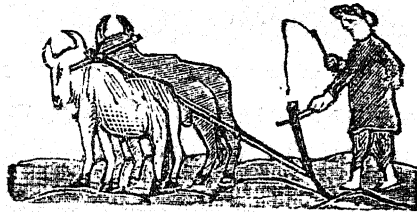
पन्द्रहवां बयान।

एक रोज़ बड़े तड़के जब मेरी नींद खुली, मैंने अपनी चारपाई के बग़ल में एक तिपाई पर अपनी उस मददगार नाज़नी को बैठी हुई पाया, जो मुझे औरत बनाकर बादशाही ख़ास दरबार में लेगई थी उसे देखतेही मैं जल्दी से उठ बैठा और मिज़ाजपुर्सी के बाद बोला,—

"आज अलस्सुबह यह चांद का टुकड़ा किधर से निकल पड़ा?"

उसने मुस्कुराहट के साथ कहा,—"क्या इसकी तुम्हें मुतलक़ ख़बर नहीं है? ख़ैर, तुम्हारा यह चांद आज तुम्हें फिर छैलछबीली बनाकर ईद मनाएगा!"

मैंने कहा,—"मआज़ अल्लाह! क्या आज तुम फिर वैसीही दिल्लगी मेरे साथ करोगी?,,

वह बोली "हां, आज फिर तुम्हें शाही मजलिस की कैफ़ियत दिखलाऊंगी। वहां आज कठपुतलियों का नाच होगा और बड़ा लुत्फ़ नज़र आएगा।"

मैंने कहा,—"लेकिन मैं ऐसे लुत्फ़ से बाज़ आया, जिस में हर लहज़ः जान का ख़तरा बना रहता है।"

यह सुनकर वह ज़रा मुस्कुराई और कहने लगी,—"भई, तुम तो निरे बोदे हो! आह तुम को मेरी दिलेरी देखकर भी शर्म नहीं आती! अजी हज़रत अगर जान जाने की भी बारी आएगी तो पहिले मैं ही पूछी जाऊंगी क्योंकि शाही महलसरा की कुल मोरछल-वालियों की अफ़सर मैं ही हूं।"

मैं,—"लेकिन तुम्हें जान बूझकर ऐसी बला में अपने तईं फसाने से क्या फ़ायदा है?"

वह,—"यही कि तुम्हें औरत बनाऊं और ज़िन्दगी का लुत्फ़ हासिल करूं।"

मैं,—"अगर तुम्हें इसी से दिलचस्पी होती है तो मुझे यहीं औरत बनाकर अपने सीने से लगा लो!"

वह,—"लाहौलबलाकुवत! अजी, मियां! सीने से तो तुमको दिलाराम लगाएगी, भला मेरी ऐसी क़िस्मत कहां कि तुम्हें गले से लगाऊं?"

मैं,—"ख़ैर तो अब तुम्हारा इरादा क्या है?"

वह,—"यही कि आज मैं उसी तरह तुम्हें फिर शाही दरबार में ले चलूंगी। तुम सब बातों से तैयार रहना, मैं शाम होते ही यहां आऊंगी?"

मैं,—"ख़ैर, जैसी तुम्हारी मर्ज़ी। लेकिन यह तो बतलाओ कि बादशाह के दरबार में उस दिन पांच चार अंगरेज़ों के अलावे और कोई न था, इसका क्या सबब है?"

वह कहने लगी,—"बादशाह नसीरुद्दीन हैदर अँगरेज़ों की बड़ी क़द्र करता है, यही सबब है कि उसके ख़ास जलसे में सिवाय अंगरेजों के कोई भी हिन्दुस्तानी शरीक नहीं हो सकता। इसी ग़रज़ से मैं तुम्हें वहां ले जाया चाहती हूं कि भला जब तक तुम शाही महलसरा के अन्दर हो, ये लुत्फ़ भी तो उठालो।"

मैंने जलदी से कहा,—"आख़िर, मैं कब तक इस बला में फ़ंसा रहूंगा?"

वह बोली,—"थोड़े दिन और सब्र करो।"

मैंने जब देखा कि यह जवाब उसने कुछ मुंह बनाकर दिया तो मैंने वह ज़िक्र छोड़कर दूसरी छेड़ दी; कहा,—"क्या, वे अंगरेज़, जिनकी इतनी क़द्र बादशाह करता है, बहुत आला दरजे के हैं!"

वह बोली,—"वे सब महज़ मामूली शख़्स हैं। यहां तक कि जो यहां के रेज़ीडेन्ट, यानी बड़े साहब हैं, और जिनके हाथ में अवध की पांच लाख रिआया की क़िस्मत की बागडोर है, वे विलायत के एक महज़ मामूली और अदने अंगरेज़ हैं!"

मैंने कहा,—"हां मैंने उन्हें देखा है, उनके बांए गाल पर किसी क़िस्म की चोट का निशान है।"

वह बोली,—"हां, ठीक है। ख़ैर; सुनो; अब मैं उन पांचों अंगरेज़ों का कुछ थोड़ासा हाल तुम्हें सुनाती हूं, जो कि उस रोज़ दरबार में मौजूद थे। बादशाह के सामने, यानी मेज़ के दूसरे सिरे पर, दाहिनी ओर जो साहब बैठे थे, वे बादशाह के मास्टर हैं। उन्हें पचीस हज़ार सालाना मुशाहरा दिया जाता है, लेकिन बादशाह शायद ही कभी उनसे कुछ अंगरेज़ी पढ़ते हों।"

मैंने कहा,—"क्या वेही मास्टर हैं, जिनकी नाक पर बाईं ओर झुकता हुआ एक मस्सा है?"

वह बोली,—"हां वेही मास्टर हैं। उनके बग़ल में जो बंदरमुहां साहब बैठा था, वह शाही कुतुबख़ाने का दारोग़ा यानी अफ़सर है। उसकी बग़ल में तीसरा अंगरेज़ जो था वह जर्मनी का रहने वाला एक मुसव्विर और गवैया है; लेकिन यूसुफ़! तुमसे बिहतर मुसव्विर वह हर्गिज़ नहीं है और गवैया तो ऐसा है कि अगर उसका गाना सुने तो सिर पर चढ़ा हुआ भूत भाग जाय।"

मैं अपनी मुसव्वरी की तारीफ़ उस परीपैकर से सुन कर दिलही दिल में निहायत ख़ुश हुआ और बोला,—"ख़ैर, अब उन चौथे और पांचवें साहबों की सिफ़त भी बयान करो।

वह कहने लगी,—"चौथा बादशाह के बौडीगार्डों का अफ़सर और पांचवां कंजी आंखों वाला एक हज्जाम है।

मैंने कहा,—हां, उस हज्जाम की बहुतेरी सिफ़तें मैं सुन चुका हूं। वह पहिले हज्जाम का पेशा करता था, फिर एक जहाज़ का ख़लासी हुआ। उसके बाद वह सौदागर बनकर लखनऊ आया और अपनी ख़ुशक़िस्मती के बाइस बादशाह की नाक का बाल बन बैठा।"

वह बोली,—ख़ुदा की अजब शान है कि जो एक दिन जहाज़ का ख़लासी था, उसके आगे आज दिन अवध के बड़े २ सर्दारों के सिर झुकते हैं। सच पूछो तो बादशाही का मज़ा वह कंबख़्त हज्जाम ही लूटता और बादशाह को भी वह इस क़दर लूटता है कि अगर उसे एक

बड़ा भारी लुटेरा कहा जाय तो बेजा न होगा।"

मैने कहा,—"वह बड़ा शैतान है, क्योंकि उस रोज़ मैने देखा कि वह बादशाह की नज़र बचा कर मोरछल-वालियों को तकता था। मेरी जानिब भी उसकी नज़र कई मर्तबः आई थी। इसीसे मैं इस खिलवाड़ को पसन्द नहीं करता। क्योंकि अगर क़लई खुल गई तो मेरे साथ तुम्हारी भी जान मुफ्त में जायगी।"

यह सुन कर वह खिलखिला पड़ी और कहने लगी,—"अजी साहब! तुम्हरा किधर ख़याल है? यह मैं जानती हूं कि सिर्फ़ वह हज्जाम ही नहीं बल्कि सभी अंगरेज़ छिपी छिपी नज़रों से हम लोगों को तकते थे, लेकिन इस क़िस्म की ताक झांक से कुछ नहीं हो सकता क्योंकि जब तुमने ख़ुद अपने तईं आप न पहचाना और दूसरी मोर-छलवालियों ने भी तुम्हारे नक़ली भेष को न भांपा तो उन बंदरमुहों की क्या ताक़त है कि तुम्हारे नक़ली भेष को ताड़ सकें। पस जब तक तुम यहां हो, ज़िन्दगी का लुत्फ़ हासिल करो। अजी हज़रत! यह तो रात कामौक़ा है। अगर कभी दिन के वक्त कोई अनोखा जलसा हुआ तो मैं बड़े मजमे में भी तुम्हें ले चलूंगी और खुदा ने चाहा तो बेदाग़ बच कर ख़ुशी ख़ुशी लौट आऊंगी।"

ग़रज़ यह कि इसी क़िस्म की बातें देर तक होतीं रहीं; बाद इसके वह उठी और कहने लगी,—"लो दोस्त! अब मैं इस वक्त तुमसे रुख़सत होती हूं। इस बात का मुझे निहायत अफ़सोस है कि मैं तुम्हें बराबर रोज़ही बेहोश किया करती हूं और इस वक्त भी तुम्हें बेहोश करके तब यहांसे जाऊंगी।"

मैंने कहा,—"लेकिन, इतनी होशियारी का क्या सबब है?"

उसने कहा,—"सिर्फ़ यही कि जिसमें तुम किसी बला में न फंस जाओ।"

मैं,—यह क्यों कर?"

वह—"यों कि, अगर तुम मेरे आने जाने के रास्ते को देख लोगे

तो ज़रूर तुम भी कभी न कभी उधर की तरफ़ क़दम ज़रूर ही उठाओगे और ऐसा करने से तुम ऐसे ख़तरे में पड़ जाओगे कि जिसमें जान का जाना कोई मुश्किल नहीं है।

मैं,—" अच्छा, मैं बग़ैर तुह्मारी मर्ज़ी, उस जानिब को कभी क़दम न उठाऊंगा।"

वह, —" इस पर मैं क्यों कर यक़ीन करूं ?"

मैं,—" जिस तरह तुह्मारा दिल चाहे।"

वह,—" क्या तुम सच कहते हो ?"

मैं—" हां बल्कि कुरानशरीफ़ की क़सम खाकर कहता हूं कि तुह्मारे हुक्म बग़ैर मैं उस तरफ़ कभी न जाऊंगा, जिधर जाने के लिए तुम मना करोगी ! "

यह सुन कर वह उठी और मेरे पलंग के नीचे घुस गई। उसके घुसतेही एक खटके की आवाज़ मेरे कानों में सुनाई दी, जिसे सुन कर मैंने झांक कर देखा तो वहां पर कोई न था और ज़मीन बिलकुल बराबर थी। यह तमाशा देखकर मैं हैरान हो गया, लेकिन उससे मैंने कुरान की क़सम खाई थी, इसलिये मैंने पलंग के नीचे घुस कर इस बात की जांच करनी, कि वह क्यों कर वहां से ग़ायब होगई, मुनासिब न समझा।

बाद, मैं हम्माम में गया और वहांसे जब वापस आया, गरमागरम खाने को मौजूद पाया। मैं इस बात पर निहायत खुश था कि भला उस परीपैकर ने मेरा एतबार तो किया।

नाज़रीन ! आप सच जानें कि यह औरत निहायत हसीन और खुशमिज़ाज थी और मेरे अंदाज़ से इसकी उम्र पंद्रह सोलह साल से ज़ियादह न थी। अगर मैं दिलाराम को अपना दिल न दे दिए होता तो इस माज़नी को ज़रूर अपनी माशूका बनाता, लेकिन इतने पर भी अगर वह दिलाराम से डाह न करेगी तो इसे मैं ज़रूर अपनी दिलरुबा बनाऊंगा। अभी तक इसके साथ मेरा सिर्फ़ ज़बानी हंसी

दिल्लगी का रिश्ता है और इससे ज़ियादह की ख़्वाहिश मैने अभीतक कुछ भी इस पर ज़ाहिर नहीं की है। गो, यह नाज़नी भी मुझसे दिली मुहब्बत करती है, लेकिन अभी तक इसने भी किसी क़िस्म की ज़ियादती नहीं दिखलाई है।

क़िस्सह कोताह, मैं शाम होने से पेश्तरही अपने मामूली कामों से फ़ुर्सत पाकर पलंग पर लेटा हुआ कोई किताब देख रहा था और चाहता था कि कब वह नाज़नी आवे कि उसकी मीठी मीठी बातों की लज्ज़त उठाऊं। योंही जब अंधेरा हुआ और क़रीब एक घंटे के रात बीती होगी कि मेरे पलंग के नीचे से वैसीही खटके की आवाज़ आई और जब तक मैं उठूं, वही नाज़नी पलंग के नीचे से निकलकर मेरे सामने खड़ी होगई और उसने कोठरी में चिराग़ रौशन करके मुझसे कहा,—" तुम चलने के लिये बिल्कुल तैयार हो ? "

मैने कहा,—" मैं तो बहुत देर से बैठा हुआ तुह्मारी राह तक रहा हूं। "

वह बोली,—" तो बिहतर है। आओ, पेश्तर हम तुम मिलकर खाना खा लें, तब चलें, क्योंकि मुझे यह मालूम होगया है कि आज बादशाह सलामत नौबजे के पेश्तर अपने ख़ास जलसे में शरीक न होंगे। "

यह सुनकर मैं निहायत खुश हुआ और मैने हाथ बढ़ाकर उस नज़नी को भी अपने बग़लमें, पलंग पर बैठा लिया और बड़े शौकसे उसके साथ खाना खाया। आज बाद मुद्दत के, जबसे मैं इस शाहीमहलसरा के चकाबू में फंसा हूं, निहायत लुफ्त़ के साथ खाना खाया। खाने के वक्त तरह तरह की दिल्लगी, मज़ाक और बात चीत से वह नाज़नी मुझे हंसाती रही, तब मैने उसकी लियाक़त को समझा और जाना कि यह औरत वाक़ई इस क़ाबिल है कि बादशाह की सोहबत में रह सके। उसकी बातों से मैंने जाना कि यह खूबही पढ़ी लिखी, होशियार और तबियत-दार औरत है और यह इस क़ाबिल है कि नसीरुद्दीन जैसे ऐयाश और शौक़ीन बादशाह को अपने ताबे रख सके।

ग़रज़ यह कि जब हमलोग खाने से फ़ुर्सत पाचुके तो वह नाज़नी उठ खड़ी हुई और मेरे साथ पलंग के नीचे घुसी । नीचे जाकर वह मुझसे लिपटकर ज़मीन में पड़रही और बाद इसके उसने न जाने क्या हिकमत की कि हमदोनों ज़मीन के अन्दर, नीचे की ओर जाने लगे। कुछ दूर जाकर हमदोनो एक झटके के साथ नीचे गिरा दिए गए, पर चोट न लगी, क्योंकि किसी गुदगुदी चीज़ पर हमलोग गिराए गए थे। इसके बाद उस परी ने मुझे अपने सोने से अलग किया और अंधेरे ही में मेरा हाथ पकड़कर न जाने किधर की ओर वह मुझे ले चली।

फिर तो हम दोनो कई कोठरियों में घूमते, ऊपर नीचे उतरते चढ़ते, एक कोठरी में पहुंचे, वहां पहुंचकर उस नाज़नी ने उसी कमरे का ताला खोला, जिसका हाल मैं पहिले लिख आया हूं। फिर हमदोनों उस कमरे में गए, वहां पर रौशनी हो रही थी। वहांसे वह मुझे उसी कोठरी में लेगई, जहां कि उसने मुझे एक रोज़ औरत बनाया था और आज भी बनाया।

इसके बाद वह उसी तरह बन ठन कर और उसी तरह घूमती फिरती उन मोरछलवालियों के चौक में पहुंची और वहां से पांच मोरछलवालियों को अपने साथ लेकर उस कमरे में पहुंची, जिसके बाहरवाले कमरे में बादशाह का दरबार-ई-ख़ास था।

थोड़ी देर तक हम सब उसी कमरे में ठहरे रहे, क्योंकि तब तक बादशाह सलामत तशरीफ़ नहीं लाए थे, और नौ बजने में भी दस मिनट की देर थी। लेकिन ज्योंही घड़ी ने नौ बजाए, बादशाह सलामत अपने उन्हीं पांचो अंगरेज़ मुसाहिबों के साथ तशरीफ़ लाए और तख़्त पर बैठ गए। उनके बैठतेही गाछ का परदा हटाकर सब मोरछलवालियों के साथ में उनके तख़्त के पीछे जा खड़ा हुआ और बदस्तूर मोरछल झलने लगा।

अंगरेज़ सामने की कुर्सियों पर बैठ गए और गुलामों ने अंगरेज़ी ढंग के उम्दः खाने और मेवे और शराब की बोतलें लाकर क़रीने से मेज़ पर चुन दिए। खाना शुरु हुआ और जब सब कोई खा पी चुके

तो शराब और प्याले के अलावे कुल रकाबियां हटा दी गईं और मेज़ पर गुलदस्ते चुनदिए गए। इतने ही में उस हज्जाम अंगरेज़ने कहा-

"जहांपनाह, मैने जो हुजूर से उन कठपुतलियों के नाच की .खूबी बयान की थी!"

बादशाह ने शराब पीते पीते कहा,—"ओहो, मैं तो बिल्कुल भूलही गया था। अच्छा, तमाशेवालों को हाज़िर करो।"

"जो इर्शाद हुजूर—" यों कहकर वह हज्जाम उठकर बाहर चलागया और चंद मिनटों में वापिस आया।

इसके बाद कई तमाशेवाले हाज़िर हुए और बादशाह के तख़्त के बांई ओर क़रीब ही, वे हुक्म बमूजिब अपना ढकोसला फैला कर साज मिलाने लगे और इसके बाद साज के साथ वे कठपुतलियां, जो गिनती में आठ थीं और तार वो कमानी के सबब हर्कतें करती थीं नाचने लगीं। बादशाह सलामत इन बेजान पुतलियों के नाच और मटकने को देखकर निहायत .खुश होते और क़हक़हे लगाकर शराब पीते थे, उनके मुसाहब अंगरेज़ भी, ज़ियादहतर मियां हज्जामख़ां, हां में हां मिलाते जाते थे।

यह तमाशा सचमुच निहायत दिलचस्प था और मैं इसमें ऐसा ग़र्क हुआ कि अगर मेरी मिहर्बान नाज़नी मुझे चुटकी न भरती तो मैं उस वक्त न जाने क्या कर गुज़रता। गरज़ यह कि इस तमाशे पर बादशाह निहायत .खुश नज़र आते थे। होते होते उन्होंने क्या किया कि अपने जेब में से कैंची निकालकर उन पुतलियों में से एक का तार काट दिया। तार कटतेही वह बेचारी बेजान पुतली धम्म से ज़मीन में गिर गई और इस मामूली बात पर बादशाह के खुशामदी मुसाहबों ने ऐसा तअज्जुब ज़ाहिर किया कि गोया बादशाह ने कोई बड़ा भारी काम किया हो!

योंहीं धीरे धीरे जब सब पुतलियां कटकर गिर गईं, तब हज़रत ने उस तमाशे के ढांचे और पुतलियों में आग लागदी, जो बड़ी मुश्किल से बुझाई गई, लेकिन कमरे का मख़मली फ़र्श बेतरह जलकर

बर्बाद होगया। इसके बाद तमाशेवाले गहरा इनाम लेकर रुख़सत हुए और बादशाह सलामत अपने दरबारी अंगरेज़ों को रुख़सत करके तख़्त से नीचे उतरे। गो, हज़रत तख्त से नीचे उतरे, लेकिन नशे के सबब उनका पैर लड़खड़ाया तो उन्होंने बड़े ज़ोर से मेरा हाथ थाम्ह लिया और मेरे कन्धे का सहारा लेकर चलने लगे। उस वक्त मेरी मददगार नाज़नी ने बड़ा काम किया और चट वह बादशाह की दूसरी तरफ़ जा खड़ी हुई और उसने मेरे हाथ को बादशाह के हाथ से छुड़ाकर अपने हाथ में कर लिया। योहीं हम सभों ने सहारा देकर बादशाह को दूसरे कमरे में ले जाकर पलंग पर लिटा दिया। वहां पर बादशाह की कई चहेतियां पहिले ही से मौजूद थीं, इसलिये मेरी मददगार नाज़नी सब मोरछल-वालियों के साथ वहां से रफू-चक्कर हुई और उन सभों को उनके चौक में छोड़ मुझे लिए हुई पहिले अपने कमरे में आई, जहांपर भेस बदल कर मैं औरत से मर्द हुआ और इसके बाद वह उसी तरह मुझे मेरी कोठरी में लेआई। वहां आकर मैंने उसे अपने बग़ल में पलंग पर बैठा लिया और कहा,—"देखो, आज क़यामत बरपा हो चुकी थी। आह, जब बादशाह ने मेरी कलाई ज़ोर से पकड़ी, तब मेरी जान ही निकल चुकी थी।"

यह सुनकर उस नाज़नी ने एक क़हक़हा लगाया और कहा,—"अल्लाह! अगर तुम ऐसे नामर्द हो तो शाहीमहलसरा में किस हिम्मत से तशरीफ़ लाए!"

मैंने कहा,—"आज, बड़ा ग़ज़ब होचुका था।"

उसने कहा,—"लेकिन मैंने कैसी फुर्ती की और किस दिलेरी के साथ उनके हाथ को अपने हाथ में लेकर तुम्हारी छुट्टी करदी।"

मैंने कहा;—'हां, तुम्हारी इस दिलेरी की जितनी तारीफ़ की जाय, सब थोड़ी है; लेकिन यह खिलवाड़ तुमने बेढब खेला।"

गरज़, देर तक इसी क़िस्म की बातें होती रहीं, इसके बाद वह मुझसे रुख़सत होकर चली गई और मैं पलंग पर लेट गया।

सोलहवां बयान ।

इस बयान में मैं अपने शौकीन दोस्तों के दिल बहलाव के लिये एक ऐसा अजीब दास्तान लिखता हूं, जिसका कि ख़्वाब में भी किसी शख़्स ने कभी न देखा होगा।

एक रोज़ दोपहर के वक्त मैं खाना खाने के बाद किताब देखते देखते सो गया था। नींद खूब गहरी थी और मैं एक ख़्वाब देख रहा था। वह ख़्वाब किस क़िस्म का था, इसकी तो मुझे अब कुछ याद नहीं है, लेकिन इतना मुझे ज़रूर ख़याल है कि गोया दिलाराम मेरे पलंग पर आकर बैठी हो और धीरे धीरे मेरा पैर दाब रही हो !

देर तक मैं इसी ख़्वाब वो ख़याल में मुबतिला रहा। मुझे ऐसा जान पड़ा कि वाक़ई कोई धीरे धीरे मेरा पैर दाब रहा है; लेकिन तब तक मेरी नींद इतनी हलकी नहीं हुई थी कि मैं आंखें खोलूं और यह बात जान सकूं कि दरअसल मेरा पैर कौन दाब रहा है ! उस वक्त ख़्वाब मुझे बड़ा मज़ा दिखला रहा था। यानी यह बात तो मैं मुतलक़ भूल ही गया था कि मैं शाहीमहलसरा की एक पेचीदा कोठरी में क़ैद हूं और मेरी दिलाराम ग़ायब है; लेकिन यह ख़याल ख़ूब ज़ोर शोर से बंध रहा था कि गोया मैं अपने मकान में सोया हुआ हूं और दिलाराम मेरे पैर दाब रही है !

ग़रज़ यह कि देर तक यही सिलसिला रहा। अख़ीर में जब बिलकुल नींद का ज़ोर कम होगया तो मैंने करवट बदली और आंखें खोल कर यकबयक मैं बोल उठा कि,—"प्यारी, दिलाराम ! तू यहां कहां से आई !"

ज्योंहीं मैंने ये कलमे कहे कि एक क़हक़हे की मीठी आवाज़ मेरे कानों में गई और किसी ने मुझे झटका देकर कहा,—"अजी, हज़रत ! बराहे मेहरबानी आंखें मलकर तो देखो ! यहां तुम्हारी दिलाराम कहां है !"

वह,-"इसकी कोई ख़ास खुशी ज़रूर है, लेकिन वह अभी पोशीदा है, इसलिये बिल्फ़ेल मैं वह राज़ तुम पर ज़ाहिर नहीं कर सकती।"

मैंने समझा कि यह नाज़नी मुझपर यह हाल ज़ाहिर न करेगी; इसलिये मैंने वह ज़िक्र छोड़ दी और कहा,—"लेकिन, माहरू! तुम बड़ी दिलेरी का काम कर रही हो, जिसका नतीजा एक न एक दिन बहुत ही बुरा होगा।"

वह खैर; जब जैसा होगा, देखा जायगा, बिल्फ़ेल तो तुम मनमानी मौज करलो।"

मैं,—"जान पड़ता है कि तुम कोई बड़ी भारी ताक़त रखती हो; जिसकी कूवत से ऐसी दिलेरी और जान जोखिम के काम को महज़ खिलवाड़ समझ रही हो, वरन ऐसे तमाशे में तुम कभी क़दम न रखतीं।"

वह,—"ख़ैर, जो कुछ हो, लेकिन इतना तुम याद रक्खो कि मैं तुम्हारी दुश्मन नहीं, बल्कि दोस्त हूं और अगर कोई बद सायत आ भी गई तो पेश्तर मेरी जान जा लेगी, तब तुम्हारी तरफ़ कोई नज़र उठा सकेगा।"

मैंने कहा,—"ख़ैर, आज से मैं अपने तईं तुम्हारी मर्ज़ी पर छोड़ देता हूं और अब से कभी इस बारे में कोई कलमा न करूंगा।"

क़िस्सह कोताह, फिर वह नाज़नी उठकर उसी रास्ते से, जिसका बयान पहिले किया जाचुका है, चलीगई, और मैं गुसलखाने में गया।

सत्रहवां बयान।

आफ़ताब गुरूब हो चुका था और शाम की स्याही आस्मान पर धीरे २ फैलती जाती थी। गो, मैं एक कोठरी में था, लेकिन उसके ताक़ से आने वाले उजाले से इस बात का पता ज़रूर लगता था। मेरी कोठरी में खूब ही गहरा अंधेरा होगया था, इसलिये मैंने उठ कर चिराग जलाया और नमाज़ पढ़ने लगा।

ज्योंहीं मैंने नमाज़ से छुट्टी पाई थी कि वह नाज़नी आ पहुंची और मुझे अपने साथ लेकर उसी तर्कीब से अपनी उस कोठरी में पहुंची, जहां पर वह मुझे मर्द से छैलछबीली बनाती थी। आज मुझे उसने अपने ख़ातिरख़ाह फिर औरत बनाया, लेकिन आज की लिबास, पोशाक, ज़ेवर और बनाव में बड़ी तैयारी थी।

मुझे सवांर कर उस परी पैकर ने फ़िर अपने तईं आरास्ता किया और जब सज धज कर हम दोनों क़दआदम आईने के सामने खड़े हुए तो—अल्लाह! अपनी खूबसूरती और नमकीनी को देखकर मैं दंग होगया। यानी मेरी खूबसूरती और नज़ाकत उस नाज़नी की खूबसूरती और नज़ाकत से किसीदरजे में कम न थी।

आज उसने बहुत ही क़ीमती पेशवाज़ और ज़ेवर पहिने थे और मुझे भी पहिनाये थे, लेकिन उसकी सजावट से मेरी सजावट कुछ कम थी। इस का सबब यह था कि मुझे उसने वैसेही कपड़े गहने पहनाए थे, जैसे कि मोरछल वालियां पहिनती हैं और उसने वैसे भड़कीले कपड़े गहने पहिने थे, जैसे कि मोरछल वालियों की अफ़सर के लिये मुनासिब थे।

इसके बाद वह मुझे साथ लिये हुई कमरे से बाहर हुई और कमरे में ताला लगा कर किसी दूसरे रास्ते से चली। इस रास्ते से मेरा गुज़र कभी नहीं हुआ था। उस वक्त रात के आठ बज गए थे।

एक कोठरी में जाकर उसने एक लालटेन जलाई और मुझे साथ

लेकर रास्ता लिया। वह रास्ता तीन हाथ चौड़ा, क़दआदम ऊंचा और सुरंग की क़िस्म का था। दोसौ क़दम चलने के बाद वह ठहर गई और बोली,—"देखना, भई, खुदा के वास्ते कोई ऐसी हर्कत तुम न कर बैठना कि जिसके सबब से कोई भारी बला सिर पर आटूटे।"

मैंने कहा,—"तुम अगर बराबर मेरे साथ रहोगी तो मैं कभी न घबराऊंगा।"

वह बोली,—"मुमकिन है कि इस आलीशान जलसे में मुझे तुम्हारा साथ कुछ देर के लिये छोड़ना पड़े। काश, अगर मैं तुमसे जुदा होऊं तो तुम ज़रा न घबराना और दिलेरी के साथ अपने काम पर मुस्तैद रहना, और यक़ीन रखना कि मैं तुम्हारा खयाल हर्गिज़ न भूलूंगी और जलसा बर्खास्त होने के कुछ क़बल, या साथ ही, तुम्हारे पास फिर आ मौजूद होऊंगी।"

उसकी इस पेचीदा बातें सुन कर एक लहज़े के लिये मैं सन्नाटे में आगया, लेकिन तुरंत मैंने अपने दिल को मज़बूत किया और दिल ही दिल में यों कहा कि,—"यूसुफ़! तू ज़रा न घबरा, अगर खुदा को योंही मंजूर है और तेरी क़ज़ा आही गई है तो ज़रा सुलताना के महल और जलसे को तो देखले।"

मुझे खामोश देखकर उसने मेरा हाथ पकड़ लिया और कहा,—"क्यों दोस्त यूसुफ़! तुम चुप क्यों हो गये? क्या तुम्हारी हिम्मत और मर्दानगी ने बिलकुल तुम्हारा साथ छोड़ दिया?"

मैंने कहा,—"नहीं, माहेलका! मैं खुदा और अपनी क़िस्मत पर भरोसा रखकर हर तरह से तैयार हूं और तुम देखोगी कि इस जवांमर्द यूसुफ़ ने अपने काम को किस खूबसूरती के साथ अंजाम दिया।"

इतना सुनतेही उसने मेरे दोनों हाथों को अपने दोनों हाथों से पकड़ कर चूम लिया और कहा,—

"वाक़ई, दोस्तमन! इतने दिनों के बाद तुमने ऐसा कलमा कहा, जिसे मैं तुम्हारे मुह से सुनने के लिये तड़प रही थी। खैर,

अब दो एक बातों को और याद रक्खो और उसे हर्गिज़ न भूलो।"

मैने कहा,—" वह क्या ?"

उसने कहा गो ऐसा मौक़ा न आएगा, लेकिन अगर तुम्हारा नाम या रहने की जगह कोई पूछे तो तुम उस से सिर्फ़ इतना ही कहना कि,—" मेरा नाम रसीदन है और मैं एकसौ अड़तालीसवीं कोठरी में, जोकि बीबी गुलअन्दाम बेगम के कमरे के बग़ल में है, रहती हूं।" मैं समझती हूं कि इसकी ज़रूरत हर्गिज़ न पड़ेगी, लेकिन अगर कोई मौक़ा ऐसा आजाय तो तुम यही बयान करना।"

यह सुन कर मैं निहायत खुश हुआ और बोला, " तो क्या मैं इस वक्त हज़रत गुलअन्दाम बेगम के रूबरू खड़ा हूं ?"

उसने मुस्कुराकर कहा,—" नहीं, लेकिन उन बेगम साहिबा की मेहरबानी मुझ पर इस दरजे की रहती है कि उनका नाम और उनके बग़ल में अपने रहने का पता बतलाने पर फिर तुम से कोई कुछ न कहेगा और न फिर किसी क़िस्म का सवाल करेगा।"

मैने कहा,—" अच्छी बात है, मैं इन बातों पर खयाल रक्खूंगा और जो कुछ खेल क़िस्मत दिखलाएगी, उसे शौक से देखूंगा।"

आख़िर, फिर वह नाज़नी मुझे साथ लेकर एक कोठरी में गई और वहां से ज़ीने चढ़कर एक और कोठरी में निकली। उसका दरवाज़ा खोलकर जब वह मुझे लिए हुई एक बड़े आलीशान बाग़ में निकली तो यकबयक मेरी आंखें चौंधिया गईं क्योंकि उस आलीशान बाग़ में इस क़दर रौशनी हो रही थी कि रात के वक्त भी दिन का समा नज़र आता था। वह रौशनी इतनी ज़ियादह और साफ़ थी कि अगर ज़मीन में सूई गिर पड़े तो वह आसानी से उठा ली जा सके। मैं रात के सबब उस बाग़ का, जिस में मैने पहिले ही पहिल क़दम रक्खा था, अंदाज़ा नहीं कर सकता था कि वह कितना लंबा और चौड़ा है, लेकिन इतना मैं ज़रूर कहूंगा कि वह बाग़ कई सौ बीघे ज़मीन को घेरे हुए था।

उसके बीचों बीच, जो खब लंबा चौड़ा तालाब बना हुआ था,

अठारहवां बयान।

अलहम्द लिल्लाह ! कमरे के अन्दर पहुंचते ही मैंने समझा कि अब मैं बहिश्त की हूरों के मजमें में आगया। मोरछल मेरे हाथ में था ही, सो चट मैं मोरछल वालियों के, जो कि गिनती में सौ से ज़ियादह थीं, झुंड में मिल गया और बच बच कर, चारों तरफ़ नज़र दौड़ा २ कर वहां की कैफ़ियत देखने लगा।

पेश्तर मैं उस आलीशान कमरे का कुछ थोड़ासा बयान करता हूं, जो कि उस वक्त मेरी नज़रों में चकाचौंध पैदा कर रहा था। वह कमरा अंदाज़न चालीस पचास हाथ से कम लंबा चौड़ा न था। वह चौखूटा था और उसके हर चहार तरफ़ बारह बारह दरवाज़े बने हुए थे। दरवाज़ों के बीच की दीवारों के सहारे चारों तरफ़ बावन क़द्आदम आईने लगे थे और ऊपर की ओर उतनीही बड़ी बड़ी सौ तसवीरें लटक रही थीं। छत की कड़ियों में एक सौ नौ झाड़ लटक रहे थे और दरों में पँचशाखे फ़ानूस लगे हुए थे। कमरे में एक बालिश्त मोटा, दलदार मखमली क़ालीन बिछा हुआ था और एक जानिब को एक सोने का तख्त जिसमें जाबजा जवाहिरात जड़े हुए थे, बिछा हुआ था। उस पर मोतियों की झालरों का ज़रदोज़ी चंदोवा सोने की डंडियों के सहारे टंगा हुआ था और ज़रदोज़ी काम के मखमली गद्दी तकिए लगे हुए थे। तख्त के दाहिने बांए बीस २ सुनहरी कुर्सियां बिछी हुई थीं और पीछे इतनी बड़ी चौकी बिछी हुई थी, जिस पर सौ मोरछलवालियां मज़े में खड़ी हो सकें।

ग़रज़ यह कि वह कमरा इस क़द्र सजा हुआ था कि जिसका पूरा पूरा बयान करना मेरी ताक़त से बाहर है। उस वक्त वहां पर, जब कि मैं पहुंचा था, मोरछलवालियों और गाने बजाने-वालियों के अलावे और कोई न था।

कमरे में झाड़ों और फ़ानूसों में मोमबत्तियां जल रही थीं और साज मिलाया जा रहा था। मैं भी दीगर मोरछलवालियों के साथ

कमरे में टहलता घूमता ज़िन्दगी का मज़ा लूट रहा और बेगमसाहिबा के आने का इन्तज़ार कर रहा था।

ज्योंहीं घड़ियावान ने नौ बजाए, कमरे के बाहर बंदूकों की आवाज़ होने लगी और सब मोरछलवालियां वो गानेबजाने वालियां उठकर क़रीने से एक तरफ़ को खड़ी होगई, और यह बात मालूम हुई कि बेगमसाहिबा तशरीफ़ लाती हैं!

कुछ ही देर में कमरे के अन्दर बेगमसाहिबा ने क़दम रक्खा। उनकी सजावट और बनाव वो खूबसूरती का बयान मेरी ताक़त से बाहर है।

वह आतेही तख़्त पर बैठ गईं और उनके साथमें आई हुई कई सौ औरतों में चालीस तो अगल बग़ल की कुर्सियों पर बैठीं और बाक़ी क़रीने से फ़र्श पर बैठ गईं। गानेबजानेवालियां, जो गिनती में पचास से कम न होंगी, और जिनमें हरएक के हाथ में एक न एक बाजा था, तख़्त से बीस पचीस हाथ की दूरी पर खड़ी होकर गानेबजाने वो नाचने लगीं और मैं सबके साथ तख़्त के पीछे जा खड़ा हुआ।

मैंने उन हूरों के मजमे में चारों तरफ़ नज़र दौड़ा दौड़ा कर बहुत कुछ देखा, लेकिन उस अपनी मददगार नाज़नी को मैंने वहां पर न पाया। यह बात सुनकर शायद नाज़रीन मुझे झक्की समझेंगे और यह कहेंगे कि—'इतने हजूम में तू एक औरत की शिनाख़्त क्योंकर, कर सकता था!' लेकिन नहीं, मेरी आंखों की बीनाई ने उस मजमे की हरएक औरत को परख लिया था और उनमें मेरी मददगार हर्गिज़ न थी। अब तो गाने बजाने का बाज़ार गर्म हुआ और खूबसूरत औरतें नाचने वो गाने बजाने लगीं।

उन्नीसवां बयान।

एक घंटे तक यही सिलसिला जारी रहा, इसके बाद एक बांदी ने आकर अर्ज़ किया कि,—"जहांपनाह तशरीफ़ लाते हैं!"

यह सुनतेही गाना बजाना मौकूफ़ होगया और सब बैठी हुई औरतें अपनी अपनी जगह पर खड़ी हो गईं। बेगम साहिबा भी आहिस्ते से तख़्त से उतरीं और उसी वक्त बादशाह ने दो बांदियों के कंधों का सहारा लेते हुए कमरे के अन्दर पैर रक्खा।

उनके आतेही चारों तरफ़ से झुक झुक कर, 'आदाबअर्ज़ है' की सदा आने लगी और बेगमसाहिबा ने बड़े तपाक के साथ हाथ मिलाकर बादशाह को तख़्त पर ला बैठाया और खुद वह उनके बाईं तरफ़ बैठ गईं। उनके बैठने पर, वे नाज़नी भी बैठीं, जिन्हें बैठने की हैसियत थी, बाकी सब खड़ी रहीं। गानेबजाने का बाज़ार फिर गर्म हुआ और बादशाह ने शराब मांगी।

उनके हुक्म की तामील फ़ौरन की गई लौंडियों ने शराब की बोतल और जमुर्रद के प्याले ला हाज़िर किए। बेगमसाहिबा शराब भरभर कर बादशाह को पिलाने लगीं और दस पांच प्याले पीतेही बादशाह सलामत झोंके खाने लगे। आधे घंटे के बाद, मेरी नज़र गाने बजानेवालियों के पीछे गई तो मैने क्या देखा कि कई खोजों के साथ कंबख़्त आसमानी खड़ी हुई है और वह मेरी जानिब को उंगली उठा उठाकर उन खोजों के साथ कुछ बातें कर रही है। यह देखतेही गोया मेरी रूह तन से कूच करगई और मुझ पर कंपकंपी सवार हुई! क़रीब था कि मैं ग़श खाकर वहीं गिरपड़ूं, इतनेही में पीछे से किसीने मुझे ज़ोर से चुटकी काटी। मैने तुरत पीछे फिरकर देखा, लेकिन इस बात का सूराग़ न लगा सका कि मुझे किसने चुटकी भरी, क्योंकि मेरे पीछे की क़तार में जो मोरछलवाली ठीक मेरे पीछे थी, उसकी नज़र सामने, गानेवालियों के जानिब थी।

ग़रज़, मैने अपने दिलको मज़बूत करके अपने तईं खूब सम्हाला,

और सामने की तरफ़ देखा तो आसमानी या खोजे, जो कि अभी कुछ ही देर पहिले सामनेवाले दरवाज़े पर थे वहां से कहीं चले गए थे।

ठीक एक घंटे ठहर कर बादशाह सलामत तख़्त से उठकर नीचे उतरे और वहांसे चले गए। उस वक्त सारी महिफ़िल में सन्नाटा छा गया था और बेगम साहिबा बादशाह सलामत को दरवाज़े तक पहुंचा आई थीं।

बादशाह को पहुंचाकर बेगमसाहिबा लौट आईं और उनके तख़्त पर बैठतेही फिर गाना बजाना शुरू हुआ। थोड़ीही देर तक गाना बजाना हुआ होगा कि आसमानी को फिर मैंने कमरे के अंदर देखा। इस वक्त वह अकेली थी और बग़ल से कतराती हुई तख़्त के क़रीब बढ़ रही थी। यह देखकर मैं फिर थर्रा उठा और दिल ही दिल में मैंने यह समझलिया कि अब मेरी जान की ख़ैर नहीं है। उस वक्त जो कुछ मेरे दिल पर गुज़र रही थी, उसका बयान मैं नहीं कर सकता, क्योंकि दरअसल उस वक्त मैं ज़िन्दों में न था और मेरे होश हवास दुरुस्त न थे। लेकिन फिर भी मैं अपने तईं सम्हालता जाता था और नज़दीक खड़ी हुई मौत को नाउम्मीदी की नज़रसे तक रहा था।

आसमानी ने तख़्त के क़रीब पहुंचकर शाहानः आदाब किया और एक ख़त बेगम साहिबा के आगे रखकर जवाब का इन्तज़ार किया। बेगम ने ख़त को देखकर आसमानी से पूछा,—"इसमें क्या है?"

आसमानी,—"हुज़ूर! इसके अन्दर एक बहुतही संगीन वार्दात की ख़बर है।"

इतना सुनकर बेगम साहिबा ने उस लिफ़ाफ़े को उठाकर और पीछे घूमकर मेरे हाथ में (वह लिफ़ाफ़ा) देदिया और कहा,—

"देख तो सही, इसके अन्दर क्या लिखा है!"

यह सुनकर मैंने कांपते हुए हाथों से उस ख़त को हाथ में लिया और लिफ़ाफ़ा फाड़कर खोला और पढ़ा तो उसमें नीचे लिखी हुई कई सतरें दर्ज थीं,—

" जनाब बेगम साहिबा की ख़िदमत में अर्ज़ है कि वही यूसुफ़, जिसके कुल हालात हुज़ूर पर रौशन हैं, तख़्त के पीछे सब्ज़ जोड़ा पहिने हुए, मोरछलवालियों के भेस में खड़ा है। "

नाज़रीन सोच सकते हैं कि इस मज़मून के पढ़तेही मेरी क्या हालत हुई होगी! लेकिन नहीं, मुझे फिर किसी ने पीछे से चुटकी भरी और न जाने क्योंकर मेरे हाथ से, न मालुम किसने उस ख़त को छीन लिया। मैंने पीछे फिरकर देखा तो सब मोरछलवालियों की निगाह मुझ पर गड़ी हुई थी। मैंने चाहा कि किसी से यह पूछूं कि किस शख़्स ने मेरे हाथ से ख़त छीन लिया, लेकिन हिम्मत न पड़ी। इतनेही में किसी ने मोड़ा हुआ कागज़ मेरे हाथ में देदिया, लेकिन इस वक्त भी मैंने यह न जाना कि यह कागज़ किसने मुझे दिया।

मैंने उस कागज़ को खोलकर देखा तो वह बिलकुल सादा नज़र आया इतनेही में बेगम साहिबा ने फिर मेरी तरफ़ घूमकर देखा और मेरे हाथ से उस लिफ़ाफ़े और सादा कागज़ को लेकर और उसे उलट पलटकर आसमानी से झिड़ककर कहा,—" हरामज़ादी इस लिफ़ाफ़े के अन्दर तो बिलकुल सादा कागज़ है! "

इतना कहकर उन्होंने बांदियों की तरफ़ देखकर हुक्म दिया कि, " इस बदमाश आसमानी को कमरे के बाहर निकालदो। "

तुरंत कई बांदियों ने उसे ढकेलकर कमरे के बाहर करदिया और इस अजीब तमाशे को देखकर मुझे निहायत ताज्जुब हुआ। मैं सोचने लगा कि बेगम ने मुझही को ख़त पढ़ने को क्यों चुना जिसमें मेरे ही ख़िलाफ़ लिखा हुआ था! फिर मेरे हाथ से ख़त लेकर मुझसे यह क्यों न पूछा कि,—" कागज़ क्या इसके अन्दर से सादा ही निकला था! " फिर आसमानी पर इतनी नाराज़ी क्यों हुई और मुझ से एक भी सवाल क्यों न किया गया?

ग़रज़ यह कि इन्हीं बातों पर मैं ग़ौर करने लगा। बेगम साहिबा बदस्तूर गाना सुनने लगीं और मैंने भी अपनी बला को टली हुई समझकर मौज लेना शुरू किया।

आसमानी के निकाले जाने के एक घंटे बाद कई खोजे नंगी तलवारें हाथ में लिये हुए कमरे के अन्दर घुस आए और उन सबों ने कुछ बढ़ और झुककर आदाब बजा लाकर गाना बजाना बन्द कराया और बेगम की तरफ़ देख, ज़ोर से कहा,—

" हुज़ूर के तख़्त के पीछे, मोरछलवालियों के झुंड में एक मर्द है, जिसके गिरफ़्तार करने के लिये बादशाह ने मुझे हुक्म दिया है। "

यह सुनकर कड़ककर बेगम ने कहा,—" यह सारा फ़िसाद हरामज़ादी आसमानी का है, तुम सब झूंठ बक रहे हो और यहां पर कोई मर्द नहीं है। "

यह सुनकर खोजे ने कहा,—" लेकिन जहांपनाह के हुक्म से हम लोग तलाशी लेंगे। "

इसके बाद न जाने क्योंकर उस कमरे की सारी रौशनी एकदम से बुझ गई और कमरे में सन्नाटा छा गया। मैं भी ग़श खाकर गिर पड़ा और फिर मुझे इस बात की कुछ भी ख़बर न रही कि इसके बाद फिर क्या हुआ!!!